प्रेम कविता विशेषांक- 71
मार्च 2014

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

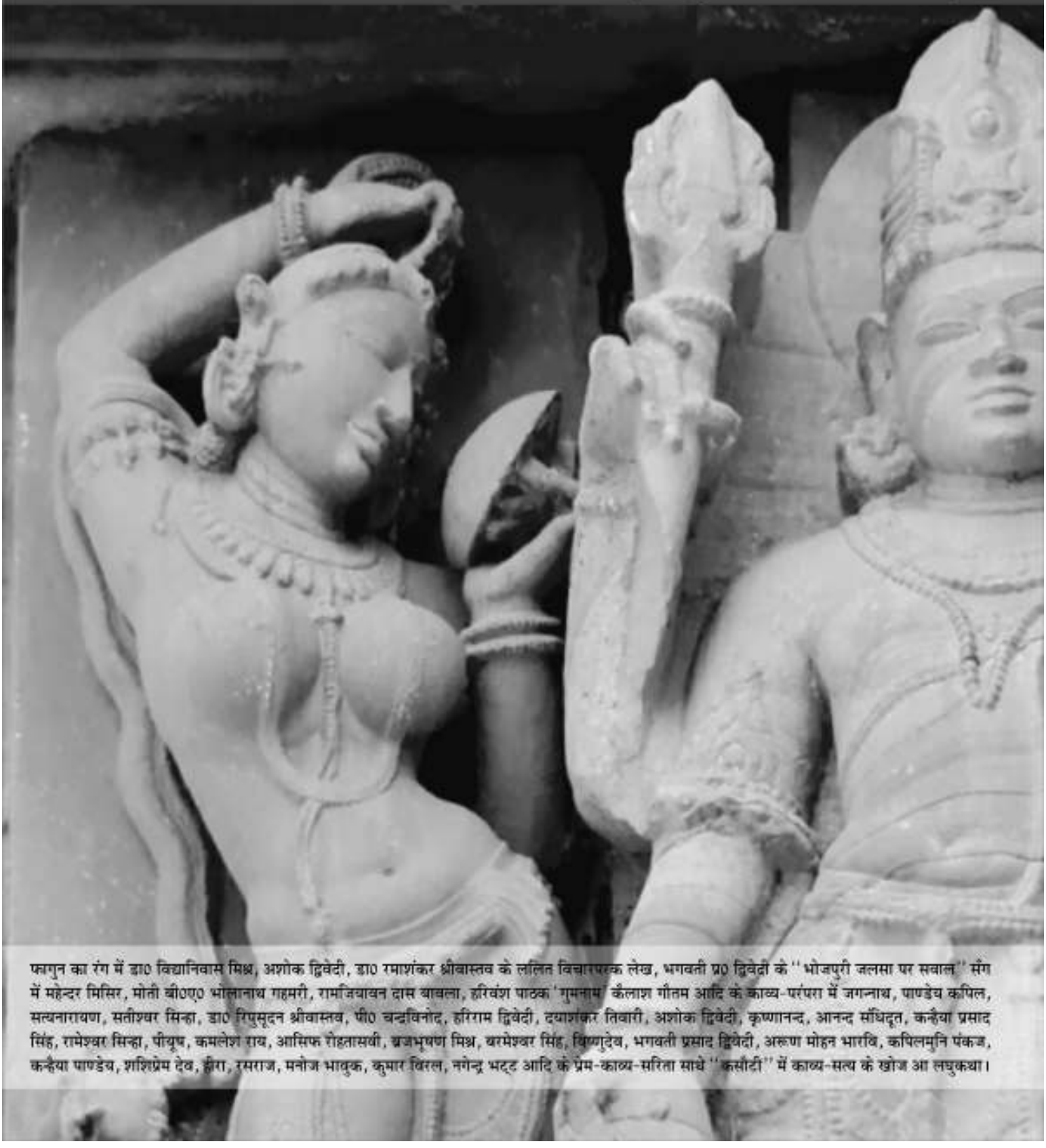

फागुन का रंग में डा० विद्यानिवास मिश्र, अशोक द्विवेदी, डा० रमाशंकर श्रीवास्तव के ललित विचारपरक लेख, भगवती प्र० द्विवेदी के ''भोजपुरी जलसा पर सवाल'' सँग में महेन्दर मिसिर, मोती बी०ए० भोलानाथ गहमरी, रामजियावन दास बावला, हरिवंश पाठक 'गुमनाम' कैलाश गौतम आदि के काव्य-परंपरा में जगन्नाथ, पाण्डेय कपिल, सत्यनारायण, सतीश्वर सिन्हा, डा० रिपुसूदन श्रीवास्तव, पी० चन्द्रविनोद, हरिराम द्विवेदी, दयाशंकर तिवारी, अशोक द्विवेदी, कृष्णानन्द, आनन्द सँधिदूत, कन्हैया प्रसाद सिंह, रामेश्वर सिन्हा, पीयूष, कमलेश राय, आसिफ रोहतासवी, ब्रजभूषण मिश्र, धरमेश्वर सिंह, विष्णुदेव, भगवती प्रसाद द्विवेदी, अरूण मोहन भारवि, कपिलमुनि पंकज, कन्हैया पाण्डेय, शशिप्रेम देव, हीरा, रमराज, मनोज भावुक, कुमार विरल, नगेन्द्र भट्ट आदि के प्रेम-काव्य-सरिता साथे ''कसौटी'' में काव्य-सत्य के खोज आ लघुकथा।

कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ!

■ अशोक द्विवेदी

सहज साँच अनुभूति करावत
जन मन के अनुराग लिखऽ
कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ

उमड़े छोह/दूध बनि छाती
सन्तति जे परतीति करे
ममता मोह नयन भरि दियरी
जोति बरत बस प्रीति झरे
नेह लिखत खा तूँ कविता में
महतारी के त्याग लिखऽ!
कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ

भलहीं दुनियाँ ना खतियावे
अपना धुन में बढ़त रहे
सबसे ऊँच शिखर पर चिउँटी
श्रम-निष्ठा से चढ़त रहे
क्षुद्र जीव से सीखि-समुझि तूँ
ओ श्रम के बड़भाग लिखऽ!
कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ!

लवर जरावे तन कतनो भलु
धाह सुरुज के बनल रहे
चिरुआ भरे घोंट भर, जिनिगी
नदी नेह-जल बचल रहे
जिनिगी के सम-विषम सहेजत
तूँ उमंग के फाग लिखऽ!
कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ!

लिखऽ कि कइसे जीवन-रस के
सोत बँचे आ साँस चले
थिरके राग तूरि हर बन्धन
दुख-सुख हास-हुलास चले
हर नकार में भरि सकार तूँ
सोझ साँच बेलाग लिखऽ!
कवि, तूँ धरती-राग लिखऽ!

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक : 71 www.bhojpuripaati.com **मार्च 2014**

आजीवन सदस्य/संरक्षक –

जे.जे. राजपूत (भड़ूच,गुजरात), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), राजगुप्त (चौक, बलिया) एवं धीरा प्रसाद यादव (रामपुर उदयभान, बलिया), डा0 ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ0 अरूण मोहन भारवि (बक्सर, बिहार), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया)।

प्रबन्ध संपादक

प्रगति द्विवेदी

उप–संपादक

विष्णुदेव तिवारी

सह–संपादक

हीरा लाल 'हीरा'

सान्त्वना, सुशील कुमार तिवारी

डिजाइन आ ग्राफिक्स

आस्था

कंपोजिंग

कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट, भृगु आश्रम–बलिया

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी

डा0 ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन

अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

संपादक

डा0 अशोक द्विवेदी

विशेष प्रतिनिधि

सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), आर्या नीलम भारवि (बक्सर, बिहार) रामयश अविकल (आरा), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० वशिष्ठ अनूप, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), आनन्द संधिदूत (मिर्जापुर), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), शशि प्रेमदेव (बलिया), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त (सलेमपुर, देवरिया), प्रशान्त द्विवेदी (कोलकाता)।

संपादन-कार्यालय :-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१

फोन– 05498–221510,

मो0– 08004375093, 9919426249

e-mail :- ashok.dvivedipaati@gmail.com

एह अंक पर सहयोग– 40/–

सालाना सहयोग राशि (डाक सहित) 180/–

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे। कवनो वाद के निपटारा बलिया कोर्ट में होई ।)

एह अंक में.....

हमार पन्ना

- प्रेम कविता पर केन्द्रित अंक / 3
- 'प्रेम' : न कहले कहाइल, न गवले गवाइल / 3–4
- भोजपुरी गीति–परंपरा / 4

थाती

- 'सदा अनन्द रहै एहि द्वारे' / विद्यानिवास मिश्र / 5–7

ललित लेख

- 'फूलहिं फरहिं न बेंत' / अशोक द्विवेदी / 8–10
- 'मन महुआ के फूल' / रमाशंकर श्रीवास्तव / 11

धरोहर

- प्रेम आ पराक्रम के लोकगाथा / शिलीमुख / 59

झरोखा इयाद के

- स्व0 महेन्दर मिसिर / 7,
- रामजियावनदास 'बावला' / 18,
- भोला नाथ गहमरी / 24
- प्रभुनाथ मिश्र / 29,
- मोती बी0ए0 / 49,
- हरिवंश पाठक 'गुमनाम' / 49
- कैलाश गौतम / 50,
- शम्भुनाथ उपाध्याय / 51

कविता/गीत/गजल

- जगन्नाथ / 12–13,
- सत्यनारायण / 14–15,
- पाण्डेय कपिल / 16,
- सतीश्वर प्रसाद सिन्हा / 17–18,
- हरिराम द्विवेदी / 19,
- पी0चंद्रविनोद / 20,
- दयाशंकर तिवारी / 21–22,
- चौ0 कन्हैया प्रसाद सिंह / 22,
- नगेन्द्र प्रसाद सिंह / 22,
- कुमार बिरल / 23,
- डा0 रिपुसूदन श्रीवास्तव / 23–24,
- कृष्णानन्द कृष्ण / 25,
- अशोक द्विवेदी / 26–28,
- आनन्द संधिदूत / 30–31

सामयिकी

- भोजपुरी जलसन क हाल / विचार प हावी बाजार / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 45–46

कविता/गीत/गजल

- गंगा प्रसाद 'अरूण' / 28–29,
- रामेश्वर प्रसाद सिन्हा पीयूष / 30,
- भगवती प्रसाद द्विवेदी / 32–33,
- कमलेश राय / 34–35,
- आसिफ रोहतासवी / 35–36,
- अरुण मोहन भारवि / 39,
- नगेन्द्र भट्ट / 36,
- कन्हैया पाण्डेय / 37–38,
- बरमेश्वर सिंह / 38–39,
- विष्णुदेव तिवारी / 40–41,
- मिथिलेश गहमरी / 41,
- हीरालाल 'हीरा' / 42,
- शिवजी पाण्डेय 'रसराज' / 42–43,
- शशि प्रेमदेव / 43–44,
- कपिलमुनि पंकज / 44,
- मनोज 'भावुक' / 47,
- बृजमोहन प्रसाद 'अनारी' / 47, ब्रजभूषण मिश्र / 48

लघुकथा

- मूड़ी डोलावन / मुश्ताक मंजर / 51–52,
- पियक्कड़ / राजगुप्त / 52

कसौटी

- एगो सानेट संग्रह आ कुछ अउर कविता का बहाने 'काव्य–सत्य' के खोज / विष्णुदेव तिवारी / 53–54

सांस्कृतिक आयोजन

- विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई के समारोह / 55
- मैथिली भोजपुरी अकादमी दिल्ली के राष्ट्रीय कवि सम्मेलन / 56

राउर पन्ना /57–58

संस्कृति

- होरी रे रसिया / 60

'प्रेम-कविता' पर केन्द्रित एह अंक पर

कुछ साथी-सहयोगियन का सुझाव / निहोरा पर जब 'प्रेम' पर केन्द्रित कविता पर अंक के बिचार बनल त हम जल्दी-जल्दी भोजपुरी कवियन से संपर्क सधनी। ओइसे त प्रतिक्रिया उछाहे भरल रहे, बाकिर कुछेक भाई लोग अइसनो मिलल, जे या त लजइला लेखा या अजीब उटपटाँग जबाब दिहल; जइसे... 'छोड़ीं' जी, अब ए उमिर में प्रेम ?' 'अब कूल्हि छोड़ 'प्रेम' पर कविता लिखाईं ?' 'हम त कबो जिनिगी' में परेमे ना कइलीं, 'काजी रउरो प 'वेलेन्टाइन' वाला असर हो गइल बा का?' कहे क मतलब ई कि ऊ लोग या त 'प्रेम' के गलत माने निकललस, या एकरा के 'वर्जित' आ उपहास जोग मानल। ओह लोगन के साइत पता ना रहे कि 'प्रेम' माइयो-बाप, भाइयो-बहिन, पति-पत्नी, आ नातियो-पोता क होला। बलुक ए जुग में त प्रेम आदमी ले बेसी धन, पद, कुरुसी, घर दुआर, आ चीजो-बतुस से होत बा। कुछ लोग के त बेमतलब ताबरतोर लिखले आ किताब छपवले से 'प्रेम' बा। अइसनका बुधिगर-समझदार लोगन का संवेदन ज्ञान आ संसारी बोध का आगा हमहूँ हार कइसे मान लेतीं? नतीजा में ई अंक आइये गइल।

'प्रेमःन कहले कहाइल, न गवले गवाइल-

प्रीति के रीति आ परतीति निराली हवे। प्रेम से परहेज क दावा करे वालन के जब एकर अनुभूति होला त स्थिति बड़ी बिकट हो जाले ऊधो (उद्धव) जी के हाल ईहे नु भइल। प्रेम के समुझत- समझावत आपन डहरिये भुला गइले। ई न लगवले लागेला,न दबवले दबेला। 'इश्क पर जोर नहीं, है ये वो आतश 'गालिब'/ कि लगाए न लगे और बुझाए न बने।' एकरा अभिव्यक्ति पर रोक लगावे वाला लोग खुदे धरती से उठि गइल ।

इतिहास गवाह बा कि तमाम रोक-टोक, तिरस्कार आ बरिजना (वर्जना) का बावजूद आजु ले ना त प्रेम खतम भइल ना एकरा पर 'बावरा' कवि कविते लिखल बन कइलन सऽ। लोक भाषा भा बोली में श्रेष्ठ काव्य लिखे वाला मैथिली के विद्यापति, भोजपुरी के अनगढ़ कबीर, अवधी के जायसी, तुलसी; ब्रजी के सूरदास, मीरा, रसखान आ घनानन्द आदि के लगावल प्रेम-अभिव्यक्ति लकम (आदत) छुटे वाला रहे की आजु का कबियन से छूटी ?

प्रेम क गहिराई आ बिस्तार अगम-अछोर बा। 'प्रेम' बिना मानुस जिनिगी के बतियो ना सोचल जा सके। ई प्रेमे हऽ जवन न कहले कहाइल, न गवले गवाइल। न अबले ओराइल, न कब्बो ओराई। इ सब दिन कहाइल आ सबदिन बँचाई ! 'प्रेम' शाश्वत आ सार्वभौम बा।

'छिनहिं चढ़ै छिन ऊतरै' वाला प्रेम त बोखार हउवे। कबीर एही से 'अघट प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावे सोय' कहत रहले । उनका प्रेम में 'रोम-रोम पिउ-पिउ करै'। उनके 'रोम-रोम पिउ रमि रहा' के परतीति होखे। एही से उनके हरमेस 'जित देखूँ तित तूँ' नजर आवे। उनका आँखी में जवन सुघराई वाली छबि एक हाली समा गइल, तवने रही, ओमे कजरो क रेखि लगावे क गुंजाइस नइखे- 'कबीर काजर रेखहूँ अब तो दई न जाय/ नैनन प्रीतम रमि रहा दूजा कहाँ समाय।' 'प्रेम' कबीर का लेखे खाली जिये वाला तत्त्व ना बलुक सार तत्त्व आ परमतत्त्व बन गइल रहे । ई प्रेम लौकिक का धरातल से ऊपर उठि के अलौकिक हो गइल रहे।

ग्यानी कहेलें कि प्रेम भोग ना योग हऽ काहे कि ऊ 'जीवन' का सार तत्त्व का ओर ले जाला। ओकरा में 'काम' क सत्ता ना चले। प्रेम अपना में पूर्ण आ सोगहग बा तबे नऽ प्रेम में जप तप जोग कूल्हि छोट पड़ जाला। सृष्टि के जीवन-आधार ह प्रेम आ मानुस जीवन के अदम्य शक्ति हऽ । एही का जोरे अदिमी का भीतर दया,ममता, करुना, सहनशीलता आ पर दुखकातरता आवेला। विनय ईहे सिखावेला। ई 'मातृत्व' के ऊ अलंकार हवे, जवन 'स्त्री' के सर्वोच्च आसन प बइठा के 'माई' क संबोधन देला। प्रेम दुसरा खातिर जिये आ मुवे सिखावेला । त्याग आ उत्सर्ग क प्रेरक

प्रेमे नु हवे । ई ऊ संजीवनी शक्ति हऽ, जवन बिपरीत समय आ दुसह दुखो का घड़ी में धीरज बन्हावेला ।

बुद्धि के सूखल संवेदनहीन ज्ञान कवनो काम क ना होला। उल्टे ऊ आदमी के कठोर, कठकरेज आ अंहकारी बना देला । प्रेम -पूरल ज्ञान आदमी का भीतर-बाहर दूनो ओर उजियार करेला - ओके संवेदनशील बनावेला । ऊ मानुस जीवन के नया अरथ, नया माने देला। एही प्रेम पूरल ज्ञान के उजाला सिद्ध, संत, फकीर आ रिसि मुनि समाज के बाँटत आइल बा। कवनो जगह पर ओ लोगन का अइला आ प्रेम से नजर घुमवला मात्र से साधारन लोगन का दुखी संतप्त जीवन में योग-क्षेम आ मंगल प्रतिफलित होखे लागेला-लोग थोड़ी देर खातिर प्रेम भरल दिव्य उजियार क परतीति करत आपन दुख, अभाव भुलाइ जाला।

प्रेम से सुरू आ प्रेम पर खतम होखे वाला जीवन के 'अथ' से 'इति' में प्रेम क न जाने कतना रूप-रंग-अनुभूति भरल बा, न जाने केतना राग-बिराग, हर्ष-विषाद, पीर आ उछाह-उमंग छिपल बा। प्रेम के पावे, बचावे आ उकसावे-निभावे के अनेक जुगत-जतन मानव इतिहास के गाथा आ काव्य बनल बा। ईहे प्रेम जब मानव-हिया के हिलोरेला त उल्लास फूटेला आ लोकजीवन के उत्सव के बनेला आ ईहे जब थिर बनेला त जिजीविषा जागि के अदिमी से असंभवो संभव करा देले। प्रेम का बले उमड़त नदी पँवर जाये आ दुर्गम जंगल-पहाड़ लाँघि जाये क कतने दृष्टान्त आ कथा कहानी बनल बा।

प्रेम आ भोजपुरी गीति -परंपरा -

अइसे त 'गीत' एगो भाव- संवेदन भरल सांकेतिक काव्य-रूप हऽ जवना में लय,गेयता आ संगीतात्मकता कलात्मक रूप में रहेला। अनुकूल अरथ उभारत शब्दन के सुघर बिनावट में गहिर संवेदना आ आत्मानुभूति के अन्तः संगीत 'गीत' के खासियत हऽ। लोकगीतन के अनगढ़ बाकि सहज-संरचना के मरम छुवे आ झकझोरे के शक्ति ; ओमे बिनाइल गहिर आत्मानुभूति का समाजिक-विस्तार का कारन आइल बा। लोकजीवन के हूक, हलास, राग-रंग, प्रेम विरह के मार्मिक व्यंजना, लय धुन अनुगूँज का जरिये साधारनीकृत होइए के लोकगीत बनल । एही परंपरा में 'पूरबी' का जरिये महेन्दर मिसिर भोजपुरी के पहिचान बनले ! प्रेम रस भींजल, विरह के पीर वाला कसक उपजावत उनका भावभींजल 'पूरबी' में, भाषा के सीमा टूटि जाले आ राग, लय के स्थाई अनुगूँज जगह बना लेले। भोजपुरी कवि अजुओ एह लोकराग- परंपरा से विलग नइखन स भइल, नवगीत का ढाँचा का बादो।

जीवन-जगत से जुड़ल 'प्रेम' के मरम छूवे वाली अनुभूति, दाम्पत्य-साहचर्य के आत्मीय तरलता आ मन के भाव प्रवण कोमलतासे टघरल 'रागतत्त्व' गीत के प्राण रहल बा। बाकिर ऊ एघरी जीवने-जगत का विसंगति भरल 'भौतिकी' का चपेट में बा। आज के जीवन-शास्त्र जटिल आ विडंबना भरल बा निछान भौतिकवादी-चिन्तन आ ओकर तार्किकता, छेनी-हथौड़ा लेके आदमी के नया रूप गढ़ रहल बा- बाजार का मुताबिक। लोग अतना हकासल, हहुवाइल, परेसान आ तनाव में बा कि ओकर हिरऊ संवेदना आ अनुभूति दरकचाइ जाता। आदमी के काठपन आ सूखल परायापन एही से बा। जीवनी शक्ति के आधार तत्व 'प्रेम' आ 'गीत' दूनों के सहजता आ 'निजता' खतरा में बा।

धरीक्षन मिश्र, मोती बी. ए., अनिरुद्ध, हरेन्द्र देव नारायण, भोलानाथ गहमरी,'बावला', 'सुन्दर' जी, रामनाथ, पाठक प्रणयी, प्रभुनाथ मिश्र, परमेश्वर शाहाबादी आदि कवियन का चलते विकसत,गीत-चेतना के प्रवाह निरंतर निखरत गइल । बदलत समय में रागात्मक संवेदना, नया नया भावबोध का साथ, विविधता में प्रगट भइल बा। ओमे 'निजता' का साथ स्वतंत्रता, प्रेम आ समानता के समाजिक-भाव का साथ ऊ आस्थावान जीवन-जगत बा, जवना में प्रकृतियो बा आ प्रत्यक्ष का साथे अप्रत्यक्षो बा। संकेतिकता, ऐन्द्रिकता आ आत्मीय भाव संपन्न गीत रचा रहल बा। अइसन गीत बोलत कम, असर ज्यादा करत बाड़न सऽ। प्रेमपरक कविता पर 'पाती' के ई अंक मनुष्यता के सुखात सोत आ साँस बचावे क एगो छोट कोसिस भले होखे, बाकि ई रउरा सभ अस सुधी पाठक के आस्वाद का नया धरातल पर जरूर ले जाई ।

एह प्रेम-भींजल अंक का साथ लोक-उत्सव होली का अवसर पर उछाह उमंग से 'बाहर-भीतर' रंगे-रंगाये खातिर हमार हार्दिक मंगलकामना !

(अशोक द्विवेदी)

[मूर्द्धन्य विद्वान, वागर्थ के वैभव, ललित निबन्धकार स्व0 (डा0) विद्यानिवास मिश्र के लिखल भोजपुरी के पहिलका निबन्ध 'पाती' अंक–1 बरिस 1979 में छपल रहे।]

सदा अनन्द रहै एहि द्वारे

❑ (स्व0) विद्यानिवास मिश्र

सम्पादक जी,

जय फागुन !

कई दिन पर, काल्हू राति खा कहीं से फगुवा सुनाइल, "सदा अनन्द रहै एहि द्वारे मोहन खेलैं फाग" पंडित विनोद शर्मा किहां भांग गहिरे छनाइल रहे। फगुवा सुनते रंग चढ़ि गइल आ मन बहकि गइल। विद्यापति के 'नव बृन्दावन' आ देव के 'द्रुमपलना' मन परल, फेरु गांव के होली इयाद आइल। लाग ता उ सगरो सुघराई बसिया गइल होखे। हमरा गांव सिबराते से फगुवा के धूम मचल रहे। झांझ आ मृदंग से असमाने गउँजि जात रहे। चांचर सुरु होखे त भिनुसार ले चले। हमनी का गावे ना आवे त गोंइठी मांगी जा। मंगला पर ना मिले त गोहरउर उजारीं जा । केहूं तरे सम्मत मइया के लकड़ी के जोगाड़ बइठाई जा।

जेवना राति सम्मत (सम्वत्) जरे के होला, ओ दिन घरे नउनिया अबटन लगावेलीसन आ छोड़वल मइलि बटोरि के सम्मत में डालि आवेली सन। फेरु सगरो गांव जुटेला आ सम्मत फुंकाला। गांव में दुइए घर अइसन रहे, जेकरा के सम्मत फूंके खातिर खेत दियाइल रहे। हर साल उन्हनी में से केवनो एगो के पारी रहे। लेकिन जेवना के पारी रहे, ऊ घर ले परा जाव। ओकरा के खोजि के लिया आवे के परे। खुझला आ गरियवला पर उ आगि लगावे। फेरु त सम्मत से धधोक उठि जाव।

जेवना गांव के सम्मत के लवरि जेतने ऊंच होले ओ गांव के ओतने बड़ाई होला। सम्मत के राखी सेरइला पर झोरी–भरि–भरि बांटल जाले। राख माथे लगा के फगुवा गवइयन के दल झांझ मिरदंग बजावत निकरि पैला। गांव के एक–एक घर घोरियावल जाला। ऊहे घर छूटेला जेकरा इहां कवनो गमी परल होखे। हर दुआर से चलत खान फगुवा उठावल जाला–" सदा अनन्द रहै एहि द्वारे।"

ना जाने कवना जमाना से फगुवा गवाता आ कब से दुवारे दुवार मोहन रसिया फगुवा खेले आवऽ ताड़न। भोला बाबा गउरी जी का सँगे चिता भस्म आ अबीर उड़ावे आवत बाड़न। एक सम्मत का चिता पर दुसरा सम्मत के बीया बोआता धूरि भरल अकास में रंग के पिचकारी चलावल जा ताड़ि मन। अबीर गुलाल लेसाइल केसि वाली गोरी बे देहिं के काम देवता के देहिगर करे खातिर उफनत उमगत बाड़ी सन, आ डफ झांझ आ मिरदंग ए खुसी के अउरी बढ़ा रहल बा। पिरीत के रीति। सगरो समाजिक, आर्थिक आ व्यक्तिगत कुंठा आ मर्यादा के बान्हन तोरि के आजु का दिने टेर लगाव तिया। हमनी के देस जब गुलाम रहे त बेड़िया ए आनन्दोत्सव में टूटि जा सन। वर्ग जाति आ कुल के गरब–गरूर ढहि जाव, तन–मन–बचन रंग–राग से नहा जाव। सुधारक लोग अपना के रजाई में लुकवावे। अधिकारी दफा 144 लगावे, बाकिर छुट्टा आनन्द इन्हनी के भुला जाव। घर–घर बासक सज्जा बनल युवती रतजगरन कर सन आ फजिरहीं उन्हनी के सुघराई कुल देवतन के आँखि जुड़ावे लागे–

" गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेलि फाग
राति भर प्रात समय ऐसी छवि छलकैं।
देह भरी आलस कपोल रसरोरी भरे
नीद भरे नयन कछूक झपैं झलकैं।
लाली भरे अधर बहाली भरे मुखबर
कवि पद्माकर बिलोक को न ललकैं"

पिछला बरिस गांव के फगुवा देखलीं त लागल हुलास जइसे कली नियर चटके खातिर कसमसात–कुलबुलात होखे, बाकि दखिनहिया के छुवन बिना ओकर गांध ओकरे भितर बन्दी हो गइल होखे। पुरान कयदा–कानून बदलि गइल, बाकि नवका आइल ना। एगो जमाना ऊ रहे कि गांव के फगुवा जन–जन के भितर चेतना जगावत रहे। फगुवा के राग समता के सन्देस भेजत रहे बाकि आजु चेतना जगलो आ समता के कनून बनियो गइला पर अइसन नइखे लागत। होली के मउज के काठ मारि देले बा। काहें कि पुरनका देवता सेरवावल आ पूजल ना गइले–त्रिशुंक बनि के लटकि गइले, नवका देवता के केवनो रूपे ना बनि पावल। माटी सनाइल, दूध डलाइल बाकि मूरति ना खड़ा भइल। गनेस के का कहल जाव रूद्रो ना बनलन। सिव पारबती में सँवार आ निखार चाहीं मूरति नाहिए उभरल, नाहिए उभरल। मंतर गलती पढ़ा गइल कि पनिये खार रहे आ कि मनवे अनमनाह रहे–शिव नाहिए उभरलन। सगरो गांव के काका, बाबा के बड़प्पन ढहि गइल। निरहू पांडे

शहर में चपरासी का भइलन, गांव के काका बाबा बनि गइलन। फाग मंडली बिखरि गइल, काहेंकि बुद्धुवा हरिजन के मिडिल पास लरिका, बाप के डफ बजावे से बरिज दिहलस। कतवारू पासी मिरदंग ना बजइहें काहें कि उनुकर लइका एम0 एल0 हो गइल। एही कुल्हि बाति के लेके गांव में बीचि परि गइल कि अब फगुवा पुरनका मुखिया का दरवाजा से ना उठि के नवका गांव परधान का दुआर से सुरु होई। फगुवो की दीने दू दल बनत देखि के पुरान फगुहारन के दिल बइठि गइल, ए साल फगुवा ना भइल। होली आइल आ चलि गइल। बुझाइल कि मसान मेंआइलि रहल हा।

भ्रमरानन्द के फिकिर कम सतावेले। बाकि आजु जब से फगुवा के धुन सुनाइल, पियला के सांप छू देहलस। नसा उखड़ि गइल। मन समझवलस, ''संघतिया, हई ''धर्मयुग'' के रंगीन चित्र देखू, देस के बड़ बड़ हित चिंतक होली का रंग में रंगाइल बाड़न। बाकि भ्रमरानन्द त बेसुध रहलन–

''सजनी हो मन मोर मनावै/ बसन्त न आवै
फूलै हो फूल, फरै जिन तरुवर/राग फाग कोउ गावै?''

कइसे समझावल जाव कि संगी ! ई युग–संध्या ह। एमेंसिक्का के पहिचान सारणी आ अखबार देखि के होला। अब त ई समझावल जाता कि मोहन 'बर्जुआ' रहलन आ शिवशंकर 'सिनिक'। इ लोग 'नार्मल' ना रहल। आजु के नार्मल दुनिया के रीतिकाल के कवियन का आंखी आ रंगपाल, इसुरी, विद्यापति जइसन लोकगीतकारन का आंखी काहें देख ताड़? तहार नवको बसंत बुढ़ा गइलन, सम्मत (संवत् का आगी) में नवका सम्मत के बीया डाले वाला नया साल बहुत घुसुकि आइल, विक्रम के दबा के शक चढ़ि बइठल, तूं कहां सूतल बाड़? अब काम देवता के जगावे खातिर चौताल के जरूरत नइखे। अबीर बुक्का का होई? पिचकारी के चोट के कवन काम बा। हर चौराहा के पान के दोकान पर टँगाइल मादक मोहक पोज में हिरोइन बटले बाड़ी सन। सीलोन पर लागल रेडियो गावते बिया– जिया भरमा के चलि नहीं जाना'। अब कामदेव के फूल पराग के हाथ धुरिया के फूल बान ना मारे के परी। फ्राएड के जमाना आ गइल बा। ए घरी कामदेव के ढेर सुविस्ता हो गइल कि अब उनुका के अँखलड़उल के खतरनाक क्रिया ना देखावे के परी।

भ्रमरानन्द आजुओ दुआरे–दुआरे 'सदा अनन्द रहै एहि द्वारे' के टेर लगाव ताड़न, बाकि उनुके सँघतिया नइखन स भेंटात। लोग पूछि देता, तू केवना छाप बक्सा में वोट डलले बाड़ऽ। भ्रमरानन्द का करसु? मतदाता सूची में उनकर नांव नइखे। महरारु के नांवो बा त मरद के नांव कुछ दुसरे छपा गइल बा। लाजे संकोच उहो बेचारी बिना बोटे डलले लवटि आइल। जब ले आपन छाप ना बताइब संघतिया ना भेंटइहन। दू चार गो नवछेड़िया तइयारो बाड़न त उन्हनी के लये निराली बिया। ओने रेडियो के धुन मीलत बा। गंवार भ्रमरानन्द का संगे उन्हनी के रागे नइखे मीलत। तब्बो भ्रमरानन्द का हौंस इहे बा कि केहूं तरे घर–घर आनन्द होखो।

आखिर फागुन के मस्ती के का हो गइला बा? हमार मन अइसन सोंठ काहें हो गइल कि ओके फागुन के लहक अउर से अउर नइखे बना पावत। कहां त बाबा देवर लागत रहलन आ कहां आजु देवरो बाबा बनि गइल बाड़न स। आखिर का हो गइल? ऋतुए बदलि गइल कि साइंस ओकर असरे खतम क दिहलस। साज–बाज धइल बा, मुट्ठी गुलाल से भरल बा, पिचकारी सधल बा, बाकि होरी के झोरी हेराइ गइल बिया। भ्रमरानन्द के बउराइल मन इ माने क तइयार नइखे कि उत्सव के जरूरत नइखे, उनके हुलास ना चाहीं। आम बउराई त भ्रमरानंदों के बउराए के हक बा, परास के आंखी मद चढ़ी त भ्रमरानन्दों के नसा करे आवेला। दखिनी बयार में फेड़ झुमिहन स त भ्रमरानन्द के मूड़ी काहें लोहा में जकड़ल रही? केकरा बाप क मजाल बा कि भ्रमरानन्द के उत्सव बनावे से रोकि सके। हम त घरे–घरे मउज मनाइबि चाहे केहू केतनो गारी देव, हमरा त घरे–घरे फगुवा बे गावल रोटी ना पची–

'हमै नीकी लगी सो करी हमनैं
तुम्हैं नीकी लगी न लगी तो भलै।''

भ्रमरानन्द त एही खातिर त छबीला मोहन के न्योतत बाड़न कि उनकर गहिरा रंग चढ़ेला। होरी का दिन हलुक रंग ना चाहीं। एपर दूसर रंग चढ़े अइसनों ना चाहीं। रंग अइसन चाहीं जवन चढ़ल रहे। जेवना के पाग हमेसा बनल रहे। आ जेवना में आदिमी खुदे दुनिया का सांवर सुघराई में भीजि जाउ। कानून के डुग्गी बाजे भा ना बाजे, मन में खुदे अइसन हिलोर उठे कि आपन मन त भरिये जाव, सगरो दुनिया अघा जाव। उ कइसन आनन्द जेवना में आदिमी भितरी से खोंखर रहे आ ओकरा चारू ओरी खोखरापन रहे। ऊ गीत बेकार बा जेवन मन के सराबोर ना कर दे। जब प्रकृति कली आपन बान्हन खोलत होखे त ओ घरी इहे चाही कि जिनिगी के बान्हो खुलि जाव। एही खातिर शिव बाबा के धरती का अंगना नाचत उतारल गइल, पर ब्रम्ह के चुनरी पहिना के आ माथे बेंदी देके गंवारनि का बीचे उतारल गइल, जेवना से लोक के खुसी बढ़त रहे। इरिखा, द्वेष धोवात रहे, लोगन में प्रेम–समुन्दर हिलोरत रहे।

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

आज लोगन के बूझे के बा कि हिन्दू जाति के सुभाव सांप का केंचुल अस निकाल फेंके क चीझु ह। लोग नइखे जानत कि हिन्दू धरम पोथी धरम ना ह, पंडित धरम ना ह, ई एह लोक के जीयत जागत धरम ह, एकर सबसे बड़ पुरुषारथ दुखात रग के बे छुवले आनन्द के समरसता में डुबावल ह। मोक्ष ओकरा खातिर जिनगी से अलग संसार से अलग ; आदमी का कल्पना से अलग केवनो पदारथ ना ह। हिन्दू धरम 'पारावार पूरन अपार पर ब्रम्ह राशि' का संगे एक होखे के प्रक्रिया ह। एही से ई प्रेम पर आश्रित ह। ओकर विरागो विषय से; विषयी से ना होला ए मोक्ष के लौकिक अनुभावन ह। एही से इ जन–जन के उत्सव हऽ लोक एमे अपना के खोइए के नया रूप पावेला।

भ्रमरानन्द के बात लोग चाहे हँसी में उड़ा देव, बाकि ऊ अपना टेक पर अड़ल रहिहें कि फगुवा मनावे के बा त खूब रँगि रँगा के मनावे के बा। ऊ फगुवा मनइहें त प्रेम से, नाही त ओइ दिन चौगुना खोराक चढ़ा के अलीगंज वाला किहां परल रहिहें।

संपादक जी, जो दू चार गो सँघतिया खोज सकींत बड़ उपकार होई। भांगियो के बचत होई, भ्रमरानन्द के गर के भूत उतरी आ पड़ोसियन के फजिहतो ना होई। दुआरे होरी मनवला के उछाह पर पानी ना फिरे एही खातिर ई लेख भेजि रहल बानी।

राउर फगुवाइल सँघतिया
भ्रमरानन्द

झरोखा इयाद के

(स्व०) महेन्दर मिसिर

अपना नया राग-लय से भोजपुरी गीत के रस से मन-प्रान भिंजावे वाला महेन्दर मिसिर, अपना ले जेयादा, भोजपुरी के विस्तार दिहले। प्रेम आ सौंदर्य के अमर गायक के 'पुरबी' अजुओं लोक स्वर में ओइसहीं प्रिय बा।

(एक)

हरे हरे निबुआ के हसे–हरे पातवा / से हसे–हरे
मोरा सइंया के चदरिया से हरे हरे।
छोटे–छोटे सइंया के छोट–छोट नैना से छोटे छोटे।
दूनो हाथ के कँगनवाँ से छोटे–छोटे ।
हमरा बलमुआँ के दूनों काने सोनवाँ से पोसे–पोरे
अँगुठी के नगीनवाँ से पोसे–पोरे।

(दू)

मोरा पिछुअरवा रे निबुआ के गछिया
ए ननदिया मोरी रे
निबुआ चुवेला आधी रात ए ननदिया मोरी रे
ओहि अधिरतिया के चुनरी रँगवलीं
ए ननदिया मोरी रे
चुनरी भइलि टहकार / ए ननदिया.....
तिसिया के तेलवा में मथवा बन्हवलीं
ए ननदिया मोरी रे
माथ मीसे गइनी रामा बाबा के पोखरवा
ए ननदिया मोरी रे
टिकुला गिरल मँजधार / ए ननदिया...
मथवा मिंसत लगले हाथ के झिटिकिया
ए ननदिया मोरी रे
नाक के लवँगियाँ का दू होय / ए ननदिया...
गोड़ तोरा लगी भइया सुनु रे मलहवा
ए ननदिया मोरी रे
मोर टिकुला देतऽ ना निकाल / ए ननदिया...
कहत महेन्दर देबों दूनों कान सोनवाँ
ए ननदिया मोरी रे
भउजी के देबों गलहार / ए ननदिया...

(तीन)

नदिया किनारे कान्हा बँसिया बजावेलें
पवनवाँ झिर–झिर बहेला ए राम ... / पवनवाँ झिर झिर
बँसिया–सबद सुनि जागे प्यारी राधिका
परनवाँ कइसे राखीं हो राम! पवनवाँ झिर झिर
बाट रे बटोहिया तूँ लगबऽ हमर भइया
सनेसवा हमरो लेले जइहऽ हो राम।
चारू ओरि सखिया के घेरली बदरिया
चुनरिया हमरो भींजेला ए राम। पवनवाँ झिर झिर
बारह बरिस पर पिया मोर अइलें
चदरिया तानि सूतेले हो राम। पवनवाँ झिर झिर...
कहत महेन्दर कान्हा निपटे अनारी
बयसवा हमरो बीतेला हो राम! पवनवाँ झिर झिर...

'पाती' अंक 9 फाल्गुन 1994 में प्रकाशित पाठकन का आग्रह पर फेरू प्रस्तुत ललित विचारपरक निबन्ध

फूलहिं फरहिं न बेंत

❑ अशोक द्विवेदी

गोसाईं जी सचहूं भविष्य के जथारथ रूप पहिलहीं देख लेले रहनी तबे नू ई सारगर्भित चउपाई लिखनी कि '' फूलहिं फरहिं न बेंत, जदपि सुधा बरसहिं जलद..... ।'' माने मेघ केतनो अमृत बरसावें बेंत ना फूली, ना फरी। ओइसहीं आज बसन्त भा फागुन कतनो साज सिंगार कइके रस–बरिसावत; गंध लुटावत आवो; लोग कटुअइले रही। प्रोग्रेसिव थिंकिंग आ 'एक्टिविटी' में बसन्त का अइला–गइला से कवनो फरक नइखे पड़े वाला।

एह बुद्धिवादी जुग में अपना, भौतिक उन्नति खातिर एक–दूसरा के कान्ह छीलत; दरेरा देत, आगा निकले वाला लोगन के आगा–पीछा ओकर स्वार्थ,' निजीपन' 'परायापन' आ 'अजनबियत' बा। प्रकृति आ समाज से जुड़ला आ ओकरा में घुल मिल गइला के ललक गुम हो गइल बा, ओकर जगह औपचारिकता ले लेबे बा। प्रकृति आ ओकरा सहज अपनत्व से कटल लोगन में 'हृदय' आ 'सँवेदना' दूनों अतना दबि गइल कि ऊ मशीनी आ कठोर होत चल गइल। एही काठपन का चलते उ कवनो परब, उत्सव में गइबो कइल त ओकर कूल्हि कइल–धइल बनावटी स्वांग लेखा हो गइल।

अर्थ; धर्म; काम, मोक्ष में से अब खाली 'अर्थ' आ 'काम' दुइये पर जिनिगी के 'अथ' से 'इति' हो जात बा। आधुनिक कहाए वाला लोगन के एह पछाहीं सोच के चलते, आदमी अपना माटी, प्रकृति आ सामाजिक संवेदनशीलता कूल्हि से कटल चलल जाता। ऊ उत्पादक आ उपभोक्ता बन के रहि गइल बा। अर्थ आ ओसे जुड़ल अनेक समस्या गरीब आ अति निर्धन लोगन के स्वार्थी, छुद्र आ असहिष्णु बनवले चलल जातिया। हमार एगो प्रगतिशील दोस्त कामरेड 'क' एक दिन कहलन कि रोजी–रोटी से जूझे वाला लोगन के प्रेम, आत्मिक उन्नति आ अध्यात्मिक चिन्तन के राह देखावल, असल राह से उन्हनी के भटकावल हऽ। ई पूंजीवादी कुचक्र हवे।

उनकर कहनाम हमके इचिको नया आ क्रांतिकारी ना लागल । स्वामी विवेकानन्द बहुत पहिले भारत के अशिक्षित–गरीब आ दुखी जनता के बारे में अइसने उद्गार प्रगट कइले रहलन। उनकर कहनाम ई रहे कि पहिले ए वर्ग के नीन से जगावल जरुरी बा। जीविकोपार्जन खातिर पढ़ल पहिले जरुरी बा, अध्यात्म खातिर बाद में; बाकि स्वामी जी ई ना कहलन कि जब नीन टूट जाव आ जीविका मिल जाव त हमनी का अर्थपिशाच आ नर पशु बन जाईं जा। ऊ ई ना कहलन कि हमनी का 'बौद्धिक' बनला का चक्कर में भावशून्य संवेदनाहीन मशीन हो जाईं जा। जिए के माने काठ बनल ना हऽ।

भारत के संस्कृति गँवई–संस्कृति रहल बिया। निश्छल भावनामय आ अटूट। उत्सव एकरा भावना के अभिव्यक्ति देत बाड़न स। एही से एकरा के उत्सवधर्मी संस्कृति कहल गइल। परब त्यौहार आ उत्सव के जीये आ ओकरा में पूरा रागात्मक होके रमि जाए के प्रवृति गँवई समाज के उत्सवधर्मी बनवले रहे। प्रकृति से उल्लसित, उन्मादित आ तृप्त होखे वाला गँवइन के निश्छल समरपन वाला भावरूप पर नागरी–संस्कृति बेर–बेर रीझल आ ओकरा आगा अपना के बौना महसूस कइलस।

दरसल संस्कृति हमनी के कुछ 'मूल्य' आ 'प्रतिमान' देले। सोचे –बिचारे महसूस करे आ विश्वास के साथ बढ़े के आधार आ उर्जा देले। 'सहिष्णुता' मेल–मुहब्बत, आ 'सह अस्तित्व' के ई नायाब गँवई–संस्कृति, भारतीय चेतना के धुरी रहल बिया। अपना संस्कृति आ परम्परा पर नया सिरा से विचार क के हमनी के ओकर पुनर्निर्माण करे के चाहीं। वंचना के महल खाड़ करे वाला कथित आधुनिक आ पच्छाहीं प्रगतिशील लोग ए महत्वपूर्ण तथ्य के नजर अंदाज करे के आदी हो गइल बा।

आज के भौतिक–यांत्रिक जुग में पच्छिमी संस्कृति गँवई–संस्कृति आ ओकरा रचनात्मकता के सोझे लीलि रहल बिया। गँवई नवहन के रुझान शहरी आधुनिकता आ बिकृत –बुद्धिबाद का ओर हो रहल बा। ऊ आपन सरबस भावसंपदा लुटा के जीन्स पहिरले कपड़ा से धनी आ भीतर से कंगाल होत जा रहल बा। एही

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

कारन अब बसंत आ फागुन रोम–रोम हुलसावे आ रमावे वाला उत्सव ना रहि के 'परम्परा के इयाद दियावे वाला मौसम बन गइल बा आ हमनी का 'रस्म' लेखा ओके निपटावत बानी जा।

फगुनहट के जवना बतास आ रूप रस–माधुरी प गँवई संस्कृति के पक्षधर आ संवेदनशील सहृदय रीझत–डोलत रहलें ओमे फेड़ –पौधा से लेले युवक युवती आ नर–नारी के उल्लास डोलत रहे। एही हुलसन के सगुनी –अनुभूति ओह लोगन का होत रहे। इहे उल्लास कबो अशोक आ टेसू का ललाई से दहकत रहे, आ कबो आम–मंजरियन आ कटहरी–गंध से मादक हो जात रहे बाकि रसानुभूति के आनन्द लेखा। उत्तेजित करे वाला मादकता के वर्णन कुछ कवि लोग अतिरेक में भले कइले होखे, बाकि बसन्त के सोभाव त हुलास आ आहलाद के रहल।

"कुसुमजन्य ततोनवपल्लवास्तदनुषट्पद केकिल कूजितम्" का जरिये कालिदास के बसन्त धरती पर आवे आ अपना 'सान्द्र स्पर्श' से भीतर उल्लास आ अनुराग के फुहेरा मार जाव। कालिदास बसन्त के सघन मधुरता के 'सुगुनी अनुभूति' कइले रहलें। 'परायापन'आ 'अजनबियत' से ग्रसित आधुनिक बुद्धिबिलासियन आ प्रगतिशील मित्रन के कर्कषता में एह 'सान्द्र मधुरता' के दर्षन कइसे होई? ओकरा भीतर ना कुछ टुसियाई ना कोंढ़ियाई। ना पल्लवित होई, ना फुलाई ना फरी। ना त ओमें समरसता जागी ना सह अस्तित्व, आ ना समर्पन। उल्लास आ शिवत्व वाला सुघराई के बोध से परहेज राखे वाली संस्कृति भारत के ना हऽ। पश्छिमी संस्कृति में कबो सौंदर्य के पाप मानल गइल, कबो पुन्य। ओके देह से जोरल गइल, आत्मा से ना। तबे नू ऊ वासनामय आ पाप हो गइल।

बसन्त अब्बो राजा लेखा सदल बल आवेला आ अमीर गरीब के बिना भेदभाव कइले अपना रूप–रस–गंध के खजाना सभका खातिर खोल देला। जब जेकर जइसन नेत होखे बरकत ओइसहीं नु होई। ईहाँ त ई हाल बा कि चाहे अमरित काहें ना बरिसो, बेंतराम ना फुलिहें ना फरिहें। ऊ अपना नरमाहटो मैं हुलसिहें त देही रेघारी डलिहें आ मन में दहषत पैदा करिहें। ओइसे 'कैक्टस' का ए जुग में एही किसिम के चीजु के महातम बा। अब ई बात दोसर बा कि कँटवनों में फूल आवेला आ बड़ टहकार बाकि निर्गन्ध। बाकि लोग एही कैक्टस प लट्टू बा।

बसन्त के मन्मथ आ मदन के संघतिया कहल गइल बा। 'राग' के अनुराग वाली लाली देवे वाला एह महराज के नाँव प पहिले खूब उत्सव आ जलसा होखे, जेके 'मदनोत्सव' कहल जाव। अषोक का गाँछ के नीचे कलसा, फेर ओमे आम के पल्लो आ ओपर चाउर से भरल दियरी धराव। फूल आ चन्नन छिरकाव। ऊखि के रस धराव आ पल्लो गूंथल बन्दनवार सजल मंडप बना के, ओमे कामदेव आ रति के मूर्ति पूजन होखे, धूप; चन्नन इत्र का सुवासित माहौल में पहिले पूजा होखे, फेर रात भर नाच–गाना, हास विलास। ई जलसा जनता के जोर खातिर कवनो सार्वजनिक बगइचा भा फुलवारी में आयोजन कइल जाव। सगरी प्रजा ओमे भाग लेव। बसन्त के साधारणीकरण में जवन राग–रंग–रस रहे, ओसे सभकर मन भीज उठे। प्रेम, मद आ उन्माद से जुड़ल बसन्त के जिकिर पौरणिक आ इतिहास प्रसंगन में भरल बा। काम के रिझावे आ ओकरा जरिये दोसरा प आपन प्रभाव डाले के प्रसंग पौराणिक कहानियन में आइल बा। षिव पार्वती, राधाकृष्ण तक के एह प्रसंग में चर्चा बा। दुष्यन्त शकुन्तला आ महाराज उदयन का प्रेम आ परिणय के सूत्र बसंते बन्हलस। अमीर खुसरो के मस्ती में डुबावे आ आनन्दानुभूति करावे वाला इहे बसंत हऽ। ई प्रेम आ उल्लास अदिमी में नया ऊर्जा भरे।

धरती के सिंगार प्रकृति आ प्रकृति के सिंगार बसन्ते करेला। प्रकृति के अनन्त सुघराई, ओकरा 'अभ्यन्तर प्रस्फुटन' आ यौवन के सूचना बसन्ते देला। दूर–दूर ले लहलह हरियर खेत में पीयर आँचर फइलावत सरसों सूरुज का सोनहुली किरिन जाल का लालिमा से सजि के, ओकर अगवानी करेले। तीसी अपना हरियरी आ नीला रंग के असंख फूलन से ओकर सुघराई के दुगुना करेले। मटर छिमियाए गोटाये लागेले। सेमर लाल टहकार फूलन के छतरी तानि देला। आम बउराये लागेले स आ ओकरा मादक गंध से मस्ती छलके लागेले। कोइल के कुहुकल सुनाए बाकिर ई सब हम का सोचि रहल बानी? एह भीड़–भाड़ से भरल धुआं से दम घोंटत अउँजाइल, हकाइल बेचैन मन पर एकर का असर बा? अतने नू कि कलेन्डर का तारीख का मोताबिक एगो बसन्त पंचमी के दिन होला। एप्पर पहिले के कवि–साहित्यकार बहुत–बहुत लिख चुकल

बाड़े। नवहा संस्कृति आ विचार में आज ओके पढ़े आ बसंत के रूपश्री पर लट्टू भइला से का लाभ? भक्खर परसु बसन्त ससुर, बेलाभ के रोजिगार फालतू लोग करेला! एघरी कामकाजी लोग त इहे कही।

'लाभ' 'फायदा' भा 'मुनाफा' एह औद्योगिक जुग के सभसे महत्वपूर्ण आ प्रमुखतत्व हो गइल बा। पहिले बनिया महाजन भाई लोग अपना दोकान में शुभ–लाभ लिखत रहल हा आ लक्ष्मी पूजि के आपन रोजिगार साधत रहल हा। अब देष का आर्थिक नीति में अइसन भूचाल आ गइल बा कि ओम्मे भावना, मानवी करुणा, सेवा, दया आ इमानदारी शब्द के बिजुकाह बदबूदार के टाइटिल मिलगइल बा। एही से बेमार आ घाटा वाला उद्योग–धन्धा के जल्दी से जल्दी बन करेके आदेश भइल बा। मोनाफा का नीति पर देष चलावल ठीके बा बाकि इहो बिचार करेवाला प्रश्न बा कि एकरा पर का कुर्बान करे के परी? अपना आपे के ना नू?

समस्या बड़ी विकट बा। पश्छिमी संस्कृति, विचार धारा,– औद्योगिक समृद्धि का ओरी भारतीयन के झुकाव आत्मसमर्पन में बदल गइल बा। धरती पर 'डंकल' आ अकास में जी0 टी0 वी0, एम0 टी0 वी0 के मालिक 'रूपर्ट मरडोक' बाड़न। विदेशी लोग हमनी का लइकन के दिमाग बदले में तत्पर आ तल्लीन बा आ हमनी के हर घरेलू ममिला में अमेरिका के धउँस बा। एह दीन–हीन स्थिति के जिम्मेवार के बा? स्वतंत्रता आँदोलन के जुझारू पुरोधन के जादुई शब्द 'भारतीय' 'सुराज' स्वेदशी आ 'स्वभाषा' के जबान पर लियावल जोखिम के काम हो गइल बा। प्रगतिषील दोस्त लोग भाजपाई कहि दी। राष्ट्रीय स्वाभिमान मेंअइसन गिरावट आ जाई, हम ना सोचले रहनी। अपना से विमुख भइला आ चकाचौंध में भटकला के नतीजा सोझा बा।

बसन्त का अइला पर कम्पूटरी आ मशीनी लोग भलहीं मत हिलो डुलो प्रकृति आपन चोला बसन्ती कइए ली। नीरस, एकरस दिनचर्या वाला सेठ, साहेब आ बाबू लोग पर आम मोजरइला आ महुवा कोंचइला के असर भले मत परो बाकि स्कूली लइकन के सरस्वती जी इयाद परि जइहन। उनका पूजन का उछाह में चंदा क रसीद लेके सड़क पर खड़ा हो जइहन आ बड़ बड़ अकडू आ जोमियाह लोगन के साइकिल, मोटर साइकिल आ मोटर रोकत त देरिये नइखे त भला बाजार करे जात भा आवत रकटू आ नकटू के का औकात? ना दिहैत गमछी आ साइकिल से हाथ धो दिहें।

बसन्त आ 'बसन्ती चोला' भारतीय संस्कृति में रचल–बसल बा। बसन्ती चोला प्रेम में, आत्म बलिदान आ उत्सर्ग के तत्परता के प्रतीक बा। हरियर, लाल, पीयर, केसरिया कूल्हि रँगवे अलग–अगल भावना के प्रतीक बाड़न सऽ। एह देष का पछिला इतिहास में 'बसंती चोला' के गौरव–गाथा सोनहुला अक्षर मेंलिखल बा। बसन्त के जवन रोमानी छबि बा ओकरा के क्रांतिधर्मिता आ आत्म बलिदान से जोरे वाली संस्कृतिये भारतीय संस्कृति ह।

हर बेरी लेखा एहू बेरी बसन्त पंचमी आ सरस्वती पूजा होइबे करी। केरा के फेंड़ गड़ाई, अशोक आ आम के पल्लो से बंदनवार बनी। सरस्वती जी के मूर्ति धराई आ लाउस्पीकर पर धूम धड़ाका वाला डिस्को संगीत बाजी। 'पाप' आ, 'राक' त एह जीन्स युग के मन पंसद चीझु बा। मेडोना आ माइक जैक्सन के दीवाना रात भर नचिहन स आ बिहान भइला गुलाल आ रोरी के लमछर टीका लगा के ट्रक आ टेक्टर पर चढ़ि के, अबीर उड़ावत, पोखरा आ नदी में भसा अइहन सऽ। बसन्त महराज कइसहूं आवसु लइकन में कतनों हुडदंग होखो, महल्ला में कतनो लाउडस्पीकर बाजो, शहर के समझदार आ शरीफ लोग किरिया खइले बा कि ऊ लोग मन एकाग्र क के मोनाफा कमाए खातिर प्रगतिषील ढंग से काम करी। भलहीं कविजी ओह लोगन के 'बेंत' के उपमा देहल करसु। ●●●

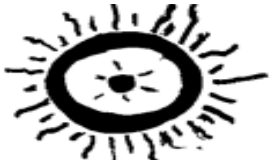

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

ललित लेख

मन महुआ के फूल

❑ **रमाशंकर श्रीवास्तव**

बेर–बेर बरजनी "का झूठो के अझुराइल बाड़ऽ। भंवरा भइला के मतलब ई त ना ह कि जेने चाहीं ओनही रहीं। डारी–डारी घुमबऽ त, के तहरा पर भरोसा करी? एही से तिल लित तहरा के बरजत बानी।"

ना मालूम के तहरा के भंवरा बना दिहल? दुनिया जानत बा कि तूँ प्रेम के गीत गुनगनाए में तेज हउवऽ। जवने फूल पर तू मड़रइब ओकरे तारीफ करे लगबऽ। तहरा के देख के कबो–कबो हमरो मन डोल जाला। हमूँ त पथल लोहा के नइखी न बनल। हमरो जियरा डोलेला सभ के प्रभाव हमरो पर पड़ेला। फूल के भीतर छिपल सुगंध के खोजे खातिर हमहूँ कबो–कबो बेचैन हो जाइला। महुआ के फूल नियर गमक के भर दीहल हमरा में? जबसे तहार गूंजत गीत हमरा कान में पड़ल बा मन में तरह–तरह के सवाल उठे लागल बा। प्रेम के उल्लास में न्योछावर हो जाये के कला केहू भंवरा से सीखे। कानन–कानन के कनन में ना मालूम तू कवन मंत्र फूँक देलऽ जे संउँसे वन प्रान्तर मदहोसी में झूमे लागेला। गोपी लोग के प्रियतम कृष्ण जब–जब इयाद आवस त ऊ लोग आपन व्यथा तहरे से सुनावे। दोसरा के व्यथा सुने में त तहरो कम मजा ना आवेला। द्वापर में रहीम कवि ना रहले, ना त उनकर शिक्षा थोड़ बहुत गोपी लोग के विरह वेदना कम कर दिहित 'रहिमन' निज मन की व्यथा मनहीं राखिए गोय। सुनि इठलइहें लोग सभ बाँट न सकिहे कोय।' तहरे के देख के सूरदास 'भ्रमरगीत' लिख दिहलें।

जेकर मन महुआ के फूल नियर रसगर ना होई ऊ भ्रमर गीत नइखे लिख सकत हे भंवरा भाई, तहार मन के थाह हमरा आज तक ले ना मिलल। तूँही नू राजा रतनसेन के लगे संदेश पहुँचवले रहलऽ। वियोगिनी नागमती कहले रहली उ। "पिय सों कहे संदसड़ा हे भौरा हे काग। धनी विरहानल जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।" अपना करिया रंग के सफाई में तूँ प्रकारान्तर से ए बात के संकेत दे देहलऽ कि मानवी प्रेम के असर तहरो पर पड़ेला। नागेमती नियर हमूँ केहू के वियोगग्नि में जरि के करिया बन जइतीं। नागमती के वियोग वेदना पर के ना अपना के न्यौछावर कर दी?

भंवरा भाई! प्रेम अइसन चीजे हऽ। ऊ हर प्राणी में समाइल बा । केहू खुलल खेल में ओकरा के वीभत्स बना के बलात्कार में बदल देला, केहू आपन लगाव मन का भीतरे सँजोवले प्रान त्याग देता।

कवना फूल से केतना रस चूसे के चाहीं एह कला में तूँही प्रवीण बाड़ऽ। मनुष्यो में केतना लोग बा, जेकर प्रेम आ यौवन रस से कबो मन ना भरल। हीक भर पियलो के बाद ऊ माँगत बा, 'तनी अउर तनी अउर।' राजा ययाति के यौवन पिपासा उनकरा के केतना तड़पवलस। हमरो जीवन में कबो–कबो अइसन छन आइल कि मन मछरी नियर तड़फडाए लागल। हमरो के बतावऽना कि केहू के उमड़ल जवानी देखि के मन काहे महुवा बन जाला। फगुआ आवते भौजाई लोग घेर लेला। अबीर–गुलाल से भरल ओइसन ठिठोली में, छुट्टा मन बेर–बेर बँधाए चाहेला। देख भौजी, हमरा ऊपर रंग मत फेंकिहऽ। ऊ काहे के मानस। हमार पिचकारी अभी एने–ओने निशाना साधते रहेला कि भौजाई लोग भाग के भीतर लुका जाला। ओने से केहू किलकारी भरत गावेला –"भर फागुन बुढ़ऊ देवर लगिहें।' भंवरा भाई, तूँ ही बतावऽ। तूँत हमरा के देखत बाड़ऽ नू। का हम बुढ़ऊ नियर लागत बानी? बुढ़ऊ नियर लागे हमार दुश्मन। हम त हर होली में नब्बे साल के भइलो पर जवाने लागब। हमरा अइसन पट्ठा के देखके भउजाई लोग दाँत से आपन अंगुरी काट लेला। मगर बिना दाँत वाली भउजी भगवान केहू के मत देसु। फगुआ जवानी के भांग हउवे, पियते आदमी मात जाला आ मन महुआ के फूल नियर ढुरके लागेला।

भंवरा भाई। अगिला साल के फागुन में फेनु अइहऽ। आवते कवनो कली कोंढ़ी पर मत बइठि जइहऽ। खिलल फूल के मजे दोसर होला। हमरा के देख के लजइहऽ मत। हर फूल पर तूँ प्रीत के गीत गइहऽ। तनिको लजइलऽ त आगे के फूल मेहरा जाई। तहरा संकोच से बसिया जाई। कबो हमरो बगिया में त आवऽ। हमनी का दुनू परानी मिल के गावल जाई–

होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी खेलें रघुबीरा!'

●●●

[प्रेमपरक अनुभूतिजन्य भाव आ भाषा के कुशल शिल्पी जगन्नाथ कविता का अन्तः संगति आ छन्दानुशासन का दिसाईं सजग कवि हउवन। भोजपुरी का वरिष्ठ कवियन में शामिल जगन्नाथ जी भोजपुरी ग़ज़ल का रचना विधान आ 'उर्दू–हिंदी–भोजपुरी' का 'समरूप छन्द' पर सराहनीय काम कहले बाड़न। गीति का प्रति उनका भीतर अद्भुत निष्ठा बा। 'कविता' तिमाही पत्रिका के संपादन करत ऊ निरन्तर भोजपुरी काव्य–सिरिजन के प्रोत्साहित कइले बाड़न।]

जगन्नाथ

जन्म– 19 जनवरी 1934, कुकुढ़ा, बक्सर, (बिहार)।

शिक्षा– स्नातक।

सेवा– दूरसंचार महाप्रबंधक, कार्यालय पटना में उपमहाप्रबंधक का रूप में सेवानिवृत्त।

प्रकाशन– 'पाँख सतरंगी' (गीत संग्रह), 'लर मोतिन के' (ग़ज़ल–संग्रह), 'ग़ज़ल के शिल्प विधान' 'भोजपुरी ग़ज़ल के विकास यात्रा', 'उर्दू–भोजपुरी के समरूप छन्द', 'बाँचल–खुचल' (कहानी संग्रह), 'सात रंग', (एकांकी), संपादन 'कविता', 'समय के राग' (ग़ज़ल–संग्रह)।

सम्पर्क– ए–21, साधनापुरी, रोड नं–6, 6 डी–गर्दनी बाग, पटना–800001।

आपन कहनाम– 'हमरा नजर में कविता मानवीय संवेदना के लयात्मक अभिव्यक्ति हऽ ! लिखीला कि लिखला से हमरा सुकून भेंटाला। जीवन का विभिन्न पक्ष से जुड़े के प्रयास रहेला बाकि कवनो खास पक्ष के लेके आग्रह ना रहे।'

(एक)

रुसल जिन्दगी के मनावत त होई।
उहो साध–सपना सजावत त होई।

रहे रोख पहिले त अइसन ना राउर
उमिर कुछ लगावत–बझावत त होई।

अदा इश्किया ना भले रह गइल बा
ग़ज़ल हऽ त आखिर नजाकत त होई।

पता ना, बा बाँचल कि ना हमरा गाँवे
ई राउर शहर हऽ, शराफत त होई।

लिखे के लकम हमरा लागल कि रउवा
ग़ज़ल गुनगुनाए के आदत त होई।

●●●

(दू)

दरद के बाँहि धरीं प्रीति करे आ जाई।
केहू के आँखि के बनि लोर ढरे आ जाईं

हुलसि के आँखि में कजरा रचीं अमावस के
बिहँसि के प्रान के तरई का बरे आ जाई।

लकम लगा लीं सुसुकी में गुनगुनाए के
साँस के साज पर कुछ सुर त भरे आ जाई।

फूल से आँखि भरीं, काँट से करेजा के
डेग मधुबन का डहरिया प धरे आ जाई।

●●●

(तीन)

प्रीति से आँखि चार हो जाई।
प्रीति छन में लखार हो जाई।

आगि नेहियाँ क झवाँइल नइखे
जबे खोरीं अँगार हो जाई।

बात केहू से का कहब मन के
झूठो अउँजा–पथार हो जाई।

जिन्दगी लाख बेरहम होखे
सटीं पँजरा मयार हो जाई।

●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

(चार) लोकराग

भरि जाला अँखिया सपनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

पपिहा पुकारे 'पिया' रतिया–बिरतिया।
ओठवा प अँटकलि मनवाँ, के बतिया।
पिया बिनु सून बा–भवनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

रहि रहि बिखिया भरल बोले बोलिया।
अमवाँ का डेंगी से चसकल कोइलिया।
मारे अँगजरल मेहनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

खनकि–खनकि देला हरिजी के सुधिया।
बिरहा का रहिया हेराइ गइलि बुधिया।
दुश्मन भइल कँगनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

जिनिगी के रहिया ना केहू बा अगोरिया।
बटमार पछुवा करत बरजोरिया।
कइसे बचाइबि रतनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

बइठि बइठि कागा घर के बड़ेरिया
रोजे रोजे उचरेला फजिरे पहरिया।
झूठो देला पपिया सगुनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

कइसे पठाईं आपन हलिया सनेसवा।
बदलि–बदलि घूमे सभे आपन भेसवा।
साँस दुइ घरी के पहुनवाँ, हो रामा,
चइत महिनवाँ।

●●●

(पाँच) जनम–जनम के आस...

जनम–जनम के आस कबे मन के बुति गइल रहित निरमोही
छन भर एको बेर कबो जे साँसन के दुलरवले रहितऽ।

बहुत बेर पहुँचलि दुआरा हमरा बिहँसत मउअति के डोली
बहुत बेर लागल हमरा किस्मत पर किसिम–किसिम के बोली
बाकिर जुग–जुग से भरमल जिनिगी के सभ मिलि के भरमावल
इहे रेख किस्मत के बा मउअति भी लवटलि करति ठिठोली
का मउअति ई हँसी उड़इति पहुँचि–पहुँचि के दुआरा हमरा
तू न कबो जे हिया नेह के बाती के उसकवले रहितऽ।

बुझलो अँखियन से देखलीं हम एह दुनिया के चकमक पानी
देखलीं कइसे लूटल जाता इहाँ बेदरदी से जिनगानी
इहाँ हँसी का साथे–साथे अँसुअन पर भी रोक लगल बा
ओठ सिआइल जइसे मन में तड़पत रहल नेह के बानी
कबले रहितीं घिरल–रुकल दुनिया के चारदिवारी में हम
तू दुनिया से दूर कतो जे मन के नगर बसवले रहितऽ।

बा ठेकान निगिचे कबहीं ले हमरा खातिर आस लगवले
जिनिगी के एह बिकट राह में चटक नेह के जोति जगवले
बाकिर डेग–डेग पर रस्ता बटमारन से घिरल–भरल बा
कइसे बढ़ि पाइब हियरा में हम थाती अनमोल छिपवले
परसि–परसि हमरा चरनन के हँसत रहिति मंजिल कबहीं के
तू न हिया के साध–साध के जे कबहूँ भरमवले रहितऽ।

जनम–जनम के आस कबे मन के बुति गइल रहित निरमोही
छन भर एको बेर कबो जे साँसन के दुलरवले रहितऽ।

●●●

●●●

[हिंदी भोजपुरी में कवनो भेद ना माने वाला वरिष्ठ कवि सत्यनारायण पछिला छव दशकन से 'कविता' आ 'गीत–संसार' से जुड़ल रहल बाड़न। ऊ अपना समय के चर्चित सृजनशील कवियन में जानल पहिचानल जालें। हिंदी भोजपुरी के श्रेष्ठ पत्र पत्रिकन में आपन मौजूदगी दर्ज करावत रहे वाला कवि सत्यनारायण अपना सर्जनात्मकता आ काव्य विवेक के निरन्तर नया एहसास करावत रहल बाड़ें। भोजपुरी में उनकर विशिष्ट योगदान बा।]

सत्यनारायण

जन्म– 13 सितम्बर 1934, कौलोडिहरी, सहार, भोजपुर (बिहार)।
सेवा– अध्यापन का बाद बिहार सरकार के सेवा में।
प्रकाशन– 'तुम ना नहीं कर सकते', 'टूटते जल–बिम्ब', 'सभाध्यक्ष हँस रहा है' (काव्य–संग्रह), 'सुनें प्रजाजन' (नुक्कड़ गीत), साहित्य अकादमी के विशिष्ट श्रेष्ठ गीत–संचयन, डॉ0 शंभुनाथ सिंह के 'नवगीत–अर्द्धशती' 'धार पर हम' शब्दपदी आ 'गीतायन' आदि में संकलित गीतकार।

आपन कहनाम : प्रेम मनुष्य के सबसे सृजनशील अभिलाषा

'कविता के बोले के चाहीं, कवि के ना' जहाँ तक गीत के प्रश्न बा, भोजपुरी कविता के आत्मा ह गीत। भोजपुरी कविता के परख–पहिचान के आधार–भूमि ह गीत। एक से एक कवि आपन गीत–चेतना से भोजपुरी कविता के ऊँचाई देलन। आ आजुओ दे रहल बाड़ें। गीत रागधर्मी होके भी मूलतः जीवनधर्मी होला। भोजपुरी गीत के यात्रा घर–अँगना, पास–पड़ोस से चलके समय आ समाज तक जाला। मतलब ई कि समकालीन भोजपुरी गीत जीवन के सम्पूर्णता में देखेला, देखावेला।
आज प्रेम गीत के लेके कुछ भाई लोग कर्फ्यू के स्थिति पैदा कर देले बाड़े। खासकर एन्द्रिय प्रेम के गीत लिखल त अपराधे मानल जाता, जबकि प्रेम मनुष्य के बुनियादी आ सबसे सृजनशील अभिलाषा ह। प्रेम के गीत प्रेमी से बड़ होला।

(एक) इयाद कबो ओरियाय ना

आवऽ प्यार, आवऽ
बइठऽ
कँहवा रहलऽ?
ना कवनो खोज–खबर
ना चिट्ठी–पतरी !
कइसन बाड़ऽ?
सब ठीक–ठाक बा नूँ?
घर–गृहस्थी?
बाल–बच्चा?
नोकरी–पेशा ?

कुछ खइबऽ?
ऊहे फुटहा? चना–चबेना?
जे तू गाँती में बान्ह के
ले आवत रहलऽ
आ तोहरा लगे बइठ के
हम खात रहलीं

कबो–कबो त छीना–झपटी हो जात रहे
इयाद बा?
आहर के पानी में अंठखेली?
चिरई–चुरगुन प
गुलेल तानल?
बगइचा में टिकोरा बीनल?
खेत में साग खोंटल?
तब ना केहू बरजे वाला
ना टोके वाला
उमिर बढ़ल
गाँव–जवार के नजर में
हम सयान हो गइलीं
हमार अँगने
हमार दुनिया हो गइल !
खैर, छोड़ऽ
का कहलऽ?
पुरान दिन

ना बहुरी त का भइल?
सुनऽ प्यार,
तूं त हमार इयार हवऽ
आ इयाद कबो ओरियाय ना !

अच्छा
अब जा
अबेर होता।

(दू) का मिलेला आकास के...

आखिर
का मिलेला
आकास के
चिरई से ?
आकास
गाछ ना ह
कि चिरई फुदकत आवे
खोंता बनावे
खेतो
ना ह आकाश
जे फसलन के साथ उगे
चहकत चिरई
आवे, दाना चुगे

आकाश के लगे
ना गंध बा
ना राग
बस
आपन एकान्त बा
आकाश के लगे
अनन्त तक फैलल एकान्त
जेकरा के
आपन उड़ान के
खुशबू से
भर देले चिरई

चिरई के पाँख प
उतर आवेला
आकास के नीला विस्तार
अऊर
आपन रोम–रोम से
बाजे लागेला आकाश
जइसे सरोद, जइसे सितार

लौट जाले चिरई
बाकिर
आकाश जानेला
कि चिरई जे छोड़ गइल
बस ओतने
आकाश के आपन ह–

आँख में बसल
साँस में रचल
आखिर
का मिलेला
आकास के
चिरई से?

●●●

[संवेदनशील मन मिजाज आ सर्जनात्मक प्रतिभा के धनी वरिष्ठ भोजपुरी साहित्यकार पाण्डेय कपिल का काव्य आ कला के प्रति अटूट निष्ठा बा। उनका कविताई में प्रेम आ प्रकृति का साथ जीवनानुभूति के मौलिक उद्‌भावना आ रचना कौशल बा। आत्म दर्शन आ आत्म–साक्षात्कार के ललक, उनका भीतर का कवि के गुरु–गंभीर बनावेला।]

पाण्डेय कपिल

जन्म– 24 सितम्बर 1930, शीतलपुर बाजार, बरेजा, सारण (बिहार)।
शिक्षा– एम0ए0 (का0हि0वि0), वाराणसी
सेवा– राजभाषा उपनिदेशक बिहार से अवकाश, अखिल भारतीय–भोजपुरी साहित्य सम्मेलन।
प्रकाशन– 'भोर हो गइल' (काव्य–संग्रह), 'कह ना सकलीं (ग़ज़ल–संग्रह), 'जीभ बेचारी का कही' (दोहा–संग्रह), 'फुलसुंघी' (उपन्यास), भोजपुरी तिमाही पत्रिका 'उरेह', भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका का अलावे कई भोजपुरी संकलनन के सम्पादन।
सम्पर्क– मार्ग–3, इन्द्रपुरी, पटना–800024

(एक) ग़ज़ल

भइल प्यार के ई असर धीरे–धीरे
मिलत जब नजर से नजर धीरे–धीरे
लगावत रहस ऊ भले मुँह प ताला
नजर सब बता दी मगर धीरे–धीरे
पता ना रहे कहँवाँ जाये के बाटे
बढ़ल डेग जब राह पर धीरे–धीरे
जे डूबत रहे जिन्दगी का भँवर में
चलल नाव मन के उबर धीरे–धीरे
मतारी–बहिन–बाप–भाई भुलाइल
मिलल जब पिया के नगर धीरे–धीरे
तुरत हाल आपन बतावल बा मुश्किल
मिलत बाटे आपन खबर धीरे–धीरे

(दो) ग़ज़ल

का पता कब तलक चले के बा
मोम का कब तलक गले के बा
नेह जब तक बचल रही तब ले
जिन्दगी के दिया जले के बा
अब ले होते रहल गलत शिकवा
बात ईहे इहाँ खले के बा
दोष कइलस जे ऊ त छूट गइल
दोष लागत इहाँ भले के बा
ई तऽ कोंढ़ी ह, इंतजार करीं
फूल लागी, तबे फले के बा

(तीन) ग़ज़ल

गीत मन के लिखइला जमाना भइल
राग में गुनगुनइला जमाना भइल
रोज अधराति कोइल कुहुँकलस मगर
आम के मोजरइला जमाना भइल
ओस अइसे त रोजे भिंजावत रहल
मन के महुआ फुलइला जमाना भइल
अब ना परतीत के कवनो मानी रहल
प्यार के किरिया खइला जमाना भइल
कान में अबहूँ गूँजत बा कइसन ई धुन
बात उनका से कइला जमाना भइल

(चार) ग़ज़ल

हो गइल देर आज आवे में
प्रान के आरती सजावे में
चाव मन के, तोहार हो जाला
प्रीत के भाव–गीत गावे में
राग में, रस में लीन हो जाला
प्रान–भँवरा के गुनगुनावे में
मन के आपन, बिसर–बिसर जाला
तोहरा सुधि में समय बितावे में
शील–संकोच कुछ बुझाला ना
खुल के आपन गरज सुनावे में

●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

[रंगकर्मी, नाटककार कवि सतीश जी भोजपुरी भाव–भंगिमा के वरिष्ठ रचनाकार मानल जानल। भाषा शिल्प का दिसाईं सजग, भावबोध से संपन्न। इनका कविता में 'प्रेम' आ प्रेम के 'पीर' दूनों भावप्रवणता का साथ प्रगट होला।]

सतीश प्रसाद सिन्हा

जन्म– 01 जून 1938, आरा, भोजपुर (बिहार)।
प्रकाशन– 'मन के अँगना में(काव्य–संकलन), 'अपने–पराये', 'सतरंगे–लोग' (हिंदी नाटक), 'धरमतिया' (भोजपुरी नाटक)।
सम्पर्क– कुसुमांचल, कल्याण विहार, अंबेदकर पथ, बेली रोड, पटना–14।
आपन कहनाम : गीत के उद्‌गम–स्थल मानव शरीर के कोमलतम अंग हिरदय होला, जहाँ दया, नेह–छोह आ परोपकार–संवेदना के कुल्कि तंत्र प्रस्फुटित होत रहेला। हिरदय के प्रेम सनाइल अभिव्यक्ति गीत के माध्यम से सीधा मर्मस्थल छू लेला। यथार्थ आ समकालीन लेखन के पक्षधर प्रेम–गीत के भले अप्रासंगिक बताओ, बाकिर गीत आ प्रेम–गीत के प्रासंगिकता कबो खतम ना हो सके। प्रेम तऽ प्रकृतिजन्य होला। कुल्हि चर–अचर के उत्पत्ति के जरि में प्रेमे होला।

(एक)

कइसे दो अचके में भोर हो गइल
अंगना में हमरा अंजोर हो गइल।

जोती अन्हरिया में रहे अझुराइल
रतिया का संगे–संगे रहे करिआइल
उतरल किरिनियन के अइसन बराती
खेंता में चिरइन के सोर हो गइल।

असरा के दियना कबे से दासल
मनवां का कोना में रहे उद्‌बासल
कइसन चलल आजु किस्मत के जादू
सँवरो सपनवां बा गोर हो गइल।

हियरा के सुगना रहे सकुचाइल
सपना के बगिया रहे मुरुझाइल
अइसन चलल आजु थथमल पवनवाँ
नदिया में मन के हिलोर हो गइल।

मितवा सनेही के आइल हऽ पाती
हमरा अंगनवा में धरि गइल बाती
तन–मन पिरितिया मेंअइसन नहाइल
नेहिया में गीत सराबोर हो गइल।

कइसे दो अचके में भोर हो गइल
अंगना में हमरा अंजोर हो गइल।

●●●

(दू)

आँज गइल सपना सतरंगा
आके केहू अँखियन में !

मन के मोर छमाछम नाचे
बात हिया के हमरी बाँचे
खनक–खनक बाजेला कंगना
रहि–रहि सून कलइयन में।

जागल चिरई भोरहरिया के
भागल अंधियारा रतिया के
ललक समाइल बा उड़न के
मन–पाँखी के पँखियन में।

नवकी–नवकी आस बुनाइल
सुर में लथपथ गीत सनाइल
गलबहियाँ के लागल असरा
फेरु–पियासल बँहियन में।

●●●

सुधि के मृगा कुलाँच भरेला
मद–मातल दिन–रात रहेला
के भरि गइल प्यार के मदिरा
खाली नेह–गगरियन में!

सपना सपने ना रहि जाए
साथ समय के ना बहि जाए
कबो–कबो डर जाला मनवां
चलत अकेला रहियन में।
आँज गइल सपना सतरंगा
आके केहू अँखियन मे!

●●●

(तीन) भरि–भरि आइल आँख
आजु आँतर अकुलाइल
दरद हिया में आके
फिर से बा बिटुराइल।
फिर से आइल याद
पिया के बिसरल बात।
घाव पुरनका टभकल
काहे फिर रहि–रहि के
भीर पीर के ढरकल
काहे फिर बहि–बहि के
अचके अधिये रात
सुधि के जुटल बरात।

भुक–भुक करत दिया के
बाती के उकसावल
मरूथल मन पर हमरा
पानी के बरिसावल
गुपचुप लुकत–छुपात
सिहरल फिर से गात।
बँसुरी केहू टेरल
फिर आपन बिरहा के
जिनगी थथम गइल बा
बीच समय के आके
फिर आइल सौगात
आँखिन के बरसात।

●●●

झरोखा इयाद के

स्व० रामजियावनदास 'बावला'

(एक) सगरी सरेहिया रँगाइलि हो सखि
फागुन आइल
खेतवा मटर गदराइलि हो सखि फागुन आइल !
पिया परदेसिया क सुधिया सतावइ
बोल कोइलरिया क कहर ढहावइ
अमरइया बउराइलि हो सखि फागुन आइल !
दुधवा में रतिया चननिया नहाले
खोरी-खोरी होरी होय गीत मुस्काले
फुटही ढोलकिया मढ़ाइलि हो सखि फागुन आइल !
रस बरिसावै मधुमास के बयरिसा
बिरमल जाने कहाँ बावला सँवरिया
सपना प सपना टँगाइलि हो सखि फागुन आइल !

(दू) पेड़ परास क फूलत नंग
अनंग भी अंग बदे सिहरैला ।
बारिन में फुलवारिन में
भँवरा रस-लोभ क मारै मरैला ।
जोरि के गाँठ चलै तितिली
कुल गेह सरेह सनेह करैला
आली, बसन्त बियोगिनि के
छतिया पर आइ के कोदो दरैला !

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

भोजपुरी के चर्चित गीतकार श्री द्विवेदी कविता मंच पर अपना जनपदीय निजता का साथ गीत परोसे वालन में प्रतिष्ठित रहल बाड़न। उनका भोजपुरी में अवधी घुलल–मिलल बा। मिर्जापुर अउर काशी उनका काव्य साधना क नगरी रहल बा। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत सम्मानित विश्व भोजपुरी सम्मेलन से 'सेतु' सम्मान आ उ0प्र0 हिन्दी संस्थान से साहित्य भूषण जइसन सम्मान पावे वाला एह कवि के लिखल "बरवै" भोजपुरी साहित्य का छन्दशास्त्र का परम्परा में शामिल करे जोग बा।

हरिराम द्विवेदी

जन्म– 12 मार्च 1936 शेरवां, जिला– मिर्जापुर (उ0प्र0)
शिक्षा– एम. ए., बी. एड.
सेवा– आकाशवाणी का प्रसारण सेवा में तीसन बरिस बाद अवकाश
संपर्क: अजमतगढ़ पैलेस, मोतीझील, वाराणसी

पातरि पीर

मितवा बोलिया बोलै अस अनमोल
सुनतै मनवाँ जाला बरबस डोल।
सोच सोचि के जियरा सीतल होय
थकै न तनिक परनवाँ सुधियन ढोय।
नेहियां पाके हियरा हुलसइ मोर
बरै दियरिया भितराँ लगै अँजोर।
अस अपनइयत सोचीं जीव जुड़ाय
केतनो करीं परनवाँ नाहिं अघाय।
गंगाजल अस पावन परम पुनीत
कहाँ जुरै एह जुग में अइस पिरीत?
सुखद सपनवाँ पनपै सीतल छाँह।
जबै जुड़ै अँकवारी भरि-भरि बाँह।
इहै मनाईं निसदिन आठउ याम
जिनिगी भर ई नेहिया निबहइ राम।

बनि बैरी विष बोबैं बाउर लोग
लगि लगि जाय जिनिगिया कुफुतइ रोग
ई बनि कलक कुरेदै बारम्बार
डुहुकै जिनिगी जइसे छुवै अँगार।
जे मितवन के बिच्चे बोवे आग
उजरवटी पर डालै करियर दाग।
देखि सकै न पिरितिया के परतीत
करमहीन जेके ना भावै गीत।
अइसन कुटिल सुभाव न जानै नेह
जनम अकारथ बिरथा मानव देह।
काँट गड़ै कढ़ि जाय न पीर ओराय
बहुत देर तक करकै करक बुझाय।
केतनी बिखधर पीरा सहइ परान
एके कइसे केहू जानइ आन।

निरमल नेहिया रहली बड़ टहकार
कउने कारन नहकै भइल अन्हार।
इहै सोचि के हियरा होय अधीर
गहिरी होतइ जाले पातरि पीर।

●●●

[भोजपुरी के वरिष्ठ कथाकार, गीतकार, चन्द्रविनोद जी संवेदना आ विचार के भाषा शिल्प के साथ संगति बइठावे वाला चर्चित कवियन में गिनल जाले। भोजपुरी–नवगीत–विधान खातिर उनकर नाँव अगिली पांति में गिनात रहल बा।]

पी0 चन्द्रविनोद

जन्म– 01 जनवरी 1945, शीतलपुर, जिला–सारण (बिहार)
सेवा– काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, मूर्तिकला विभाग मैं प्रोफेसर पद से अवकाश प्राप्त।
प्रकाशन– (1) हम कुन्ती ना हईं (2) केरा के टुकी टुकी पतई (दूनो कहानी संग्रह), (3) केतना बेर (गीत–संकलन)
बकौली खुद – संवेदना आ अनुभूति "हमरा भीतर जब बहिर्मुखी होके फूटेला तब हमार कथा बन जाला आ जब अंतर्मुखी होके फूटेला तब गीत बन जाला।"

(एक) अपनापन से भर जाये दऽ

जइसे बीत गइल बा एतना
बकियो रात गुजर जाये दऽ
अबले भरल जहर बा जेतना
ओकर असर उतरे जाये दऽ ।

बंशी में खोंसल चारा के टँगले रहल करेना
तन किनार पर साँस रोक के पोंछल करे पसेना
कुछुओ हाथे ना आइल त, अपनापन से भर जाये दऽ ।

मन के चहकत चाह चिरइया, कवना बन में भटकल
भर रस्ते बा आँख पसारल, तबहूँ आगम अँटकल
थथमल पाँव अगर बा अबले पारा बनल, पसर जाये दऽ ।

छन भर के ठहराव इहाँ के, होत फजीरे जायेब
बाँचल दिन तोहरे पियार के, रसगर गीत सुनाएब
जतने पल बा एह पड़ाव के, बाती जइसन जर जाये दऽ।

जइसे बीत गइल बा एतना
बकियो रात गुजर जाये दऽ !!

●●●

(दू) महकेला महमह पिरीत

महकेला महमह पिरीत गोंइयाँ
अब त बिसरे ना छन-भर अतीत गोंइयाँ !

जमुना के पानी में उमगल रवानी
भें जाला असरा के मउरल कहानी
अहरह बा आँतर में गीत गोंइयाँ !

कसमस अँजोरिया चननवाँ के बँहियाँ
नेवतल नगरिया नयनवाँ के छँहियाँ
भरमे ना रहिया पुनीत गोंइयाँ !

मोर पिछुअरिया सघन बँसवरिया
बंशी बजा के जगावे बेयरिया
कुच-कुच बरन होला पीत गोंइयाँ
अब त बिसरे ना छन भर अतीत गोंइयाँ !!

●●●

[श्री दयाशंकर तिवारी भोजपुरी जीवन संस्कृति आ मूल्यबोध के कवि हउवन। उनका कविता के राग, जीवन– राग बन के उभरल बा। भाषा के सहज–सुभाविक रूप आ गँवई– विम्ब उनका गीतन के विशेषता हवे।]

दयाशंकर तिवारी

जन्म – 3 जनवरी 1945, मीरपुर रहीमाबाद, मऊ (उ0प्र0)
शिक्षा – इलेक्ट्रिकल इन्जीनियरिंग
सेवा – विद्युत विभाग इन्जीनियर सेवा से अवकाश प्राप्त
प्रकाशन– 'विगुल और बाँसुरी', अभिमन्यु, माटी क महक (काव्य संकलन)
वर्तमान पता– 297, भीटी (अन्धा मोड़) मऊ 275101 (उ0प्र0) मो0– 9415680942
आपन कहनाम– 'नारी संवेदना आ ओकरा प्रेम–पीड़ा से हमरो मन द्रवित होला। इहे पीर गुनगुनाहट बन जाला। प्रकृति–चित्र त अपना आपे एह गुनगुनाहट में उभरि आवेला।

घुमा दऽ पिया हमरो के

घुमा दऽ पिया हमरो के पटना सहरिया।
पहिरा के रेसमी बनारस कऽ सरिया।

जवन जवन कहला तूँ कइली कहनवाँ,
चलि पइहें अबकी ना कवनों बहनवाँ।
ना मंगली तोहरा से कोठवा अटरिया।।1।। घुमा दऽ

मेहदी से रंगली ना कबहूँ हथेलिया,
खेललीं सहेलियन के संगवा सुपेलिया।
जिनिगी भर रखववला रहिला–रहरिया।।2।। घुमा दऽ

पहिरीं लरिकपन में झुमका आ झलिया,
निबिया के सिंकवा कऽ नथिया आ बलिया।
धुरिये आ मटिया में बीतलि उमिरिया।।3।। घुमा दऽ

हँसि हँसि के कटलीं अकेलही विपतिया,
टिकुली सेनुरवा कऽ रखलीं इजतिया।
बेचलीं मुसीबतो में ना थुपुआ नरिया।।4।। घुमा दऽ

मेहनतिये से मिलिहें सभ कुछ सजनवां,
उगलेला सोनवाँ केइलवा खदनवाँ,
पइसे के पिछवा भइल देहि करिया ।।5।। घुमा दऽ

●●●

के दियना बारि गइल

के दियना बारि गइल नेहिया के अँगना।
अँखियन में सूघर सजाइ गइल सपना।।

चढ़ते फगुवना के खोरि–खोरि महके,
अगराइल उखियो के पोर पोर पिहिके।
खनका गइल के कलइयन के कंगना ।।1।।

अलसाइल अँखियन के लोर भइल असरा
पोंछते पोंछत सराबोर भइल अँचरा।
चुपके से पुरवइया मारि गइल मेहना ।।2।।

बगियन में मधुर गीत गावें भंवरवा,
फुलवन से बतियावें टारि के ओहरवा।
के हो परोसि गइल पहुना के जेवना ।।3।।

अंग अंग से अठखेली करेलीं जेवरिया,
नकबेसर, करधनिया पांव के पयलिया।
के सोनवा पिंजरा में टांगि गइल सुगना।।4।।

रतिया भर टिमटिमाय दियना के बाती,
जोगईला संझवाती पढ़ि पढ़ि के पाती।
देइ गइल के नेवता भेजि के ओरहना।।5।।

●●●

पियवा गइलें परदेसवा

पियवा गइलें परदेसवा ना सनेसवा भेजें हो,
दिन दिन बाढ़ेला अनेसवा ना सनेसवा भेजे हो।

जोहीं दिनवा रतिया पतिया,
नाचे अंखियन में सुरतिया।
लोगवा कहेलें भदेसवा ना सनेसवा भेजें हो ।।1।।

गइलें चइते के महीनवाँ,
बाटे मथवा पर सवनवाँ।
बखरी ढाहे असरेसवा ना सनेसवा भेजें हो ।।2।।

बीतलि दसई आ देवारी,
अगहन पुसवा बा दुआरी।
बदरा बरसेला कुहेसवा ना सनेसवा भेजें हो ।।3।।

अगवाँ मघवा आ फगुनवाँ,
होखें अनगिन असगुनवाँ।
कहीं केकरा से कलेसवा ना सनेसवा भेजें हो ।।4।।

आपन केहू नाहीं मितवा,
माहुर लागे अमरितवा।
कबले अइहें सुदिवसवा ना सनेसवा भेजें हो ।।5।।

●●●

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

आज तक बनवास में बा आदमी।
काँट अस मधुमास में बा आदमी।
नेह के झरना न जाने का भइल
खुश्क बेहद प्यास में बा आदमी।

केहू के देख तोहरा घर क खिरिकी बन्द हो जाले
कहानी जनम लेले अउर पैदा छन्द हो जाले।
बड़ा मुस्किल से रस्ता बीच केहू टिके पावेला
मुहब्बत आ अदावत में सुरू जे द्वन्द हो जाले।

कोंपल अस काँप रहल देह मोर मितवा।
कहाँ गइल नयनन से नेह मोर मितवा।
भागे ना अँगना से हमरा उदासी
सुख उड़ल बन–बन के खेह मोर मितवा।

●●●

संपर्क : नोनार वाया पीरू भोजपुर (बिहार)

नागेन्द्र प्रसाद सिंह

उनका अइला से कतना खुशी मिल गइल।
हमरा मुरझाइल मन के कली खिल गइल।
कब से सूतल रहे कामना जड़ बनल
कुछ भइल अस कि बा तन–बदन हिल गइल।

कढ़ावल प्रीत के, के गीत निसबद रात में इहवाँ
भरल के नेह के मोती नयन के प्रात में इहवाँ।
इयादन से रहीं हम भरत सुनहट जिंदगानी में
पता ना सोच के का लोग बइठल घात में इहवाँ।

गीत केने से भर रहल बा एह सुनहट में।
प्रीत के सुर पसर रहल बा एह सुनहट में।
फूल सदईं खिलल रहल जे प्रीत के इहवाँ
आज काहे दो झर रहल बा एह सुनहट में।

●●●

संपर्क : 01, शेफाली अपार्टमेन्ट,
डा0 ए0के0 सेन पथ काजीपुर, पटना–04

कुमार विरल

कहाँ बोईं बियना आ नेह से पटाईं
मन माटी ऊसर बा कइसे उपजाईं।

अँखिया से जोतीला रूपवा के धरती
कहिया से भाग मोर असहीं बा परती
सुनगत सनेहिया के कइसे बुताईं !

अदबद के अँखुवाइल पीड़ा के बिरवा
देहियाँ का रेती पर सिसके ना पुरुवा
माया–मचान झूठ कउवा उड़ाईं !

चरन धूरि गइला से चान बा लोटाइल
सपना के हासिल कबो ना गोटाइल
कइसे आकास बीच शब्द के उगाईं ? ●●●

संपर्क : C/o शत्रुघ्न प्र0सिंह, स्कूल रोड, माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर (बिहार)

[भोजपुरी कविता के नया भाषिक बिनावट आ षिल्प से सँवारे वाला वरिष्ठ भोजपुरी नवगीतकारन का जमात में चरचा में रहे वाला कवि हउवन।]

(डा0) रिपुसूदन श्रीवास्तव

जन्म– 24 अगस्त–1940 (गोपालगंज बिहार)
सेवा– पूर्व आचार्य और अध्यक्ष (दर्षनषास्त्र) बी. ए. बिहार विष्वविद्यालय मुजफ्फरपुर।
प्रकाषित भोजपुरी काव्य संग्रह– 'षबनम के मोती' आ 'आग भइल जिनगी'
संपादन– 'आगे– आगे' आ 'हीरा मोती'।
वर्तमान पता: प्रवास, लेन न0 2, पड़ाव पोखर,आमगोला, मुजफ्फरपुर
बकौल खुद:–'भाव आ विचार कविता के आत्मा हऽ त भाषा ओकर काया। भाषा भाव के उजियावे में जतना समरथ होले, कविता ओतने तेजी से पाठक/ श्रोता तक पहुँचेले।

(एक)

जबसे गाछ सेयान भइल बा/ पहुँचे लागल गाँव नगर।
पुलुई पर सुगना बइठल त/ कउँचे लागल गाँव नगर।

धरती जब आकास छुए त/ घर–घर टाटी लागेला
आसमान पथराव करे त /नाचे लागल गाँव नगर।

ढहे पुरान भीत त, केहू कानो कान ना जानेला
नया भीत जनमे लागल तऽ/ पाछे लागल गाँव नगर।

ढाई आखर के पाती/ जबसे पहुँचल पंचाइत में
आपन आपन अरथ लगा के/ बाँचे लागल गाँव नगर।

(दू)

पता ना केने से टकरा के हवा आइल बा।
फिर उहे गंध साँस–साँस में समाइल बा।

आजु का बात हऽ बन–ठन दुआर पर हमरा
भोरे– भोरे बे बोलवले बहार आइल बा।

रतन ह रूप के आकी सनेह के सोना
आकि खुद चान तलइया में उतर आइल बा।

दूभि के पात में छीपल बा ओस के मोती
बन के चितचोर केहू आँखि में लुकाइल बा।

जब ले दरदल न दिया सिरिजना भइल न कबो
लोर का जोर पर हर गीत मुस्कराइल बा।

(तीन) महुआ के गाँछ तले फूस के मड़इया
फुदुकि फुदुकि नाचि रहल हरखित गौरइया!

पुरुवा के अँचरा में महुवा के लोरी
छोट बा मड़इया ई सुख कहाँ बटोरी
डार डार रूखी नाचे, ता ता थइया !

मन मे ना दुख चाहे सूखि गइल बोटी
बड़ा नीक लागेला नून सँगे रोटी
बनल रहे भाग, अरज बा गंगा मइया!

रुकि जा सुस्ता लऽ ए दूर के बटोही
साथ छूटि जाई फिर के केके जोही?
चारे दिन बाटे ई धूप खेल छँइया!

●●●

(चार) जब कबो दूर से निसबद रात में
होके व्याकुल पुकारे पपीहा पिया
तब कठिन तेज तूफान में भी जरत
जोर से काँपि के झिलमिलाला दिया।

जिन्दगी में भले कुछ मिलल न मिलल
बस केहू के भरोसा क थाती त बा
नाव लेके मुसाफिर भले ना फिरे
हम जरावल करब घाट पर ई दिया।

आँख के सामने जिन्दगी के जहर
आँखि झपके त झरना हँसी के झरे
हर सपन में अगर तूँ मिले के कहऽ
हम बोलावत रहब रात दिन नींदिया।

हर गली बन्द बा बन्द घर बंद दर
आदमी बंद बा तंग ताबूत में
हम गजल ना कहीले सही जान लऽ
हम दिखावल करीले भरल हिरदया।

●●●

झरोखा इयाद के

स्व० भोलानाथ गहमरी

(एक) महुआ के फूल झरे पलकन की छँहियाँ
सारी रात महके बलमु तोर नेहियाँ !

कवनी नगरिया बेदरदी के डेरा
दर्द भरल बीन बजलवस सँपेरा
ढूँढूँ उमर भर कवन-कवन ठँइयाँ!

गंगा नहाइ सुरुज करीं बिनती
बिरथा भइल जब सगरी मनवती
हाथ जोरूँ केकर, केकर करूँ पँइंया !

निंदिया के पलना सपनवाँ के डोरी
बेर-बेर खींचे बिरह बरजोरी
चाननी भरे जब जब चन्दा के बँहिया!

(दू) कींचड़ से नील कमल दियना से कजरा
चिटुकी भर नेह से सँवरि जाला जियरा !

जब जब किरिनिया अगिन बरिसावे
धरती के तप से सागर उठि धावे
बूँद बूँद बनि के बरसि जाला बदरा !
तनिकी भर तेल से धधाइ जरे बाती
छन भर में माँग भरे रात अहिबाती
बिहँसि उठे भीतर के रूप-रंग चेहरा !
जिनिगी के साध पले मन में हर ढंग के
काँटन के बीच जइसे फूल कइ रंग के
जे पावल गंध भइल गरवा के गजरा !
चिटुकी भर नेह से सँवरि जाला जियरा !!

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

[भोजपुरी के वरिष्ठ चर्चित कथाकार आ बहिर्मुखी समाजिक भाव के कवि कृष्णानन्द भोजपुरी साहित्य–सिरिजना में अगिली पांति में जुड़ल रहल बाड़न।]

कृष्णानन्द 'कृष्ण'

जन्म– 2 जुलाई 1947 चाँदी नरही, भोजपुर (बिहार)
सेवा– अवकाष प्राप्त अभियन्ता (लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण)।
प्रकाशन– एह देस में रावन अभी मरल नइखे, गाँव बहुते गरम बा, हादसा (कहानी संग्रह), भोजपुरी कहानी विकास :परम्परा (समीक्ष), नया सूरज चढ़ल जाता, आपन गाँव भेंटाते नइखे (गजल,सानेट संग्रह)।
संपादन– कथा पत्रिका 'पुन' : का अलावे कहानी आ लघुकथा के पाँच गो संपादित संग्रह।
बकौल खुदः 'समाज में घुसल कुरीतियन आ ओहसे उपजल कुटेव आ विसंगतियन' से असहमति आ प्रतिक्रिया में कविता।

(एक)

हर देवाल पर' छीट गइल अइसे कुमकुम के
परिवर्तन के शंख बजावत जागीं लोगे
देखीं बुढ़वा अलख जगावत बा घुमघुम के
अइसन समय कबो आवेला भागे–जोगे।

दह दह दहक रहल जंगल फूलल परास बा
जइसे लागल आग इहाँ जन जन के मन में
सेमर खड़ा उदास अलग कुछ कुछ निरास बा
पछुवा मार रहल बा बर्छी कइसे तन में।

तीसी मटर फुलाइल, सुन्नर सोभे अँचरा
चकमक चकमक धरती के अँगना में जइसे
खाड़ सिवाना पर पीपर गावत बा पचरा
लहरा मार रहल गेहूँ जौ देखीं कइसे
फूट रहल देखीं पूरुब से कइसन जोती
फेंड़न के फुनुगी पर चमके देखीं मोती।

●●●

(तीन)

तहरा अइला से घर जगर मगर हो जाला
कोना कोना मधुर गंध चुपके भर जाला
सब केहू तहरा अगवानी में खो जाला
जब जालऽ सबके हुलास पर पाला पर जाला।

कइसे समय सँसर जाला केहू ना जाने
चुपके चुपके गौरइया अस अजब अचानक
कतनो तोख धराईं बाकिर मन ना माने
पसरल बा सन्नाटा चारो ओर भयानक।

(दू)

आजी के आ माई का आँखिन के ममता
प्रेम, कहीं बिसराईं कइसे अपना मन से
कवनो धन ना करि पाई ए धन के समता
सब चर्चित हो गइल आज बा ओही धन से।

आपन रहे करेजा, ऊहे काट रहल बा
गंगाजी के देखीं उल्टा धार बहत बा
देख–देख सब आज करेजा फाट करल बा
अपना धरती पर अपनन के मार सहत बा।

लोग सहे चुपचाप समय के फेरा बाटे
आगा कइसन दिन आई मन काँप रहल बा
अगल बगल ई कइसन दुख के घेरा बाटे
आपन बनल रहल जे, हरदम चाँप रहल बा
अकसरुआ में याद बहुत सबकर आवेला
मन, अँचरा के छाँह बइठि के सुख पावेला।

●●●

साँस साँस में बसल गंध कइसे बिसराईं
कीमत होला भला प्राण के अलग देह से
भेद रहल ना कबो, कहीं कइसे हिगराईं
कइसे आज चुकाईं बदला मिलल नेह के।

●●●

अषोक द्विवेदी

जन्म– 01 मार्च 1951, सुल्तानपुर (गौसपुर), गाजीपुर (उ0प्र0)
षिक्षा– काषी हिन्दू विष्वविद्यालय से, एम.ए (हिन्दी), पी–एच0डी0 (1975)
प्रकाषित किताब– 1. घनानन्द और उनकी कविता 2. समीक्षा के नए प्रतिमान (आलोचना), 3. मीसा में बंद देष (कविता संग्रह)1977 भोजपुरी में निबन्ध संग्रह (रामजी के सुगना, 1994) कहानी संग्रह (गांव के भीतर गाँव, 1998; आवऽ लवट चलीं 2000) कविता संग्रह (अढ़ाई आखर, 1978; फूटल किरिन हजार, 2004; कुछ आग कुछ राग; प्रेस में)
संपादन– 'ग्राम्या' (हिन्दी) **'पाती'** (वर्ष 1979 से अब तक)
कहनाम : परम्परा इतिहास आ वर्तमान के ताल मेल बइठावत, अपना समय आ परिवेष में जियत–जागत–जूझत, समुझल बूझल अपना खास अनुभूतियन आ संवेदना के अपना निजता का साथ उकेरे उरेहे में कविता (गीत गजल, सानेट, फ्री वर्स) लिखा जाले।

(एक) हम का लिखीं दूसर ?

उहे धरती उहे सूरज–चान
हम का लिखीं दूसर
ओइसहीं दिल बा अभी नादान
हम का लिखीं दूसर!

पात पुरइन के चढ़ल जल–बून–मोती
लगल निरखे कँवल हियरा खोलि जोती
ताल–जल लहरल सुरहिया धान
हम का लिखीं दूसर!

प्यार धरती के गहे आकास ओलरल
मीठ चितवन में लसल ठहराव के पल
फूल पतईं हवा, सब हैरान
हम का लिखीं दूसर!

बुद्धि अछइत कूल्हि चतुराई भुलाइल
कवन जादू रहे सुधबुध ले हेराइल
एक छिन में गलि गइल अभिमान
हम का लिखीं दूसर!

तुहीं तूं में गुम, न कल से रहे पवलीं
का भइल कइसे, कहाँ ना कहे पवलीं
अनचिते बहि गइल सगरे ज्ञान
हम का लिखीं दूसर!

कुछ गलल पघिलल भितरिये, ई बुझाइल
नेह–रसरी में बुला रहनी बन्हाइल
प्रेम से हमरो भइल पहिचान
हम का लिखीं दूसर!

(दू) प्रेम पहर

पिहिके फेरू पपिहरा
चीन्हल–जानल पीर लगे
तहरा सुधि में छटपटात मन
आज अधीर लगे।
जिमिया चाटि दुलारत बछरू
गइया जब हुलसे
नेह के आँच बरफ पघिले
बन परबत नदी हँसे
छछनल जिया जंतु जुड़ावत
नदिया–नीर लगे।

गिरत–उठत जिनिगी से
हमके/अतने पता मिले
गिरे पात पियराइ बिरिछ से
फिर टूसा निकले
भोरे फेरी देत चिरइया
सुग्गी–फकीर लगे।
परते दीठि तहार/रुखाइल
दिन अनुकूल लगल
बिहँसल अस अनुराग कि
बन–झर कँटवो फूल लगल
दुखवो अइसन मीठ
कि जइसन गुड़ के खीर लगे!

तहरे गीत सुनावत तोहके
कुछ सुर तान सधल
साधत राग सधल दुइ आखर
अधरी प्रान टँगल
बिन तहरा निर्जीव जीव
बे अरथ सरीर लगे!

(तीन) तहरा संग

तहरा सुधि के घुमड़ल बदरी
हमरी अँखिया घिरि आइल बा,
बरिसे खातिर फफनत–हियरा
भितरे–भीतर छपटाइल बा।

इ पिरीत, लगाव के आग कहीं
कि विराग में गावल राग कहीं
इ सिरिस्टि में घोरल बा सगरी
हमरो तहरा में समाइल बा।

तहरे सँग राग–रँगल जिनिगी
गिरि–गिरि उठ के सिखलस जीयल
तहरा सँग ई सरगीत बनल
तोहसे मिलि के हरियाइल बा।

तहरे से लसल मन, घर–अँगना
बिहँसल दुअरा से बगइचा ले
तहरा बिन बा मरुवाइ गइल
पतई–पतई पियराइल बा।

तहरा सँग सुख से भरल लगल
दुख के दिन दरद भरल पल छिन
अब रंग रूप रस अछइत मन
जरि से पुलुई मरुआइल बा।

तहरा बिन कुछ ना नीक लगे
घर सून लगे बन सून लगे
दिनवों रुखराइल अस लागे
सीतल रतियो अगियाइल बा।

तहरा सुधि में छटपटात मन
आज अधीर लगे।

●●●

तोहके अपनावत जागल धुन
तोहरे के गावत राग सधल
तहरा के सुनाइ तरंग उठल
नदिया–सगरा लहराइल बा।

(चार) नेह

जरी जबले तेल–बाती
नेह के,
अरदुवाई रही दियना–देह के!

रँगल पोतल रूप
चिकनाई जतन के,
पपड़ियाई, सूखि झरि जाई बदन से।
आखिरस जरि के बुताई या गली
बनी खिस्सा धूर माटी रेह के!

पियासल के मिले–
जल अँजुरी भरल,
बाट जोहत प्रान मत जाये निकल।
जब जुड़ाई हिया तलफत भूंइ के
सुफल होई तबे बरिसल मेह के!

धुकधुकी बा प्रान के
सिरजल तहार,
साँस के सुतरी बरल–पूरल तहार।
सोचि गुनि के देख लिहनी हीक भर
कहां गुंजाइस बचल संदेह के!
जरी जबले तेल–बाती नेह के
अरदोआई रही दियना देह के!!

●●●

(पाँच) प्रेम कहानी

सबद सबद हम साधत बानी
भीतर अगिन नयन भरि पानी
अरथ उरेहत, रचि ना पवलीं
अबले आपन प्रेम कहानी।

बून कि जस गिरि ताल सरोवर
नदिया सागर मिलि जाले
अछरे अछर सबद बनि भाखा
अकथ उचारत खिलि जाले
कोसन पर बदलत पानी में
खोजि न सकलीं अमरित बानी।

रति अपरूप काम के रीझन
सिरिजन मेंअनुराग समाइल
पर न्योछावर हो दुसरा पर
तवने भाव–सुभाव न आइल
जवन करे कहनी संपूरन
भइल न ओह षिव के अगवानी।
बन बसन्त हुलसल अगराइल
चढ़ि फागुन के कान्हे आइल
प्रेम कथा के सूत सहेजले
सुधि के पंछी लगहुँ न आइल
अँटकल–भटकल हम रूपे पर
लखि ना पवलीं प्रीति पुरानी।
सबद सबद हम साधत बानी
अरथ उरेहत रचि ना पवलीं
अबले आपन प्रेम कहानी!! ●●●

[भोजपुरी नवगीत–धारा में अपना कथ–शिल्प आ नया उरेह खातिर चर्चा में बनल रहे वाला कवि गंगा प्रसाद 'अरुण' अपना काव्य प्रतिभा आ कौशल से प्रभावित करेलन। उनका गीतन में भोजपुरी के ठेठ रूप का सँगे हिन्दी के शब्द–सौन्दर्य आ मुहावरा देखे के मिलेला।]

गंगा प्रसाद 'अरुण'

जन्म– 4 जनवरी 1947, पड़रिया, बुढ़वल, रोहतास (बिहार)
शिक्षा– बी.ए. आनर्स
प्रकाशन– 'हहरत हियरा' अँगना महुवा झरल (काव्य संग्रह) 'तिरती सी परछाइंयाँ' (हिन्दी गीत संग्रह) संपादन 'लुकार' आ चयनित संग्रह
संपर्क सूत्र– 21 बी, रोड, जोन 4 (संडे मार्केट) विरसागनर टेल्को, जमशेदपुर–4
कहनाम– 'कुछ गुनगुनाइब ना त गीत कहाँ से आई जी? समय समाज के विसंगति विद्रूप से के बाँचल बा? घर अँगना, समय से हमरो राग जुड़ल बा।

(एक)

बड़ जतन से जाँतल तोपल
सुधिया फिर सरसे !

साँस हिडोला पर चढ़े/ उफने आस–उसाँस,
तन अतवास–एकादसी / मन निरजला उपास
बरिसे लागे मन के मुरुछा, आखर–आखर से !

रैन–दिवस परसल रहे / नयनन के अभिषेक,
कइसे ना ढहि जाय जी काँच सेतु अस टेक?
कइसे ना अँखिया निसहारी, दरसन से हरसे?

तन चकई ए पार हो/ मन चकवा ओ पार,
गुजरे सगरी रैन, पर कइसे हो अभिसार
कतनो गगन अँजोरिया उमड़े भा नेहा बरसे?

हवा बेयारी के बिना / अफसाना गढ़ि जाय
कइसन कइसन लोग बा, लपटा अस लपटाय
जइसे लाजवती के कोई, ले कबार जर से!

रूप आरती सम सजे/ सुर बन्दना समान
हवन कुंड के गंध अस अधरन के मुस्कान
आँचर छाँह दुलारे, अलकन–पलकन से परसे!

बड़ जतन से जाँतल–तोपल
सुधिया फिर सरसे!! ●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

(दू)

तितिली अइसन/उड़ि–उड़ि सगरो
गंध चोरावे के।

बहत झकोरन से पुरवा के
अझुरल अलकन से
कबो–कबो कुछ भाव लुटा दीं
बोझिल पलकन से
मन दर्पन के मीत/गीत से
सुधि बिसरावे के।

साँसन से सरगम
धड़कन के मानर के उर में
फरफरात अधरन के आतुर
मुरली के सुर में
पीरा पर मन के
मीरा अस पग थिरकावे के।

अब ना ऊ मोहन, ना राधा
बाकिर राह उहे
सै–सै रूप धरे के
मन में अजगुत चाह उहे
जमुना तीरे/कुंज कुटीरे
रास रचावे के !

(तीन)

नंदन उदास हो,
अबहूँ त लगे आ
हमार मन उदास हो!
अधरन के रंग फीका
कुंतल कटार हो,
मधुकर विहीन आपन
कइसन बहार हो
उपवन उदास
तन के गुलशन उदास हो!
आँचर उदास
नयना अंजन उदास हो,
गुमसुम पहाड़ पायल
कंगन उदास हो,
चंदा–चकोर–चातक
खंजन उदास हो!
ना ऊ गुलाब–गंध
ना झाड़ी ऊ घनी हो,
ना ऊ गवाह घेरा
ना नागफनी हो
डँस जाय याद नागिन
जे आस–पास हो!

झरोखा इयाद के

स्व० प्रभुनाथ मिश्र

छोटे-छोटे बुनिया / बरिसेला पनिया
धरती पिये रसधार ! बुनिया में छलके पियार !!

निले-नील बदरा / तानेला चदरा
लागल गगन में ओहार ! बदरा में चमके पियार !!

नाचेला मोरवा / गावे झिंगुरवा
रतिया में बाजे सितार ! झुन-झुन में झुनुके पियार !!

पवन चउफेरवा / मारत फुहेरवा
देहिंयाँ प ढारे दुलार ! सन सन सिहिके पियार !!

कुहुके कोइलिया / रे मधुर मधुर बोलिया
पपिहो करेला पुकार ! पिउ-पिउ पिहिके पियार !!

धरती के कँखिया / हरियर पँखिया
सावन क आइल बहार ! खेतवन में झलके पियार !!

[भोजपुरी कवियन में गजल आ गीत विधा में विशेष रूप से चर्चित 'पीयूष', जीवन धर्मी गजल सिरजन के महत्व देलें।]

रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष'

जन्म – 02 मार्च 1942, कुकुढ़ा (इटाढ़ी प्रखंड), बक्सर (बिहार)
शिक्षा– एम. ए. डिप–इन.टीच.
सेवा व्यवसाय– उच्च विद्यालय मेंअध्यापन
प्रकाशन– सुरपंछी, रेत के परछाहीं, आखें की उँगलियाँ (तीनो काव्य–संग्रह)
सम्पर्क– शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बक्सर (बक्सर)

(एक)

दिल प पत्थर चलवला से का फायदा !
आदमी के सतवला से का फायदा?
हउवे पत्थर के उनकर करेजा बुला
हाल दिल के सुनवला से का फायदा !
नेह–अँगना गेंड़इल,बँटाइल हिया
भीत अइसन उठवला से का फायदा !
घर में खुश्बू क तनिको पता ना चलल
फूल अइसन लगवला से का फायदा
आँख तरसेले जेकरा के देखला बिना
ओके दिल में बसवला से का फायदा

(दू)

दिल के दुनियाँ बसा के तनी देखलीं।
सबके आपन बना के तनी देखलीं।
रूप राउर चिन्हाते कहाँ आज बा
मन के ऐना उठा के तनी देख लीं।
मन्दिरो में बराई दिया नेह के
पहिले घर में जरा के तनी देख लीं।
हाथ बहुते मिलवलीं मगर का मिलल
दिल से दिल त मिला के तनी देख लीं।
काँट 'पीयूष' रोपल गइल ह बहुत
फूल अँगना लगा के तनी देखलीं।

●●●

[भोजपुरी के समर्थ आ चर्चित कवि आनन्द संधिदूत मूलतः गीतकार हउवन। इनका गीतन में भोजपुरी शब्द अपना चमक आ अर्थगौरव का साथे अनायास बिनाइल मिली। अनुभूति के गहिराई इनका भाव भंगिमा के प्रामाणिक बनावेले। अपना मौलिक अंदाज का चलते आनन्द संधिदूत भोजपुरी काव्य जगत में विशिष्ट बाड़न।]

आनन्द संधिदूत

जन्म– 11 जनवरी 1951, गहमर, गाजीपुर (उ0प्र0)
शिक्षा– स्नातक
सेवा– अवकाश प्राप्त बैंककर्मी
प्रकाशन– एक कड़ी के (गीत संचयन), अलावा तीन गो स्तरीय साहित्य–संकलन के संपादन
कहनाम– जब न हँसी फूटेले न रोआई त गीत फूटेला। गीत अन्तरात्मा क एगो अइसन ध्वनि ह जवन नीरस से नीरस विषय के एतना सरस सुस्वर आ मधुर अक्षर में परोसेले कि खुद गीतकार निहाल हो जाला, सुनेवाला आ पढ़ेवाला त बाद में निहाल होला। गति मेंअपविस्तार के सम्भावना ना होला। एही बात के महाकवि इलियट लिखले रहलन कि "छोट से छोट केतना छोट कविता लिखल जाव कि ऊ गीत कहाय।" हमार गीत एही छोट के तलाश हऽ।

(एक)

रात, फूल छितरउए
तोहार सपना
हँसि–हँसि मुसुकउए
तोहार सपना।

ओठँघल जानि के सरिरिया के अतमा
मन अभिलाख बन तरई चनरमा
भरि नभ उधिअउए, तोहार सपना। रात0

कहाँ–कहाँ नाहीं बउँड़त रहे अतमा
हाँकि–हाँकि गउए छुअत लागे थथमा
फूल गुलरी के भउए तोहार सपना। रात0

कँह बह निनिया के फुटुए किरिनिया
सुख–दुख जिनगी के कथन–कहानिया
जाने कहाँ बहि गउए तोहार सपना। रात0

(दू)

पिया, अइहऽ त
अन्हरिया में अँजोर लेले अइहऽ
चान–तरई गढ़ैले पोरेपोर लेले अइहऽ!

लेले अइह भर ठोर गावे भर गितिया
ओठवा प' मुसुकी पुतरिया प' मोतिया
हियरा के सुख झकझोर लेले अइहऽ। पिया

घरे–घरे बाँट देहीं बायेन–पेहान से
ढाँपि–तोपि अमृत उदित मुसकान से
जग, घर अस बाँह में बटोर लेले अइहऽ। पिया

●●●

(तीन)

निनियो आइलि सपनो आइल
हँसी– रुदन आइल
हमरा आँगन के ना आइल
ऊहे ना आइलि।

पुतली समझावत के भींजल
पलको कहीं–कहीं
कहाँ छुपाईं उड़ल अर्क अस
कहनी बईं–बई
लजियो आइलि खिसियो आइलि
चैन–चुभन आइल।
हमरा आँगन के ना आइल
ऊहे ना अइलि।

रात–रात भर हरसिंगार
दिन में तारा निकले
दादुर–मोर–पपिहरा के स्वर
साँझ–सुबह पिघले
सावन आइल भादों आइल
सीत–तपन आइल।
हमरा आँगन के ना आइल
ऊहे ना आइलि।

बइठ–बइठ के पलकन पर
हम नजरन से उतरीं
ए जोहान तोहके बतलाईं
का–का नाहीं करीं
जुगत–जगत केतना गिनवा दीं
कवन–कवन आइल।
हमरा आँगन के ना आइल
ऊहे ना आइलि।

●●●

[भोजपुरी कथाकार समालोचक आ बाल साहित्यकार का रूप में चर्चित भगवती प्रसाद द्विवेदी लेखन का प्रति समर्पित रहल बाड़न। कवि, भगवती जी के छन्दयोजना आ गीत के अन्तर्लय के ज्ञान बा। ऊ जीवन से जुड़ल विविध कोना के गहिर पकड़ राखे वाला, अइसन सिद्ध कवियन में जानल जालन, जेकरा भाषा आ ओकरा विनावट के बराबर ख्याल रहेला। ऊ अपना गहिर भावबोध के सफाई आ सलीका से गीतन में परोसेलन।]

भगवती प्रसाद द्विवेदी

जन्म– 01–07–1995,दलछपरा,बलिया (उ0प्र0)
शिक्षा– एम.एस.सी.,विद्यावाचस्पति (मानद)
सेवा– भारत संचार निगम महाप्रबंधक कार्या0 पटना में कार्य
प्रकाशन– ''जौ–जौ आगर'' (काव्य संकलन) दूगो लघुउपन्यास 'दरद के डहर' आ 'साँच के आँच', ठेंगा (कहानी संग्रह), 'थाती' (लघुकथा) हिन्दी में एगो काव्य संग्रह आ तीन गो कहानी संग्रह का अलावा कई संकलन–संचयन के संपादन
वर्तमान– पो0बा 115, पटना– 800001 (बिहार) मो.बा 9430600958
कहनाम– हमरा खातिर गीत राग –बिराग, अनुराग पीर के गहिर–गझिन, संवेदना जगावे का गरज से उकेराइल एगो अइसन जियतार विधा ह, जवना के खासियत होला राग धर्मिता आ जीवनधर्मिता। अनुभूति के सघनता आ आँतर के उदबेग जब बेचैन कऽ देला त हम भाव प्रवण गीत के सिरिजना करे खातिर लचार हो जानी। गीत अगर कविता कऽ दिल होला त ओह दिल के धड़कन होला आदिम राग से लबरेज प्रेम गीत।

(एक)

नेह–छोह
बनल रहे राउर!
आँचर में दूब–धान
का चाहीं आउर!!

आलता
महावर के लाली,
दिनभर लागे फगुआ
रातभर दिवाली,
हरदी में सँगल–सँगल चाउर!

अल्हड़पन
हँसी आ ठिठोली,
देवर के गाभी आ
ननद के चबोली,
गलदोदल लागे ना बाउर!

अचके लागे केहू आइल,
कसमसात पोर–पोर
नेह में नहाइल,
ओढ़न अँकवार के दनाउर!

(दू)

नयनवा में
जब से केहू समाइल।

बंजर ऊसर लागे
हरियर बगइचा
लेवा आ टाट भइल मसनद गलइचा
पनसोखा के झुलुहा
सोझे टँगाइल।

चम्पा चमेली
बेली जुही गमके,
मावस के रतियो में चाननिया दमके
दिने में अँखिया में
सपना फुलाइल।

सरग–नरग पाप–पुन
किछऊ ना सूझे
मन उन्हुका सुमिरन के वृन्दावन बूझे
फेरु तुलसी चउरा प
दियना बराइल।

(तीन) हमार नेहिया
देहिया गदराइल।

महुआ के फूल नियर
सपना कोंचाइल,
सपना में सुगापंखी
रँगवा घोराइल,
मन में पिरितिया
के भाव अँखुआइल।

पवन सनसनाला
त अंग गनगनाला,
मातल बयरिया में
देह अलसाला,
उमड़ेले नदिया
लहर बउराइल।

प्रीत के पखेरु
गगनवा में पँवरे,
ठोर चुमे सुगना
सुगिनिया का जवरे,
नेह के सरोवर में
अमरित घोराइल।

हमार नेहिया।
देहिया गदराइल।

●●●

(चार) घोघो रानी, कतना पानी?
दुनों परानी!

गाल सूखि के भइल छोहाड़ा
होखे दीं जी
आँखिन में छवले बा माड़ा
होखे दीं जी
बाँचल बा अँखियन के पानी
दुनों परानी।
पतझड़ के बसंत हम मानीं
दुनों परानी!

जाँगर रोज ठेठावल जाई
जब ले दम बा
खून पसेना करीं सिंचाई
तब का गम बा
हाड़ तूरिके करब किसानी
दुनों परानी
हरियर उज्जर काटब चानी
दुनों परानी!

एक दोसरा खातिर जीयब
अंतिम दम ले
धोती लुगरी फाटल सीयब
अंतिम दम ले
दुख में सुख के अकथ कहानी
दुनों परानी! ●●●

[कमलेश राय भोजपुरी के नया दौर का कवियन में सर्वाधिक चर्चित गीतकार मानल जालन। उनकर सिरजन कौशल, तलस्पर्शी अभिव्यक्ति आ शब्द संयोजन, उनके दोसरा कवियन से अलगा आ विशिष्ट बनावेला। जीवन जगत का संवेदना से जुड़ल उनका गीतन के लयात्मक छन्दविधान सुनवइया पढ़वइया के बरबस अपना ओर खींचेला।]

कमलेश राय

जन्म– 30 अक्टूबर 1960, मुर्तजीपुर (मुहम्मदाबाद) गाजीपुर
शिक्षा– एम.ए., पी–एच डी0
सेवा– डी0सी0एस0के0 पोस्ट ग्रेजुएट कालेज मऊ में कार्यालय अधीक्षक
प्रकाशन / संपादन– 'तोहरो बिहान दाँव पर' (गीत संग्रह) आ हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका "शब्दिता" के संपादन।
कहनाम– "भीतर के टूटन, टीस अकुलाहट आ छटपटाहट का चलते गीत जनमेला। हमरा गीतन में प्रेम, हुलास क्षोभ आ चिन्ता का साथे जिनिगी के कूल्हि रंग मिली।"

(एक) पह फाटल सुरूज उगल
घाम उतरि आइल
तोहरा बिन भोर कबो भोर ना बुझाइल।

हवा में सबेरे कऽ सुनगुन संग
मिसिरी अस चिरइन कऽ बोली
फूलन पर भौंरन के गुनगुन संग
सतरंगी किरिन कऽ रंगोली
लागे जस पुरइन से पानी बिछलाइल / तोहराबिन

सूझे ना धूप दीप तुलसीदल
अछत ना रोरी ना चन्नन
अबले बा पूजाघर सून परल
ना कतहूँ पूजा ना अरचन
भोरे कऽ सूरूज के अरघ ना दियाइल / तोहराबिन

सुधियन के फूल अस बिछावन पर
तन सोवे बेकल मन जागे
ना जाने आज उहें आंगन घर
काहे दो अनचीन्हल लागे
घरहीं में घर जोहे अँखिया अकुलाइल / तोहराबिन

●●●

(दू) गीत अनासे उठे हिया में
थिरके बिछुवा पाँव में
सगुन कऽ पाती लेके आइल
फागुन हमरे गाँव में।

गवे–गवे गदराइल
मद में मातल महुबाबारी
लागे आज सोहागिन
पहिर सितारन वाली सारी
थम थम जाय पथिक पंछी
जेकरा घुघटा के छाँव में।

कलियन के अधखुलल रूप पर
भौंरा आस लगावे
एकसर विहंसि विहंसि के मन
कुछ अपने से बतियावे
बेसुध हवा चिकोटी काटे
बरबस ठाँव–कुठाँव में।

पिहके जब बेपीर पपीहा
पिया पिया गोहरा के
विहंसे कबो लजाये गोरी
सुधियन रंग रंगाके
लागे सगरी रंग भरल बा
परदेसी के नांव में।

●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

(तीन)

अचके नैन हंसे मन थिरके
फागुन आइल का?
पोरे पोर सगुन अंग फरके
फागुन आइल का?

सोना जड़ल बिहान
दुपहरी हीरा जड़ल लगे
सेनुर गूंथल सांझि
रात चानी में मढ़ल लगे
घर–घर चान अंजोरिया छिरके
फागुन आइल का?

फूल कली कचनार
ताल रंग पुरइन पात हंसे
लेके दरपन हाथ
कहीं केहू बेबात हंसे
कंगना कहीं अनासे खनके
फागुन आइल का?

बइठ मुंड़ेर सगुन पंछी
जाने का उचरि गइल
फिर कुछ पाछिल बात
हिया के अंगने उतरि गइल
सुधियन कऽ अमराई मंहके फागुन आइल का ?

●●●

[भोजपुरी गजल आ गीत विधा के चर्चित रचनाकार। इनका गीतन में रागात्मकता का साथ जीवनधर्मिता संपृक्त हो गइल बा।]

आसिफ रोहतासवी

जन्म– 01 नवम्बर 1960, बिहार के कैमूर जिला (तत्कालीन शाहाबाद) के सकरी गाँव में।
शिक्षा– एम0ए0 (हिंदी), पी–एच0डी0, डी0लिट्।
सेवा– पटना विश्वविद्यालय अन्तर्गत पटना सायंस कॉलेज में हिंदी विभाग के अध्यक्ष।
प्रकाशन– महक माटी के', 'आसमान बाकी बा', 'रेत के सफर', 'हारल त नइखीं' (चारों ग़ज़ल–संग्रह), 'ए जगरोपन भाई' (अतुकान्त कविता), हिंदी में– 'चटखती दीवारें' (कविता–संग्रह), हिंदी ग़ज़ल : शिल्प एवं कला (समीक्षा)।
संपादन– 'परास' (तिमाही), तेनुघाट, झारखंड से।
आत्मकथ्य– सर्वोत्तम काव्य–रूप गीत मानवमन–हिरदा के कोमलतम भाव–अभिव्यक्ति के सार्वकालिक माध्यम बनल रही। हर साँस आ हिरदा के हर धुकधुकी गीत के लय में गुँथात रही। लोर आ मुस्कान दूनों परस्पर 'सम' में गुनगुनात रहिहें स।

(एक)

साँझ सोनहुला सपना बा अब
चानी के ऊ दिन।

अब ना चान हँसे, ना आदित
मुस्काते उतरे
पहिले अस अंगना में कागा
कहाँ सगुन उचरे
कइसे कहीं कि लागत बाटे कइसन तोहरा बिन।

समय उबीछेला सुधियन के
भर–अंजुरी दोना,
आजो हो जाला उदास मन
के कोना–कोना
मउअत बहुत सहज लागत बा, जिनगी बहुत कठिन।

कतना मधुर रहे अँखियन के
गुमसुम बतियावल,
मुट्ठी में फिर कहाँ बन्हाइल
सरकल जे ऊ पल
हेहर मन हिस–फिर बाँचेला बीतल समय गझिन।

(दू) रतिया निहारींले चान
कहवाँ हेराइल बिहान।
मनवा के तलई में
सुधियन के कुइयाँ
सगरो फुलाइल बा
ए भोर गुइयाँ
छछन्नेला छन्न–छन्न परान।
रतिया पहिरलीं
इंजोरिया के साड़ी
तरइन से सउँसे
टँकाइल किनारी
दूबे नहाइल सिवान।
महुआ कोंचाइल बा
आम मोंजराइल
खेत–खरिहान, भर–
बधार गमगमाइल
कुहुकावे कोइलर के तान।
हियरा के बेहुँड़ी में
जतने महाता
लैनू नियन ई त
अउरी गढ़ाता
जतने पिरितिया पुरान।

●●●

(तीन) रहे अतना कठिन जब रीत, बिधना
काहे हियरा में दिहले पिरीत, बिधना !

कवना नछत्तर में
कइले सिरिजना,
जिनगी–भ देखलीं रे
सुखवा के सपना
काहें सुसुकी में अँकुरेला गीत, बिधना !

खेलेलऽ तू लिलरा पऽ
पारि–पारि चिचिरी,
मिली जे ऊ बिछुरी आ कबहूँ ना बिसरी
भले जइतीं बिसरि ऊ अतीत, बिधना !

रितिया पिरितिया के
कइसे निबाहीं,
सरकत–उमिरिया भइल परछाहीं
देले नाहीं रहिते भलु हमके मीत, बिधना !

●●●

नगेन्द्र भट्ट

परती के दूबि लहलहाइल
सुधियन के घटा उमड़ि आइल।

हंस नियर दिन उतरल–नदिया के पानी पर
लहर लहर लहराइल, दिन के अगुवानी पर
जाल डालि बालू पर किरनन के मछुवारा
जिनगी के ताल पर भुलाइल!

पैंजनिया धुन बाजल, खेतन खरिहानन में
गीत सजल फूल नियन जिनगी के आँगन में
लाँघ–लाँघ परबत के देहरी के, सोना अस
धरती पर किरिन उतरि आइल!

टूट गइल सपना पगडंडी के सुनगुन से
पाप–पुन्न बिसरि गइल भौंरन का गुनगुन से
होत भोर कइसन बयार बहल पुरवा कि
जोन्ही के आँचर उधियाइल!

पात–पात काँपि गइल पुरइनि जल थिरके
भौंरन के सुधि आइल कलियन के तन फरके
अनजाने कवना रे दुलहा के हथवा से
चिटुकी भर सेनुर उधियाइल!
परती के दूबि लहलहाइल !!

संपर्क: चौक सिनेमा रोड, बलिया (उ0प्र0)

[अपना समय–सन्दर्भ के चर्चित जनपदीय कवि कन्हैया पाण्डेय मूलतः गँवई चेतना के रागधर्मी कवि हउवन। उनका रचनासंसार में गाँव के भीतरी–बाहरी स्वर का साथ, जीवन–संघर्ष के वैविध्यपूर्ण चित्र मिलेला। वर्णन, विचार आ भाव के सन्तुलन उनका गीतन के विशेषता बा।]

कन्हैया पाण्डेय

जन्म– 1 जनवरी 1953, मैरीटार, बलिया, (उ0प्र0)।
शिक्षा– बी0ए0 एल0टी0।
सेवा– पूर्व माध्यमिक विद्यालय, टण्डवा (बकवा), बलिया।
प्रकाशन– 'हेराइ गइल जिनगी', 'तनिके दूर बिहान बा' (काव्य–संग्रह), 'मिरजई' (कहानी–संग्रह), 'मशाल जरत रही' (नाटक)।
सम्पर्क– 21/298, आवास विकास कालोनी, हरपुर, बलिया, फोन– 07678919658।
कहनाम– समाज के विद्रूपता आ मानवता के क्षरण के देखि के जब मन उद्वेलित होला, त अनासो भीतर से निकलल भाव कविता में रचा जाला।

(एक) धरती लड़ी सजवले बाड़ी, चूनर धानी में
केकरा ई अगवानी में ना !

जबसे सुनले बाड़ी हाला
देंहिया रोज–रोज पियराला
नित उठि धोवे मुंहवाँ, ठंढा–ठंढा पानी में,
केकरा ई अगवानी में ना
दिन में सूरूज तपि–तपि जाले
रतिया दूधे चान नहाले
झुर–झुर लगे पवनवा, कूलर नियर पलानी में
केकरा ई अगवानी में ना।

भोरवा कुहुकति रहे कोइलिया
अजबे सालति रहे उमिरिया
मिसिरी घोरल रहुवे केतना ओकरा बानी में
केकरा ई अगवानी में ना।

अमवा बन्दनवार सजवलस
महुवा रस टप–टप टपकवलस
हियरा तरबर होखल बहुते बूनी–आन्ही में
केकरा ई अगवानी में ना !

●●●

(दू) भेजनी बलमुआ के लिखि–लिखि पतिया
पिया परदेशे गइलें, कइसे काटीं रतिया ?

दिनवा त कटि जाला घरवा–अँगनवा
रतिया खा लउकेला उनकर सपनवा
भितरा बसल बाटे पिया के सुरतिया !

बोलिया कोइलिया के हुकवा उठावे
विरह अगिनिया के खून धधकावे
धउँके करेजा जस लोहरा के भथिया।

माघ के मघेसि चुवे काँपेला बदनिया
रहिते बलमुआ त बिहँसित पलनियाँ
हमहूँ धधाइ उनके बान्हि लेतीं गँतिया !

अब त सहात नइखे उनकर बियोगवा
दस मुँह दस बात करे इहाँ लोगवा
कबले जोगाईं हम संइचल थतिया ?

आइल मधुमसवा रंगाए लागल चुनरी
मन करे बनि जइतीं हमहूँ कबुतरी
धई अंकवरिया जुड़ाइ लेती छतिया !

●●●

(तीन)

अँटक गइल बा मनवाँ
उनका सुधियन का अँगनाई में
कहल न माने जिद में अपना
लागल बा पहुनाई में !

हरियर चुनरी, पीयर अँचरा
झाँके रूप निखारल
तहरा रूप रंग पर सजनी
चनवो रहि–रहि हारल
उतरि चाँदनी रहे हेराइल
तोहरे ओह सुघराई में।

आगम जानि तहार बुझाइल
पुहुप केंवड़िया खोले
गुन–गुन करत भँवरवा जइसे
कनवाँ में रस घोले
सकुचि भइल बा लाल ललाई
बिहँसे लगल गोराई में।

चैन न आवे तोहरा बिन
मन के कुछऊ ना भावे
बहुत दिनन के बिछुड़ल फेरू
मिलले पर सुख पावे
आजु बुझाइल, सोरि नेह के –
केतना बा गहिराई में। ●●●

[परंपरा से मिलल आस्था आ समय–सन्दर्भ में रूखल–पलुहल जिनिगी से मिलल आत्म विश्वास कवि–कथाकार बरमेश्वर सिंह के आत्मानुभूति के सृजनात्मक बवनले बा। गँवई मन, सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति आ बोध से उनका भीतर के कवि सरल सधल आ सबल बन के उभरत बा।]

बरमेश्वर सिंह

जन्म– 24 जनवरी 1949, धनडीहा, भोजपुर, बिहार– 802160
सेवा– अवकाश प्राप्त तकनीकी पर्यवेक्षक, बी.एस.एन.एल.।
प्रकाशन– कथावृक्ष, अमर कथा (कहानी संग्रह) अथ लुकाठी कथा (समकालीन कविता संग्रह)
सम्पर्क– 06182–282013, 09430605856 ।
कहनाम– अपना परिवेश आ समय में जिनिगी जीयत कतने दृश्य, घटना मन के आन्दोलित करेला। भीतर जब उद्वेग उठेला त हमार मन गुनगुनाला। उहे गुनगुनाहट हमार कविता बा।

(एक)

घर आँगन दुअरा मुसुकाइल, एक जमाना पर।
मरुथल बा अजबे हरिआइल, एक जमाना पर।

तवत जेठ में आज अचानक बदलल हवे हवा
हहरल हियरा हूक भुलाइल, पा के उचित दवा
प्रीत–बीज खनहन अँखुआइल, एक जमाना पर !

काठ देहि पर सुरुज सँवरिया, जादू डालि गइल
नीरस नैना नीर नहाइल, रसगर गाल भइल
अंग–अंग आभा अगराइल, एक जमाना पर।

भाव–नदी में उठल हिलोरा, खोजत हवे किनार
नैन–भाव पर प्रेम–पुजारिन, हुलसत भइल सवार
रीतल यौवन–घट पनियाइल, एक जमाना पर।

दिन दुलहा से, साँझ सखी के, चहकत नजर मिलल
किरिन इंगुरिया रूप बनवले हरसिंगार झड़ल
तुलसी–चउरा दीप रखाइल, एक जमाना पर।

रात सुहागिन किहां सेज पर सरगम साज सजल
कोइल कुटनी भूलि चुकल बा, गावल बिरह गजल
बबुआ के बाबू बा आइल, एक जमाना पर।

घर आँगन दुअरा मुसकाइल, एक जमाना पर।
मरुथल बा अजबे हरिआइल, एक जमाना पर।

●●●

(दू) पहिल नजर उनुका पर पड़ले, मन के आसन डोलि गइल।
चाहत के खिड़की तब अचके, हवा बसंती खोलि गइल।

अमराई अगराइल आइल, मातल महुआ मुसुकाइल
चहकि उठल कचनार, हिया में नेह–निमंत्रण अँखुआइल
पुरवाई आँचर सरका के, साँस में खुशबू घोलि गइल।

बुढ़वा बरगद बइठल–बइठल, तिकवत टोह लगावत बा
टनमन टेसू टहकि–टहकि के, टिटकारत हुदकावत बा
मुख से कुछुओ बोल ना फूटल, अँखिये सब कुछ बोलि गइल।

मिलन–पिपासा–भार दबाइल, कोइल गीत कढ़वलसु हो
रितु–पति के भुज–पाश धधाइल, आपन रीत निभवलसु हो
दिशा–सुन्दरी पहुनाई में दसों–दुअरिया खोलि गइल।

शीतल सरस समीर बसंती, पा के रसगर रात भइल
नेह नहाइल गाछ–लता के, प्रेम–पगल सब पात भइल
बड़ उतपाती बा फगुनहटा, अली–कली के तोलि गइल।

पहिल नजर उनुका पर पड़ले, मन के आसन डोलि गइल
चाहत के खिड़की त अचके, हवा बसंती खोलि गइल।

[बहुआयामी रचनाकार, भोजपुरी के कथाकरन के अगिली पाँत में शामिल अरुण मोहन 'भारवि', सृजन का दिसाईं प्रतिबद्ध साहित्यकार हउवन संवेदना आ भाव प्रवणता इनका रचनात्मक–प्रतिभा के ऊर्जा हऽ। रचनाकर्म का प्रति समर्पित 'भारवि' निष्ठावान लेखक हवें।]

(डा0) अरुण मोहन 'भारवि'

जन्म– 26 जून 1950, बक्सर, बिहार
शिक्षा– एम.ए., पी–एच.डी., एल.एल.बी., साहित्यरत्न
सेवा– संस्थापक प्राचार्य एवं प्रोफेसर पी.सी. कालेज, बक्सर
प्रकाशन– –'डहकत पुरवइया', 'परशुराम', करेजा के काँट, राख भउर आग (चारो उपन्यास), मुठ्ठी भर भोर (कहानी संग्रह), जब तोप मुकाबिल हो (रपट)
सम्पर्क– अरुणोदय प्रकाशन, आर्य आवास, बक्सर–बिहार, मो0– 09431525695
कहनाम– व्यक्तिगत अनुभूति आ संवेदना के इजहार खातिर कविता हवे, जवना में सहजे कुछ कहा सकेला।

बोलेला काग आजु मोरा अटारी
खुशी ना समाला सिन्होरा पिटारी

महुआ के मातल बहेले पुरवाई
मुसकी के फूल झरे मोर अंगनाई
ननदी के ताना जस बेधे कसाई
पछुआ के झोंका भरेला सिसकारी।

कोयल के कूक से रतिया अलसाई
मोजर के गंध से अँजोरिया लजाई
रहि–रहि के पुरवाई सिकड़ी बजाई
टूटेला सपना बिरह के अँगारी।

खनक उठे कँगना त गजरा लजाई
कजरा के नदिया में जिया डूब जाई
अँचरा में नेहिया के दुधवा फफाई
बड़ा दुख देले सनेहिया दुधारी।

बोलेला काग आजु मोरा अटारी
खुशी ना समाला सिन्होरा पिटारी

●●●

[विष्णुदेव अपना समय–सन्दर्भ का चुनौतियन का बीच, गाँव में रहि के निरन्तर लिखत–पढ़त रहे वाला लेखक हवें। ऊ अपना संवेदन–ज्ञान आ ज्ञानात्मक भावबोध के अपना लेखन में अइसे उपयोग करेले जइसे सत्य के सन्धान करत होखसु। भोजपुरी का वर्तमान साहित्यिक–लेखन में चर्चित एह कवि कथाकार के आपन विशिष्ट शैली बा।]

विष्णुदेव तिवारी

जन्म– 17 जनवरी 1961, तिवारीपुर, दहिबर, बक्सर (बिहार)
शिक्षा– एम.ए., पी–एच.डी. (शोध सबमिट)
सेवा– भारतीय थल सेना में कुछ वर्ष नौकरी का बाद शिक्षण–कार्य।
प्रकाशन– शीर्ष अउर स्तरीय पत्र–पत्रिकन में दर्जनों कहानी, कविता, शोध–समीक्षा, आलेख/प्रतिनिधि संकलनन में शामिल। भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिकन 'पाती' में उपसंपादक ।
कहनाम– जवना घरी सब साथ छोड़ देला, ओह घरी कविते संगे रह के ई बतावेले कि अकेल होखल सबसे कठिन समय के सुरक्षा–कवच हऽ ।

(एक)

प्रेम
माई के आँख के
हेराइल किरन...प्रेम
बाबूजी के तरहथिन के
श्रम–कन....प्रेम
पत्नी के लिलार के
मद्धिम होत रंग आ..... प्रेम
हवा के ओट से उठत
एगो प्रन
जे सजग कर दे
हर ओस कन के कि
छने में बदल जाव
मन
जीवन। ●●●

(दू)

बढ़लीं जा, पढ़लीं जा
हवा के गुदुरावत
तितलियन के उड़न के
थहलीं जा
बाकिर काहें रहलीं जा अनजान अबले
गँव से फूटल ओह खुशी से
जेकरा के धरती
तब धारन करेले
जब कवनो डीभी
ओकरा कोरा से
ओठ फरकावे शुरू करेले... ।

काहें रहलीं जा अनजान अबले
कि नदी के लक्ष्य सागर होला
आदमी के लक्ष्य घर
जहाँ जिनगी उगेले
जहाँ केहू के चितवन के साथ
चले के होला
अउर करेके होला इंतजार
स्वीकार
केहू के मुस्कुराहट के
कि ऊ खिले
कि आसमान खिले

आसमान खिले
आ ओकरा में
चारू ओर से
बदरी गँस जाँ स फेर
ओह बदरिन में
छोटे–छोटे बून
जादू से टँगा जा स अइसे
कि चुअते मोती बन जाए सीपी

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

अबले काहे रहलीं जा अनजान
कि गीत के सरगम
गीत के संगहीं रचा जाला
प्रीत के निगम
प्रीत के संगहीं सँचा जाला
अब जनाइल हा साँचो के
कि जानल का होला
साँचो के अब जनाइल हा
कि मानल का होला

प्रेम बनावे वाला के
बहुत–बहुत शुक्रिया !

●●●

मिथिलेश गहमरी

(एक)

तूँ कवना रंग के बाड़ऽ तनी बता जइतऽ
बहुत भइल हो तमासा, कि सोझा आ जइतऽ।

खुशी के बाँसुरी होखे, कि दुख के शहनाई
कुछो बजावे के तऽ लूर–गुन सिखा जइतऽ।

मजा बा घाम में केतना पता ई चल जाइत
कबो जे ओस–मतिन फूल पर छिटा जइतऽ।

जरत चिराग, बुतावल कवन कमाल भइल
बुतल चिराग, जराके कबो देखा जइतऽ।

नजर में हमरा लगल आवा–जाही बा सबकर
उदास दिल में गजल बनिके तूँ समा जइतऽ।

समय के खेल ई देखऽ कि बीच सावन में
कहे इनार से गगरी, तनी फफा जइतऽ।

छँहाये जाईं, त भर जाईं तोहरा खुशबू से
तूँ अपना याद के, ऊ गुलमोहर लगा जइतऽ।

(तीन)

कहाँ अन्हरिया के राह निकलल
सुरुज तऽ अपने सियाह निकलल।
जवन किरिन से अँजोर होइत
उहो किरिन अनकसाह निकलल।
भइल शराफत के घर तलाशी
कदम–कदम पर गुनाह निकलल।
नया जमाना के आदमी तऽ
सरप से अधिका बिखाह निकलल।

(दू)

बाटे तोहरे से जिनगी में रौनक–बहार
तूँ जे नइखऽ त माटी ई जिनगी हमार।

आँख में कुछ बा, कुछ आँख के बाटे पर
रंग दुनिया में बिखरल बा तोहरो हजार।

घाम से मिलके बिहँसे लगल गुलमोहर
चान के साथे मुरुझा गइल हरसिंगार।

खुद से कहियो मिलीं त' मिलीं कइसे हम
हर घड़ी ध्यान तोहरे में लागल हमार।

रोवाँ–रोवाँ में मधुमास उतरल रहे
मन के आवाँ में सिरिजत रहे सुधि तोहार।

निरदयी दुख करेजा के काटत बा रोज
धार दरियाव के जइसे काटे किनार।

नेह द', प्यार द', पीर द' लोर द'–
हमके जीये बदे कुछ त' चाहीं अधार।

नदी जे तड़पत रहे पियासल
रिपोट में ऊ अथाह निकलल।
लिहाज–इज्जत, सनेह सनमत
ए दौर में सब तबाह निकलल।
गज़ल ऊ कइसन कि सुनके मिथिलेश
न आह निकलल, न बाह निकलल।

●●●

[भोजपुरी के नया कवियन में विशिष्ट स्थान बनावे वाला 'हीरा' जी घर आंगन से समाज आ देश तक फइलल जीवन के अपना कविता में मौलिकता के साथ उरेहेलन। अपना समय सन्दर्भ में गँवई जीवन के सुभाविक चित्रण करे में कुशल कवि हीरालाल में अपार काव्य सम्भावना बा।]

हीरालाल 'हीरा'

जन्म– 10 दिसम्बर 1957, बुलापुर (सँवरूबांध) जिला–बलिया (उ0प्र0)।
शिक्षा– बी0ए0, बी0एड0।
सेवा– भारतीय स्टेट बैंक, बलिया में वरिष्ठ विशिष्ट सहायक।
प्रकाशन– 'ऊ उजियार ना आइल' (काव्य–संग्रह), 'केने बाड़ी सीता' (खण्ड काव्य)।
सम्पर्क– 67, माधोपुर, नई बस्ती, रामपुर उदयभान, बलिया, पिन–277001

(एक) अचके में कइसन ई
छोह उभरि आइल।
छुट्टा चिरइया के,
गोड़े बन्हाइल।।

अपने नियर देखि दूसर सजीली
ठोरवा से पँखिया खुजावे लजीली,
तनिकी भर साथ मिलल हियरा जुड़इल।।

चाहे कि उड़ीं बाकि उड़ि नहीं पावे,
सँगे सटि बइठे में मन सुख पावे,
बन्हलस सनेहिया, डहरिये भुलाइल।।

चिरई–चिरइया के भासा समुझलस
एक सँग रहीं अभिलासा के बुझलस
गरवा में गर साटि अँखिया मुनाइल।।

(दू) बनजारा मन जइसे कतहूँ अचके ठहर गइल
उनका ओह चितवन के, दिल पर कइसन असर भइल।

परिभाषा ना प्रेम के जनलीं, हम रहनी नादान
रसे–रसे ऊ पीर उठल कि, निकले जइसे प्रान
दवा बिरो कुछ काम न आइल सब बे असर भइल।

मन तड़पे मिलितीं बाकिर फिर उभरे तर्क हजार
दरस–परस का बेचैनी में, दाबे लोक–बिचार
साँप छुछुन्नर के गति, जिनिगी लागे जहर भइल।

पैकड़ बन्हले नाचि रहल बा, मन मयूर आँगन में
भूख–पियास न लागे जइसे, डाढ़ा लेसले तन में
एह पिरीत का चलते, तन से मन दर–बदर भइल।

●●●

[उ0 प्र0 राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से पुरस्कृत काव्य संकलन 'रोवेले फफकि मुसुकान' के कवि 'रसराज' मूलतः रागधर्मी कवि हउवन। जीवन विशेषकर गँवई जीवन के प्रतिबिम्ब उनका गीतन में लोक–स्वर बन के उभरेला।]

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

जन्म– 18 अप्रैल 1967। ग्राम व पत्रालय : मैरीटार, बलिया, उ0प्र0, पिन–277202।
शिक्षा– एम0ए0 (हिंदी, संस्कृत), संगीत प्रभाकर।
सेवा– अध्यापन कार्य, गार्गी शिक्षण संस्थान, आनन्द नगर, बलिया (उ0प्र0)।
प्रकाशन– 'रोवेले फफकि मुसुकान' (काव्य–संग्रह)।
कहनाम– जब सामाजिक विसंगतियन से मन क्षुब्ध हो जाला आ भीतर कवनो राग फूटेला तऽ गीत जनम लेला।

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

(एक) चढ़लि छान्हि पर लतर प्रीति के, पसरल भरि अेरियानी।
हम भइलीं दीवाना सजनी, तूँ भइलू दीवानी।।

कबो भुलाई ना हमरा ऊ, चोरी मधुर मिलन के,
नेह बन्हाइल रहे अनोखा, हमनी के तन–मन के,
होत बिहाने फुसफुसाय सब, चर्चा चलल जुबानी।
हम भइलीं दीवाना..!!

तोहके ना हम बिसरवलीं, ना तूँ हमके बिसरवलू,
अँखियन–अँखियन के जरिये मन के बतिया बतियवलू,
अँगुरी में मुनरी हमरा ई, तोहरे नेह निसानी।
हम भइली दीवाना..!!

हम तहरा दियना के बाती, निसि–दिन बरल करीलें
हर पल सुधि के अँगना तहरा, आ के रहल करीलें,
साँच तऽ ई बा तूँ हमरा में, हम तहरा में बानी।
हम भइली दीवाना..!!

●●●

(दू) जाने के रात भर जगावेला।
मन में रहि–रहि के गुदगुदावेला।।

राग बिन आजु रागिनी कइसन,
बिन चनरमा के, चाँदनी कइसन,
रूप ऊहे जे प्रिय के भावेला।।

का भइल कब कहाँ जनाइल ना,
हम हेरइनी कहाँ, बुझाइल ना,
केहू तनिकी ना कुछु बतावेला।

जब खिलल फूल, पँखुरियो विहसल,
रंग ले–ले के तितिलियो मचलल,
गंध भँवरा के, सुगबुगावेला।

उनका अइला के जइसे भान भइल,
बहल बयार त ई गुमान भइल,
हमके उनकर इयाद आवेला।

●●●

[भोजपुरी में सलीका से 'ग़ज़ल' कहे के अन्दाज आ छन्दानुशासन राखे वाला कवि शशि प्रेमदेव, एह समय के चर्चा करे लायक प्रतिनिधि कवि बाड़न। उनका पास भाषा का साथ काव्य–प्रतिभा आ विवेक दूनों बा।]

शशि प्रेमदेव

जन्म– 1 जून 1965, यारपुर बेदुआ, बलिया सदर, (उ0प्र0), पिन– 277001
शिक्षा– एम0ए0 (अंग्रेजी)।
सेवा– कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज में अंग्रेजी प्रवक्ता।
सम्पर्क– कुँवर सिंह इण्टर कॉलेज, बलिया, उ0प्र0, मोबाइल : 09415830025
बकौल खुद– हमके बुझाला कि कविता हमरा खातिर खुद का अलावा आसपास मौजूद जड़ चेतन से संवाद (इन्टरैक्ट) करे क सबसे सुन्दर, संयमित आ प्रीतिकर तरीका बाटे।

(एक)

तड़पल आ छपिटाइल होई, असहीं राति ओराइल होई !
मन के ठेस लगा के हमरा, ओकरो नीन न आइल होई !

गाड़ी से उतरत खा भलहीं ऊ हँसि के तकलसि बाकिर–
बीच राहि में अचके बिछुड़ल ओकरो बड़ा बुझाइल होई !

खोंसले रहलीं फूल जवन जूड़ा में कबो केहू के हम
सुधि के बेनी में अजुवो ऊ फूल कतों अझुराईल होई !

जइसे हम लाचार परिन्दा मरजादा के पिंजड़ा के.....
ओसहीं साइत् लोक–लाज में ओकरो गोड़ बन्हाइल होई!

असवों चढ़ते पूस करत बा मन चलि के गुदरावे के...
सूघर, गोल मटर के छेमी असवों खूब गोटाइल होई !

बिसरल ना एको छन खातिर ओकर साँवर हँसी 'शशी'
'करिअट्टी' कहि–कहि के छेड़ल ओकरो कहाँ भुलाइल होई!

●●●

(दू)

गइल जवानी, जिनिगी बीतल आवत–जात बनारस में!
बिसरल ना बाकिर अगहन के एगो रात बनारस में!

नदियो रहल पिआसल कबसे, बदरो के मन बहक गइल..
भइल झमा–झम बे–मौसम रस के बरसात बनारस में!

ना तनिको उम्मेद रहल, ना आस रहल इचिको बाकिर–
साँच हो गइल अचके कब के सोचल बात बनारस में!

का पवलीं आ का बिलववलीं–इहे आज ले बुझलीं ना
दइबे जानसि हम जितलीं कि खइलीं मात बनारस में!

मन के सज्जी मइल धोवाइल 'शशी' नेहि के गंगा में
देहिं भइल चिक्कन जइसे पुरइन के पात बनारस में!

: मुक्तक :

'बनल पहेली, एह रिश्ता के थाह लगावल मुश्किल बा!
का बतिआवेले माटी से, सोरि, बतावल मुश्किल बा!
जुग बदलल, दुनिया बदलल) ना बदलल भागि चकोरी के.
चाहल बा आसान चान के, बाकिर पावल मुश्किल बा!'

(तीन)

फेरु कबो जिनिगी के अँढ़उल गतरे–गतर फुलाई का?
फेरु मुन्हारे ओसहीं केहू फूल बटोरे आई का?

बड़की भउजी रोज सरापत रहली केतना ओकरा के
रजमुनिया कऽ तब्बो तनिको हेठ भइल सुघराई का?

बेरि–बेरि खिड़की पर आके सुतला–रात निहारेला
ढीठ चनरमा कहियो माई का हाथे पिटवाई का?

कहि दऽ भेद भरल अँखियन के तनी सम्हारल सीखे ऊ
हम रमता जोगी हमरा के फेरु कतों अझुराई का?

किसिम–किसिम के टूटल सपना, दरद भरल बाटे जहवाँ
मन् के ओह अजायबघर में कवनो खुशी समाई का?

बड़ा करत बाटे मन् ओकरा के एक बेर निहारे के
फेरु कतों छन्–भर खातिर ऊ बिछुड़ल मीत भेंटाई का?

●●●

[पंकज जी भोजपुरी जनपद के प्रतिनिधि गीतकार हउवन। सहजता आ सादगी इनकर वैशिष्ट्य बा]

कपिलमुनि पंकज

जन्म– 15 जुलाई 1946, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर, (उ0प्र0)।
शिक्षा– एम0ए0, बी0 कॉम0, विशारद।
सेवा– वरिष्ठ बैंक अधिकारी पद से अवकाश प्राप्त।
प्रकाशन– 'गंगा क तीरे–तीरे' (भोजपुरी कविता–संग्रह), 'दुर्गा इक्यावनी' (धनाक्षरी छन्द की पुस्तक), 'जलते गीत हथेली पर' (कविता संग्रह–हिंदी)।
सम्पर्क– एस–23/62–डी0ए0–27जी., ढेलवरिया, चौकाघाट, वाराणसी–2, मोबाइल : 09415354255

पिरितिया काहें के बनवलऽ भगवान।
मिलन क सँगही जुदाई क विधान।।
मन अउँजाला कवनो, सूझे ना उपइया।
बन गइलें मोर, असगुन्हिया समइया।।
सरदी लगेले अब लूह के समान।
जनहूं न पवलीं की, प्रीत ह पराई।
भंवरा नियर ई त, होले हरजाई।।
झुठेमूठ कहे लोग प्रीत ह महान।

प्रीत जब टूटेले त, फाटे लगे छतिया।
दिनवा पहाड़ लागे, काटे धावे रतिया।
जिनिगी बुझाले जस पतझड़ बिरान।
जनलीं कबीर के ना, ढाई अखरवा।
कइसे हम छोड़ीं बोलऽ, तोहरो असरवा।
पंकज भुलाइ कइल, सगरो गियान।

●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

भोजपुरी जलसन के हाल विचार पर हावी बाजार आ प्रचार

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

विचारपरकता भोजपुरी के जान रहल बा। वाचिक परिपाटी से एकरा वैचारिक सोच के उठान, गहिराई जा पोढ़ता दीगर बोली–भसन से अलगा हटिके एकर एगो साफ पहिचान बनावे में मददगार साबित भइल रहे। चाहे लोकगीत–लोकभजन– लोकगाथा होखे भा लोककथा, चाहे लोक से जुड़ल अउर कवनो विधा–सभ में दीढ़ विचार आ गहिर संदेसमूलकता देखि–सुनिके लोग सुखद अचरज में परि जात रहे। आदि कवि कबीर के रचनन के भावपरकता, रूढ़ियन–अंधविसवास–पोंगापंथी– कठमुल्लापन के खिलाफ दमदार चोट सउँसे जनमानस के तिलमिला देले रहे। तबे नू एह मुलुक में भासाई सर्वेक्षण करे आइल जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ना खाली भोजपुरी के बल–बेंवत के तारीफ कइले रहलन, बलुक अपना देस लवटला का बादो भोजपुरिया विचार–संस्कृति के ताजिनिगी अपनावल कबो ना भुलइलन।

बाकिर जइसे–जइसे भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में सामिल करेके तगादा जोर पकड़त जा रहल बा, सियासी बल–बेंवत वाला चंद सवारथी तत्व भोजपुरी के छिछालेदर करवावे में कवनो कोर–कसर उठा नइखन राखत आ खुद के सेसर पुरुखा–पुरनिया घोषित करवावे का नीयत दयानत से किसिम–किसिम के जलसा आयोजित करवा रहल बाड़न। अइसन बड़हुँहवा लोग, जेकर भोजपुरी भासा– साहित्य–संस्कृति के इतिहास में कवनो रचनात्मक अवदान नइखे, एह तरह के जलसन के अगुवाई करि रहल बा आ खुदे आपन पीठ ठोंकत अपना के शिखर–पुरुष घोषित करे में इचिकियो लजात–डेरात नइखे।

केहू 'फेस टू फेस' जवन ना कहि सके, ऊ फेसबुक पर बेधड़क अपना बड़बोलापन के इजहार करत बा। केहू इंटरनेट पर नामी–गिरामी रचनाकार के रचना अपना नाँव से डालि देत बा, त केहू अलगा–अलगा चैनलन पर बेशरमी से शेखी बघारत बा। एह कुल्हि करतूतन में खाली आत्म प्रशस्ति के बदनीयत छिपल बा, ना कि भोजपुरी के बढ़न्ती खातिर सही माने में किछु करे के मनसा।

पटना में आयोजित भोजपुरी अकादमी के जलसा के राजनीतिक रंग देके दुबारा कुरसी हासिल करके तत्कालीन अध्यक्ष के पैंतरा भलहीं नाकामयाब हो गइल होखे, बाकिर उहाँ के नजारा देखिके साहित्यकारन– संस्कृतिकार्मियन के माथ लाज से गड़ि गइल रहे। मंच पर राजनीति के रंगबाजन आ नचनियन–गवइयन के बोलबाला रहे आ सउँसे हॉल में साहित्यकारन के हाल पूछेवाला केहू ना रहे। अध्यक्ष जी आपन पीठ ठोंकत बतवले रहनीं कि उहाँ के भोजपुरी खातिर कहवाँ–कहवाँ कवन–कवन तीर मरनीं। संगहीं–संगहीं, एगो गायिका के भोजपुरी अकादमी के 'ब्राण्ड एम्बेसडर' बनावहूँ के ऐलान हो गइल, जवना के लेके खूब थुक्का–फजीहत भइल आ आखिरकार गायिका एह पद से इस्तीफा देके आपन इज्जत बचवली।

एह तथ से सभे वाकिफ बा कि भोजपुरी अकादमी के गठन भोजपुरी भासा–साहित्य के संवर्द्धन खातिर भइल रहे संगीत खातिर सूबा आ केन्द्र के संगीत–नाटक अकादमी आ अउर दोसर संस्था बाड़ी स, बाकिर ई बात पार्टी के एगो सांगठनिक अधिकारी के बनावल गइल बा। उहाँ के नेतृत्व में पहिल कार्यक्रम भिखारी ठाकुर जयन्ती के मोका पर भइल, जवना में सुनिहार साहित्यकार रहलन आ वक्ता मंत्री–नेता लोग। शिक्षा मंत्री जी अपना गहन ज्ञान के परिचय देत विचार व्यक्त कइनीं कि भोजपुरी कमजोर हो रहल बिया आ एह में साहित्य रचाए के चाहीं। जहाँ के ईस्सर अइसन, उहाँ के दलिद्दर कइसन !

भोजपुरी अकादमी त एगो सरकारी संस्था ह। बाकी गैर सरकारी संगठनों के हाल के गतिविधि कम उल्लेखनीय नइखे। एने भोजपुरी साहित्य खातिर गठित सबसे पुरान संस्था अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पचीसवाँ सालाना जलसा रजत जयन्ती दू दिनी अधिवेशन का रूप में सम्पन्न भइल, जवना में उद्घाटन से

लेके मंच पर मौजूद अधिसंख्य अतिथि एगो खास राजनीतिक पार्टी से आ लेखक बिरादरी से अलगा हटिके एगो खास बिरादरी से रहलन। ज्यादातर लेखकन के त नेवता ले ना मिलल रहे आ जे उहाँ पहुँचल रहे, ओह साहित्यकार के उपेक्षा–दयनीयता देखते बनत रहे। भोजपुरी के महान विभूतियन–साहित्य मनीषियन के नाँव पर जवन पुरस्कार बाँटल गइलन स, उन्हनीं में 'अंधा बाँटे रेवड़ी...' वाली लोकोक्ति चरितार्थ भइल। हद त तब भइल, जब 'पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पत्रकारिता पुरस्कार' डॉ0 आसिफ रोहतासवी के दियाइल, त उहाँ के ई कहत पुरस्कार लेबे से इनकार कऽ दिहनीं कि पत्रकारिता में उहाँ से बेसी महत्त्वपूर्ण काम करे वाला वरिष्ठ लोग बाड़न, पहिले ओह लोगन के सम्मानित करे के चाहीं, संगे–संगे उहाँ के इहो कहनीं कि उहाँ के मूलतः कवि हईं आ ओह विधा खातिर सम्मिलित उहाँ के कृति के पुरस्कार लायक ना समुझल गइल। 'आचार्य महेन्द्र शास्त्री स्मृति कविता पुरस्कार' एगो अइसन आदमी के दिहल गइल, जेकर ओह विधा के एकहू रचना रेघरियाये जोग नइखे आ जे ना ओह परम्परा के रचनिहार रहल बा। अधिवेशन में पहिले हरेक साल साहित्य के कवनो विधा पर मूल्यांकन चरचा के सत्र होत रहे जवन सिनेमा आ बाजारवाद का बीचे गुम हो गइल रहे। गौरतलब बात ई बा कि पुरस्कार–निरनायकन में हमरो नाँव छपल बा। बहुत पहिले हमरा के अनौपचारिक ढंग से बतावल गइल रहे कि निरनायक–समिति में हमरो रहे के बा, बाकिर एह बाबत ना कवनो चिट्ठी मिलल, ना ऊ किताबे दिहल गइली स, जवनन का बारे में निरनय करे के रहे। अइसने बेवहार भइल प्रख्यात नवगीतकार सत्यनारायण जी का साथे। उहाँ के कवि सम्मेलन के अध्यक्षता के दायित्व दिहल गइल रहे। आयोजक लोग इहो कहले रहे कि उहाँ के उद्घाटनों समारोह में रहे के बा आ ओहू दिने उहाँ किहाँ गाड़ी जाई। उहाँ के इंतजार करत रहि गइनीं, बाकिर गाड़ी ना पहुँचल। दोसरा दिने कवि सम्मेलन शुरू होखे से पहिले फेर से सूचना दियाइल कि गाड़ी भेजल जा रहल बिया, बाकिर उहाँ के आपन एतराज जतावत उहाँ जाए से मना कऽ दिहनीं।

जब साहित्य आ साहित्यकारन खातिर गठित साहित्यिक संगठन क्षुद्र राजनीतिक लोभ–लाभ खातिर राजनेतान के चरन–वंदना करिहन स आ साहित्य खातिर जिए–मूवे वाला साहित्यसेवियन के उपेक्षित–अपमानित कऽके कुकुरमुत्ता मतिन उगेवाला लोगन के सम्मानित करिहन स, त साहित्यिक हलका में मठाधीशी आ वैचारिक शून्यता के पइसार होइबे करी। मदारी के करतब पर ताली बजावे वाला मजमा आ बाजारे नू हावी रही।

'महुआ', 'अंजन' नियर चैनल भोजपुरी भासा आ साहित्य का नाँव पर जवन किछु परोसत बाड़न स, उन्हनीं में कहवाँ लउकत बा सांस्कृतिक समाजिक आ वैचारिक सोच? केकर–केकर लीहीं नाँव, कमरी ओढ़ले सउँसे गाँव। आखिर कब ले भोजपुरी के नाँव पर होखे वाला जलसन में खलिहा नाच गाना के बोलबाला रही ? कब ले साहित्यिक समारोहन में नाच, छुद्र गायकी आ लँगटई के नजारा लउकत रही ? भला अब कब नजर आई भोजपुरी के दम–खम, भासाई जीवंतता, साहित्यिक पोढ़ता आ विचारपरकता? चेतीं सभे, जलसन के सियासी रंग आ बाजार का जगहा अपना भाषा के विचार से लैस करीं। हम कतई निरास नइखीं। कहल गइल बा :

'जो गम हद से जियादा हो, खुशी नजदीक होती है
चमकते हैं सितारे, रात जब तारीक होती है।'

●●●

विशेष अनुरोध / निहोरा–

अपना मातृभाषा के स्तरीय, कला संस्कृति आ भाषा–साहित्य के संरक्षा आ विकास खातिर, भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका ''पाती'' के सालाना सहयोग राशि भेजि के नियमित ग्राहक/सहयोगी बनीं। सालाना सहयोग, डाक व्यय सहित रु0 180/ एकल भा सामूहिक रूप से नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नम्बर का साथ, मनीआडर भा ''ड्राफ्ट'' डा0 अशोक द्विवेदी, संपादक ''पाती'', बलिया के नाम से भेजीं। जवना भाई लोग के पास डाक से पत्रिका पहुँच रहलि बा, ओहू लोग से आगा सहयोग के उमेद पत्रिका परिवार करत बा।

रचनाकार लोग आपन मौलिक अप्रकाशित रचना टाइप कराके रजिस्टर्ड डाक से भेंजी। जवना में पहुँचे के गारण्टी रहे।

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

[उल्लास, उमंग, श्रृंगार आ प्रेम के कवि 'भावुक' अपना भोजपुरी गजलन खातिर जानल जालन। लय, धुन आ गेयता पर उनकर विशेष जोर बा। खुलल ऐन्द्रिक–राग उनका कविता में छलकत मिलेला।]

मनोज 'भावुक'

जन्म– 02 जनवरी 1976, कौसड़, सीवान (बिहार)
सेवा– प्रोडक्शन इंजीनियर का रूप में सेवा का बाद टेलिविजन चैनलन में।
प्रकाशन– 'तस्वीर जिन्दगी के' (गजल संग्रह), 'चलनी में पाती' (काल संग्रह), रंगकर्म, नाटक, फिल्म आदि में विशेष रुझान।

(एक)

पिरितिया लगा के भुला त ना जइबऽ
हिया में समा के परा त ना जइबऽ

लगवलऽ ह तूँही मुहब्बत क लहरा
पढ़वलऽ ह तूँही इ प्रेम–ककहरा
जुदाई के माहुर चटा त ना जइब ऽ

सजल ख्वाब बाटे जे हियरा में हमरा
खिलल फूल बाटे जे अँखिया में हमरा
कहीं धूर में तूँ मिला त ना जइब ऽ

ए दुनिया के देखत ई जियरा डेराइल
तबो बाटे असरा के दियना बराइल
नजर में चढ़ा के गिरा त ना जइब ऽ !

●●●

(दू)

नेह तहरा से लागल अंजोर हो गइल
साँच मानऽ जिनिगिया में भोर हो गइल!

हम त आ गइनी सगरी डगर छोड़के
अपना सँइयाँ के बँहियाँ में घर छोड़के
हाय मनवा हमार चितचोर हो गइल।
लाज लागेला अमियो सिहर जाइले
साँच बाटे कि तहरा प' मर जाईले।
तोहसे अलगा एको पल न रह पाईले
केहू तहरा के देखो ना सह पाईले
पीर हियरा में उठत हिलोर हो गइल।
प्रान से बढ़ के तहरा के चाहीले हम
बस बिधना से तहरे के मांगीले हम
तू तिलंगी त बन्दा इ डोर हो गइल।

●●●

लोकराग

बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'

रोवाँ–रोवाँ कलपता, बरिसेली अँखियाऽ
अइले ना पिया घरे, एहो मोरी सखिया।

दाहा अस डोले मोर, टुटल मड़इया,
कहाँ रहीं अपने आ काहाँ बान्ही गइलया,
नाचतावे मन जइसे, नाचेले चरखिया।

लहरेले सीति कहाँ लरिका सुताईं
एकही बा लेवा, इ ओढ़ाईं कि बिछाईं
जड़वा बिन्हेला जइसे, बीन्हें मधुमखिया।

दिनवा त कटि जालाऽ, तापि–तापि घमवाँ
फेनु सँवराई जाला रतिया में चमवाँ
जिनगी जोगावतिया कउड़ा के रखिया।

सतुवे सम्पति बूझीं, नून के मलाई,
लुगरी पेवनवाँ के, बुझीले कढ़ाई
डोरवा जिउतिया हऽ हार नवलखिया।

अइले ना पिया घरे अबहीं ले सखिया...।

●●●

[भोजपुरी भाषा–साहित्य के रचनात्मक आन्दोलन से निरन्तर जुड़ल ब्रजभूषण मिश्र कवि आलोचक– संपादक कूल्हि हवें। भोजपुरी लेखन का दिसाईं उनकर निष्ठा आ जीवनधर्मी सोच सराहे जोग बा। भोजपुरी–हिन्दी कोश, आ विश्वविद्यालय पाठ्य पुस्तकन के संपादन उनका अध्यवसायी वृत्ति के साखी बा।]

ब्रजभूषण मिश्र

जन्म– 22 दिसम्बर 1954, धर्मपुर, मुजफ्फरपुर (बिहार)
शिक्षा– एम.ए, पी–एच.डी.
सेवा– थर्मल–पावर बरौनी मेंनियन्त्रक
प्रकाशन– 'दू–रंग' (काव्य संग्रह) 'अचके कहा गइल' (गजल संग्रह) 'महावीर जी सदा सहाय' (गाथा–काव्य) कसउटी पर भोजपुरी कविता (आलोचना)
संपर्क– डी– 75, बी.टी.पी.एस, बरौनी (बिहार) 851116
कहनाम– "भोजपुरिया जनजीवन गीते में जियेला। गरभ से जनम का बाद मुवला तक भोजपुरी मनई गीत गावल, गुनगुनाइल आ सुनल करेला। संस्कार का साथ हर सुख–दुख के अभिव्यक्ति गीते बा। प्रेम आ गीत दूनों से ना त बाँचल जा सके, न भागल जा सके।

(एक) भइल जब मन से मन के प्रीत
गीत मन गावे लागल
छिड़ल भीतर ऊ नव–संगीत
गीत मन भावे लागल।

सुखाइल हृदय तनी सरिसल
नेह के बूनी बरिसल
हवा में घोरल जइसे सीत
हिया हरसावे लागल !

मिलल जब प्रेम–दीठि के छाँव
थिराइल मनवाँ चंचल
भेंटाइल जबसे मन के मीत
धजा फहरावे लागल !

न लागल पता कुछ, उनका संग
समय कुछ अइसे बीतल
खुसी से हारल, लागे जीत
नया धुन आवे लागल !

छिड़ल भीतर ऊ नवसंगीत
गीत मन भावे लागल !

(दू)

तूँ त भोरहीं सपनवाँ में आइ गइलू !
मोर सुतल सनेहिया जगाइ गइलू!!

आके पुछल कुसल–क्षेम
बतियो कइलू सपरेम
धरि हथवा में हथवा दबाइ गइलू !

तोहर बाटे अइसन रूप
जइसे फागुन के हो धूप
खिलल फुलवा क गंध बिखराइ गइलू !

भेंट होई कब छछात
करबू मीठी–मीठी बात
तूँ त मनवाँ हमार छछनाइ गइलू !

मोर सुतल सनेहिया जगाइ गइलू
तूँ त भोरहीं सपनवाँ में आइ गइलू !

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

झरोखा इयाद के

स्व० मोती बी० ए०

रूप एगो क्षणिक त अमर एगो हऽ
रूप रूपो में होखेला जानीं कि ना
प्यार सदईं से रहि आइल एके नियर
प्यार कबहूँ न मूवेला जानीं कि ना !

रूप त एगो आकार हउवे
प्यार के तत्त्त जेम्मे लुकाइल
जोड़ काहें ना ई दूनों खाला
हमरा अबहिन ले ना ई बुझाइल!

हम इ कबिता बनाईलें काहें
तोहके आँसू पियाईले काहें
जेठ के दुपहरिया जो तवँके
तहके छाँटे बोलाइले काहें

रूप के मोहनी डारि द तूँ
प्यार के बाँसुरी हम बजाईं
बनि के बेइलि की लेखा तूँ पसरऽ
तोहरी छाँहे में आके लुकाईं !

तोहके आँखी क पुतरी बनवलीं
तोहरे नाँवे के धूनी जगवलीं
भागि तवनो प जब नाहीं जागल
अपनी चामे के ढोलक छववलीं !

हमसे होई न ई बतफरोसी
जीउ जाई, न जाई बेहोसी
प्यार के अपनी हम ना रोवाइब
केहू समुझल करो हमके दोसी !

खूबसूरत कहाये के बा तऽ
प्यार के अपना मन में बसाईं
जे ना रउरा के मन में बसावे
ओकरी लग्गे भुला के ना जाईं !

रूप देखेलऽ त लुभा जालऽ
बात करते करत धरा जालऽ
तूँ अपनी रूप के बिगाड़ेलऽ
आन का रूप पर बिका जालऽ !

इ कइसन ठाट बनवले बाड़ऽ हे मोती
कवन रोजिगार उठवले बाड़ऽ हे मोती
बिद्ध करवा के आपन देहिं उहो हँस हँसके
उनके अँगे, जे लगवले बाड़ऽ हे मोती ।

स्व० हरिवंश पाठक 'गुमनाम'

सबद जोगाइ जोरि मनवा क थतिया
पतिया में भेजेला उरेहि के पिरितिया !

नेह रँग बोरि–बोरि आखर रचावे
लिखि–लिखि पतिया क पोथिया बनावे
हियरा अनेस मोंहे भेजेला सनेस आकि
पोर–पोर पीर परदेसिया पठावे
केसे कस कहीं अस अपना क बतिया
पतिया में भेजेला उरेहि के पिरितिया !

बिधना क दोस लिखे करम के गारी
हमरा के बेरि बेरि लिखे अँकवारी
जिनिगी सहेजि कस उमिर अँगेजी
लेसेला परनवाँ क बीच लुतुकारी
भर आँखि सपना, कसक भरि छतिया ।
पतिया में भेजेला उरेहि के पिरितिया ।

अँचरा के कोरवा क लोरवा सँघतिया
जिनिगी अन्हरिया, अँजोरिया सुरतिया
मनवाँ अकसवा इ छतिया धरतिया
नेहियाँ के रूख फरि लदरे दरदिया
मोहियाँ बिराति बड़ी छोहिया बिपतिया
पतिया में भेजेला उरेहि के पिरितिया !

तनवाँ सउँपि दीं कि मनवाँ सउँपि दीं
मतिया, पिरितिया परनवा सउँपि दीं
गुनवाँ सउँपि दीं गियनवाँ सउँपि दीं
पियवा के, कूल्हि अरमनवाँ सउँपि दीं
करम सउँपि दीं जिनिगिया क पतिया
पतिया में भेजेला उरेहि के पिरितिया !

स्व० कैलाश गौतम

जपे लगलैं ऊधो कन्हाई कन्हाई
कन्हइया क लीला त लीलै हौ भाई
न कहले कहाइल न गवले गवाई
न कब्बौं ओरायल न कब्बौं औराई
कतौं नाहीं एतनी मिठाई भरल हौ
मिठइयो में जइसे मलाई भरल हौ
लड़िकपन भरल हौ ढिठाई भरल हौ
हँसी के कटोरिया में लाई भरल हौ
कन्हइया के गोपी बोलावें पटावैं
मिलावैं रिझावैं चिढ़ावैं बिरावैं
अ लैनू क लालच दे गइया दुहावैं
कबो मन में आवे गुजरिया बनावैं
गुजरिया बना के दुपट्टा ओढ़ावैं
कजरवा लगावें टिकलियो सटावैं
घुँघट काढ़ि के आँख मारे सिखावैं
बड़ा भाग ओकर जे इन्हैं नचाई
जे इन्हैं नचाई उहो नाच जाई !
कन्हइया क लीला त लीलै हो भाई !!
इ गोकुल में रहि के अजब खेल खेलैं
एहर फोरैं गगरी त ओहर ढकलैं
एहर काटें चुटकी ओहर कान फूँकैं
इ मुर्दो में हँसि के नई जान फूँकैं
इ सट सट के गोपिन के बुद्धू बनावैं
पहाड़ा पढ़ावैं अ रास्ता देखावैं
न ई बाज आवें न ऊ बाज आवैं
उ बँसुरी चोरावें इ चुनरी चोरावैं
एहर क ओहर बात पट से लगावैं
बिहाने-बिहाने इ झगरा करावैं
खुदे बीच में पड़िके झगरा छोड़ावैं
एहू के मनावैं ओहू के मनावैं
न टूटै इ नाता न टूटे मिताई
बड़ा सुख मिली भागवत जे नहाई।
कन्हइया क लीला त लीलै हौ भाई!!
घुसें जौने घर में बखेड़ा मचा दें
कहीं क कहीं चीझ धइ दें छुपा दें
दही खात लैनू गिरावत क निकलैं
आ दूधे क मटकी नचावत क निकलैं
ओहर साँप हउवे न जइहऽ गुवालिन
एही रस्ते रस्ते तुँ अइहऽ गुवालिन
कन्हइया क चक्कर न जानैं बिचारी
जवन ऊ कहें तवन मानै बिचारी
कन्हइया कन्हया पुकारल करैलिन
कन्हइया क रस्ता निहारल करैलिन
कन्हइया न लउकें त गइयन से पूछैं
चिरइयन-से पूछैं पतइयन से पूछैं
कन्हइया क हमरे पता जे बताई
जमाने से कुट्टी ओही से मिताई !
कन्हइया क लीला त लीलै हौ भाई !!
न गेरुआ रँगवलन न धूनी रमवलन
इहे असली भक्ती क माने बतवलन
गोबर्धन उठवलन आ पानी बचवलन
उ जमुना थहा के करिश्मा देखवलन
महारास बन में उ अइसन रचवलन
कि बप्पा रे बप्पा सभे के नचवलन
कहीं हँस के केहु क करेजा जुड़वलन
कहीं रोके केहु क करेजा दुखवलन
कुरुक्षेत्र में सबके गीता सुनवलन
उ कायर के जोधा बना के लड़वलन
खुदे सारथी बन के रन में जितवलन
उ लाखो करोड़न के मुक्ती दियवलन
कबो ना बरवलन खटाई मिठाई
उँचाई निचाई छोटाई बड़ाई !
कन्हैया क लीला त लीलै हौ भाई !!
बहुत मीत होइहें पर अइसन न होइहैं
उ हमरे कन्हइया के जइसन न होइहैं
एही रूप पर भइलन परवान केतनी
अ हिन्दू इसाई मुसलमान केतनी
केहू देखऽ बेसुध केहू देख पागल
इन्हैं देखि मीरा क बैराग जागल
आ रसखान राधा मनावत क देखलैं
दूनों गोड़ मीजत दबावत के देखलैं
इन्हैं सूरदसऊ जनमते क पवलैं
मिलल भाव मन प्रान आँखी बसवलैं
इहै ग्राह मरलन आ गजराज रखलन
इहै द्रौपदी क गइल लाज रखलन
इहै दिहलन ऊधो के अइसन दवाई
जपै लगलन ऊहो कन्हाई-कन्हाई ।
कन्हइया क लीला त लीलै हौ भाई !!

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

स्व० शम्भूनाथ उपाध्याय

आँखि में आइ अचानक तूँ, मन मन्दिर के देवता होइ गइलऽ।
पास रहऽ चाहे दूर रहऽ, कबहूँ हमसे अलगा नाहिं भइल ।
का हवे नीमन, बाउर का इ बुझात न बा मति में, कुछ कइलऽ।
चाहीं तोंहें जेतने बिसरावल, प्रान में तूँ ओसे ढेर समइलऽ।

बेचहले कहले तोहरा अपना से कबो अलगा नाहिं कइलीं ।
लोक-लिहाज के मारि के लात, सुनऽ बस काज के ताक पर धइलीं।
डाँट सुनीं फटकार दुलारे में बाकिर बाज तबो नाइं अइलीं
बैरी बा लोक, ओने तुहऊँ; हम ना घर के नाहिं घाट क भइलीं ।

खीसि बरे छन में दुसरे छन, ना इ बुझाला कहाँ चलि जाले ।
भेंट न होइत सोचीले बाकिर देखे बिना अतमा छपिटाले ।
प्रेम पलेला दुनों ओरिया, बतिया इ सरासर झुठ जनाले
लाख उपाइ करीले सखा, सुधिया हमसे न भुलवले भुलाले !

फूल फुलाइल रंग-बिरंग क, गंध से बासलि बा फुलवारी
ऊड़ति आवे इहाँ तितली सखिया संग पेन्हि छपावल सारी ।
बेनु बजावत बा भंवरा, संगे गीति सुनावेले कोइलि प्यारी
रंग में भंग करे चलि आइल ओही घरी डलिया ले पुजारी ।

तीसी चना लेतरी मसुरी, मटरा खेतवा में बजावत बाजा ।
रहरि नाचेले ता थइया सरमाले निहारत खा रितु राजा ।
सोना फुलाइलि बे सरसों गदराइल मौसम, तूँ पिय आजा
पी-पी पुकार पपीहा करे, चलि आवऽन आइ के अंक समा जा।

लघुकथा

मूड़ी डोलावन

❑ **मुश्ताक मंजर**

जेठ के गर्मी में पांड़े जी अपना मेहरारू अउरी पांच बरिस के बुचिया के लेके सड़की के किनारे खड़ा रहलन। एगो अटैची आ एगो बेग हाथे रहे । बस से उतरला के बाद ऊ रेक्सा खोजत रहलन। अइसन बात ना रहे की रेक्सा आवत जात ना रहे। लेकिन जवने रेक्सावाला से पूछस 'खाली' बाड़? मूड़ी हिला के आगे बढ़ जाव । आधा घण्टा हो गइल बुचिया माई से पूछे 'घरे कब चलल जाई माई? गर्मी से परेशान माई का जवाब देस? कहली 'देखत नइखू, कवनो रेक्सावाला रूकते नइखसन!

बुचिया कहलस, 'ए बाबू जी बड़ी जोर से पियास लागल बा। तनी पानी पिया दीं।' पांड़े जी गर्मी से परेशान रहलन। अभी ऊ पानी के जोगाड़ करतन एही बीच पँड़ाइन कहली, ' पनिया हमरो के ले ले अइहऽ । पांड़े जी चारो ओरि नजर दउड़वलन । थोडी दूर पर एगो सरकारी हैंण्डपाइप लउकल। जब लगे गइलन आ चलवलन त ओमे से पनिये ना निकलल। थाकहार के दुसरी ओर गइलन त एगो सरकारी नल एगो आदमी के दुआरि पर लउकल। लगे गइलन त टोंटी में ताला लागल रहे। एकाध बून पानी टपकला से लागत रहे जे पानी आवता । सोचे लगलन कि कइसन जमाना आ गइल बा। पहिले के पुरनिया लोग पानी खाातिर पोखरा, इनार आ पियाऊ बनवा देत रहे। पानी पियावल पुन्न के काम

ह। मवेशी खातिर हउदा बनवा के पानी भरवा देत रहे लोग। लेकिन अब त अदमियो खातिर पानी नइखे। पानी पर पहरा आ ताला लागल बा।

बगले में चाय समोसा के दोकान में सरकारी नल से पानी गिरत रहे। एगो आठ बरिस के लइका जूठ प्लेट गिलास धोवत रहे। पांड़े जी अन्दर जाके नल के नीचे जइसहीं बोतल लगावे चललन। दुकानदार डाँट के बोलल, पानी फोकट में आवत बा का ? एइजा से पानी लेबे खातिर कुछ खाए के सामान लेवे के पड़ी। पांड़े जी बगली में हाथ डाल के दस रूपया के नोट दोकानदार के दिहलन ऊ छोटी छोटी दूगो समोसा दोना में दे देलस । पांड़े जी कहलन हेत्ती-हेत्ती समोसा के पाँच रूपया ?' दुकानदार बोलल, 'लेबऽ त लऽ नाहीं त जा!' मजबूरी में ऊ समोसा आ बोतल के पानी लेके बाहर अइलन पानी पियावते रहलन कि खूब मोट तगड़ा एगो नेता टाइप आदमी सड़की पर जात एगो रेक्सा के आवाज देलस। रेक्सा वाला मूड़ी डोला के आगे बढ़े लागल। तबले नेताजी लपक के रेक्सा के पिछला हिस्सा ध लिहलन। रेक्सा वाला के भर भेट गाली देला के बाद, ओपर बइठ गइलन ।पांड़ेजी के बुझाइल कि ईहे उपाइ ठीक बा। ऊ बुचिया अऊरी ओकरा माई के समोसा खिया के पानी पियलन तबले एगो खाली रेक्सा लउकल। उ रोके के कहलन त मूड़ी डोला के आगे बढ़े लागल। पांड़े जी नेताजी वाला फारमूला अपनवलन अउरी पीछे से रेक्सा पकड़ के रोकलन आ कूदि के बइठत बुचिया आ ओकरा माई के बोला लिहलन, 'सरवा मूड़ी डोलाइ के,इ पता ना कवन फयदा पइहन स, हमहूँ त पइसा देब बाकि ना...।' ज्यादा गारी फक्कड़ ना कइलन काहें कि साथे पलिवार रहे।

लघुकथा

पियक्कड़

❑ **राजगुप्त**

हम तीन चार इयारन के साथे एगो बइठक में शामिल होखे जात रहलीं। परिचिताह पारस बीच सड़क में भेंटाइ गइले। सोझा पड़ते फटाक से बोलले। 'का समाचार बा ! बड़ी ढेर दिन बाद भेंट भइल बा।' " समाचार ठीके बा। आपन कहऽ ।" हम कहुवीं। " सब ठीके बा। बाकिर रउरा से एगो बात कहल चाहत रहलीं हँ राजबाबू। खिसियाइब ना नू।" हम खोंखि खँखारि के कहलीं " ना भाई ना । दोस्त इयार में खीसि पीति का ?" "काल्हू राति खाँ साते बजे कहवाँ जात रहुवी?" जाड़ा पाला में आगि से इयारी रहेला । कोइला कीने जात रहुवीं ?"

" पियले रहुवीं का? डगमगात रहुवीं ।" पारस के बात सुनि कटले खून ना ! संत आदमी के बीच बजारि में अइसन बेइज्जती। काठ मारि दिहुवे। बहत्तर वरिस के कमाई छन भर में माटी में मिल गउवे बुताये के बेरा दीया के बाती अवरू भभकि गउवे। इयारन के कहुवीं 'एगो बहुत जरूरी काम इयाद परि गइल। थोड़ी देर खातिर कचहरी चलेके बा। लवटि के बइठक में भाग लीहल जाई ।"

एतना जरूरी कवन काम मन परि गइल ?" साथे चलत महेश सवचले। हम कहलीं 'कचहरिये में चलि बताइब।' कचहरी चहूँपि के अपना वकील साहेब से कहलीं। वकालत नामा पर दस्तखत हमरा से करा कीं। गवाहीं में इयारन के साथे लेके आइल बानी। हमार दूगो मोकदिमा हर हाल में एही बेरा दाखिल क दीं । काल्हु के तारिख में कइसहूँ दू जाना के नोटिस चलि जाये कि चाहीं'

चिहाइल वकील साहब हमार मुँहे ताके लगुवें। हम सदमा में आपन दुख उनका से कहुवीं। मान हानी के पहिला नोटिस पारस के भेजीं जे बीच बजारि में हमरा के इयारन के सोझा पियक्कड़ बनवले ह। बीच सड़क पर हमार इज्जत उतरले ह। दोरूर नोटिस नगर पालिका के चेयरमैन के भेजीं। जवन उँच खाल गचकी वाला अइसन सड़क के दशा बना देले बाड़े जेह पर सुबहित चले लायक नइखे। लचकि, मचकि, भचकि के चलला पर लोग शरीफो के पियक्कड बुझऽता।

सम्पर्क — राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया

●●●

कसौटी/समीक्षा–

एगो सॉनेट संग्रह के कुछ कविता आ कुछ अउर कविता का बहाने 'काव्य सत्य' के खोज

'आपन गाँव भेंटाते नइखे' : **कृष्णानन्द कृष्ण :** पुनः प्रकाशनः संस्करण– पहिला : जनवरी– 2012 : मूल्य नब्बे रूपये मात्र

भोजपुरी भाषा के ग्रहणशील रचनात्मकता हालांकि परंपरागत काव्य 'सिस्टम' के अनखिया के विदेशी सॉनेट के कोठा–अटारी त ना चढ़वलस, बाकिर गड़हा में धसोरबो ना कइलस। मोती बी.ए. आ अशोक द्विवेदी जइसन सर्जक रचनाकार सॉनेट के भोजपुरी आब में भरे के पुरहर जतन कइले। कृष्णानन्द कृष्ण के 51+1 सॉनेट के एही जतन के रूप में देखे के चाहीं।

चउदह पंक्तियन के एगो खास 'राइम स्कीम' में बन्हाइल कविता सॉनेट ह, जेकर शुरुआत इटालियन कवि पेट्रार्क से भइल रहे। इंगलैन्ड के शेक्सपीयर, स्पेंसर, मिल्टन आ रोमैन्टिसिज्म के प्रस्तोता वर्ड्सबर्थ तक बढ़िया सानेट लिखले। कुछ लोगन सॉनेट के रूपों में मौलिक बदलाव कइल। कृष्णानन्द के सॉनेट प्रचलित छन्द में बा। उनका अनुसार– 'हमरा अभिव्यक्ति के मुख्य माध्यम कहानी रहल बा, आ आजो हम अपना विचारन के अभिव्यक्ति ओही में ठीक से कर पाईला।" हालाँकि एह सँकार से कृष्णानन्द के सॉनेट के सीमा के पता चल जाता, बावजूद एह क्षेत्र में उनकर आइल एकदम से अनगँइया के बरात बनला अस नइखे जनात। जरूर, संग्रह के बेसी सॉनेट अभिधेय रचनात्मकता से ऊपर नइखे उठ पावत आ कविता के किताब में गद्य के मजा देत बा। दरअसल कविता रूपी शरीर के रक्त 'बिंब' हउआ प्राण 'विचार'। प्राण महत्वपूर्ण होखलो पर तब तक शून्य रही, जबतक ओकरा सँगे काया आ रक्त के समुचित संयोजन ना होखे। कविता में विचार फूल के सुगंध अस लयात्मक लहरदारी आवे के चाहीं – तुलसीदास कहले बाड़न कि–

जौं बरसइ बर बारि विचारू। होइ कवित मुकुतामनी चारू।।

जहाँ विचार सहज स्वाभाविक रूप से आइल बा, कृष्णानन्द के कविता जिनगी से स्वतः संज्ञान लेत जनात बा :

लय जिनिगी से भाग, कहँवाँ अब पकड़ता
छितराइल सुर सातो, गीत गवाते नइखे
भीड़–भाड़ में आपन गाँव भेंटाते नइखे
झूमत रहे फसल जहँवा अब कास फुलाता। – पृ0 17

'आपन गाँव भेंटाते नइखे' में मुख्य रूप से वैयक्तिक आ सामाजिक क्षरण बा। क्षरण दुनिया भर जारी बा। लूट–खसोट, बेहयायी–हिंसा, अपहरण आ अपसंस्कृति के ज्वार उफान पर बा। सद्गुण अलचार बा– अवाक्। प्रकृति तक, लिप्सा के जहर–कहर से नइखे बाँच सकल। तब सहृदय कवि के अंतरात्मा दृश्य बिंबन के सहारे प्रकृति के मानव से जोड़े के जतन करत लागत बा।

तीसी–मटर फुलाइल, सुन्नर शोभे अँचरा
चकमक–चकमक धरती के अंगना में जइसे
खाड़ सीवाना पर पीपर गावत बा पचरा
लहरा मार रहल गेहूँ–जौ देखीं कइसे ! पृ0–30

'वड्सबर्थ' के पूर्ववर्ती अँग्रेज कवि विलियम कूपर जिनका कविता में स्वस्थ ग्रामीण जीवन के स्वस्थ प्रशंसा मिलेला, लिखले रहले– ***God made the country and man made the town***. हिन्दी वाला पंत कहले– भारत माता ग्राम–वासिनी। आयरिश कवि यीट्स अपना प्रसिद्ध कविता ***'Lake Isle of Innisfree'*** में शहरी आपा धापी, नेहहीनता, लंपटता आ आडंबर से ऊब के प्रकृति के निश्च्छल आँचर में जाके जुड़ाये के बात कइले। ओहिजा शहरी संत्रास पृष्ठभूमि में अप्रकट रहे। प्रकृति प्रकट रहे आ कवि के भावबोध नैसर्गिक बिंबन के माध्यम से उभरत रहे आ कवि के अनुभूति से पाठक के तादात्म्य हो जात रहे।

कृष्णोनंद शहर से उबियाइ के गाँव लवटत बाड़े, बाकिर पहिले वाला गाँव अब कहाँ बा? कवि के मये आदर्श, मये सोच तँवा जात बा आ ऊ उलटे गोड़े शहर भाग आवत बाड़े–

साँझ–सवेरे चउराहा पर मेला लागे
सब लोगिन में आपाधापी मचल रहेला
सकराहे कइसे जल्दी अपना घर भागे
मगर भीड़ में पसरल चुप्पी बहुत खलेला
देख–देख सब जरत रहींला अपना आगी
कुलहड़िया से रेल पकड़ के पटना भागीं। पृ0 56

बाकिर बकौल गालिब– 'गर मरके भी न चैन पाया तो किधर जायेंगे ? बात कहीं से कहीं भागे के नइखे। समाधान भगला से कहाँ मिलल बा? कृष्णानंद एहिजा आदमी के 'दुर्योधनी स्थिति' के चित्रित करत बाड़े। दुर्योधन के हाल ई रहे कि ओकरा उलटे बुझाव– जहाँ पानी ओहिजा सूखल आ जहाँ सूखल ओहिजा पानी। गाँव वाला बूझत बा कि शहर अच्छा बा आ शहर वाला बूझत बा कि गाँव, बाकिर हर जगह ऊहे हाही भरल चुप्पी बा, जरतपन बा, गरदन कटउअल बा। हर जगह से मोहभंग होत बा। आदमी के एह दशा–दुदर्शा के जिम्मेवार केहू दोसर ना, खुद आदमिए बा। उपलब्धि के साथ–साथ आवश्यकता बढ़ल जात बा। आदमी न पुराने नीक से छोड़ पावत बा, न नयका नीक से स्वीकार कर पावत बा। एही छोड़आ पकड़े के दुविधा में बाजार के बीचो–बीच खाड़ ऊ जिनगी पर आपन हक

छोड़त जा रहल बा। एह संशय के डॉ. कमलेश राय क्लासिकी तेवर देले बाड़े :–

धुंध भरल दुविधा के जंगल में
सूझे न सुविधा कऽ राह कहीं
चुटकी भर घाम जो बटोरीलां
छूटेला अँजुरी भर छाँह कहीं
बाहर बा सन्नाटा, भीतर बा शोर।
–तोहरो बिहान दाँव पर'... पृ0 45

गाँव आ प्रकृति के रिश्तन में आइल बदलाव के चित्रण डॉ0 अशोक द्विवेदी अत्यन्त भाव–प्रवणता आ सघन बिंब–छवियन के माध्यम से उकेरले बाड़े। उनकर गाँव रेगिस्तान में मरूद्यान अस बा– अंतिम आशा सँजावेले। इहे असली यथार्थ ह। कवनो काल में कवनो जगह पर अच्छाई एकदम अलोपित हो जाइ, अइसन ना होखे। पशुता के राख के नीचे आदमियत के चिंगारी लुकाइल रहेला, जे अनुकूल बयार के बहते बम लहरा बन जाला

आँख मुलुकावत
देंहि खजुआवत
पोंछी से कबो–कबो
माछी हलुकावत
एकाध गो बैल
भा, गड़हा कइल सोरी में बान्हल
गाइ के संगे
टुटहा बँसखट पर झपकत कवनो पुरनिया
इयाद परावेला
कि गाँव आ बगइचा के साथ
अभी नइखे छूटल !
– 'गाँव आ बगइचा'

कृष्णानंद कृष्ण अपना भाई–भतीजावाद राजनीतिक कुचक्र, आर्थिक उठाईगिरी, बजारवाद, संस्कृति पर पाश्चात्य प्रभाव आदि के वर्णन कइले बाड़े। भाषा सहज बा, बाकिर सधल काव्य–भाषा के स्तर तक पहुँचे के जद्दोजहद करत लउकत बा, ओमे व्यंग्य आ प्रतीकात्मकता ढोवे के क्षमता जोर नइखे करत। संस्कृति के पच्छिमीकरण के दरसावत कृष्णानंद कहत बाड़े

गाँव गाँव में अजब पछाहीं हवा बहल बा
संस्कृति के अपना सब लोग भुलाइल जाता
देख–देख के गाँव नगर सगरो सहमल बा
कजरी बिरहा के जगहा अब पाप गवाता... पृ0 24

एहिजे कहानीकार बरमेश्वर सिंह के एगो कविता देखल जा सकत बा, जे बड़ा गँव से पछुआ झोंका' के कइल ध्वंस अंकित करत बा:

बाकिर, कूल्हि गुड गोबर करि दिहलस
दिलफरेब पछुआ के झोंका
सूर–तुलसी–रहीम–कबीर
उधिया दिहलस मीरा– महादेवी के फिर त
आदमी के लागि गइल अन्हरचटकी
आ जे ना होखे के चाहत रहे
ऊहो हो गइल / उधार!– 'परास' मार्च 13..पृ0 23

साहित्य निर्माण में, चाहे ऊ 'फिक्शन' होखे चाहे काव्य, ई ध्यान देबे के होला कि ओकर सत्य जीवन के अतिरेक से मत रचाव। साहित्य ना त जीवन के कार्बन कापी ह, ना ओकरा अतिरेक के निर्मिति। ऊ जीवन के सत्य क संश्लिष्ट अभिव्यक्ति ह, जे पुरान चाउर अस क्रमशः मूल्यवान होखत जाला, बशर्ते 'सिस्टम' ओकरा के सुरक्षित रखे। पच्छिमीकरण अपना जगह पर बाकिर भूख अपना जगह । पच्छिम पीठ हऽ, अलोते रही। भूख पूरब हऽ, सामने रही। भरला पेटे अटलांटिक पार ना हेलाई। जेकर पेट खाली बा ओकरा खातिर का पूरब, का पच्छिम? घर–बाहर दूनों जगह शोषण। एक जगह अपना से, एक जगह अनका से, तबो जमीन छोड़ला के दर्द। ई दर्द सबके ठेल के किनारे लगा दी, सबके पछाड़ दी। आपन त आपन ह, सबके, सबसे प्रेम करे सिखा दी। बाकिर भूख वरदान ना ह।) :

ऊ लोग गुरूप में रहे
उनका लोग के पेन्हन–ओढ़न आ बोली–बानी में
हाथ–गोड़ चलावत दिल्ली–पंजाब
खप ना सकल
ना हो सकल उनका लोग के– आपन
अपना के अतना खपवला के बादो
पछड़–पछड़ जात रहे
गरीबी, लचारी आ गाँव–गुमान के गंध के आगे
– बलभद्र (पातीः अंक 26–27, दिसम्बर1998, पृ. 12)

कृष्णोनंद गाँव से भागत बाड़े। 'गुरूप' वाला लोगो भागत बा। एगो भरल पेट के भागल ह, एगो खाली पेट के। दर्द केने बा? जेने दर्द बा, ओने साहित्य बा।

सत्य के नव–निर्माण साहित्यकार के दृष्टि के परिचायक होला। जवना साहित्यकार के दृष्टि साफ आ स्पष्ट नइखे ओकरा से उत्कृष्ट साहित्य–सृजन के भरोसा कइल ओस में मोती खोजल बा। दृष्टि संपन्न रचनाकार कृष्णानंद कृष्ण से भोजपुरी साहित्य के दुनिया हरमेस नीमन से नीमन, रचनन के आशा करत रही। विधा के बात बहुत महत्वपूर्ण नइखे।

❑ विष्णुदेव तिवारी

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

सांस्कृतिक / साहित्यिक आयोजन

बलिया। विश्व भोजपुरी सम्मेलन (बलिया) आ 'पाती' का भागीदारी में जाड़ का खराब भइल मौसम का बावजूद पछिला तिमाही दू गो स्तरीय 'काव्य–संगोष्ठी' का 'विचार–बइठली' भइल।

29 दिसम्बर 13 के श्रीराम बिहार कालोनी में 'पाती'–कार्यालय का सभाकक्ष में विशिष्ट अतिथि का रूप में कवि–कथाकार – तुषारकान्त उपाध्याय (पटना) विष्णुदेव तिवारी (बक्सर) का साथ विचार बइठकी में भाग लिहले। तुषार जी कहले कि 'कवि–कथाकार के रचना–सिरिजना तबे विशिष्ट आ महत्वपूर्ण बनेला जब ओमें प्रेम, करुना आ मनुष्यता के प्रतिष्ठा भइल रहेला।' गोष्ठी के अध्यक्षता करत 'पाती' सम्पादक **डा0 अशोक द्विवेदी** कहले कि रचनाकार का साथ–साथ, रचना क श्रोता आ भोक्ता पाठको विशिष्ट होला। समय आ समाज के आन्तरिक हलचल के सहभागी बनि के कवनो रचना समानता, स्वतंत्रता आ प्रेम के अभिव्यक्ति देले– ऊ जथारथ–बोध का संगे–संगे मानवी मूल्यो के प्रतिष्ठित करेले। कवि के ई कोसिस तबे सफल होला जब रचना में व्यक्त, भावानुभूति आ संवेदनज्ञान के साधारनीकरन होला। हिन्दी भोजपुरी के अन्तःसम्बन्ध के जरूरी मानत ऊ कहलें कि हिन्दी क श्रेष्ठ साहित्य लोकभाषा आ बोलियन क बा। ई शुभ लक्ष्छन बा कि भोजपुरी में संकेतिकता, आत्मीयता आ सहजता के साथ अरथवान आ कलात्मक कविता / कहानी लिखा रहल बा। एमें मानवी मूल्यन का प्रतिष्ठा का साथ साथ 'मेसेज' (सनेस) रहत बा।

'विचार–बइठकी / कवि संगोष्ठी में विष्णुदेव जी का साथ , डा0 श्रीराम सिंह, के.के. सिनहा, शशि प्रेमदेव, कन्हैया पाण्डेय, हीरालाल 'हीरा', शिवजी पाण्डेय 'रसराज', नवचंद्र तिवारी, रामेश्वर सिंह, संजय सिंह, रामेश्वर सिंह,आ फतेहचंद 'बेचैन' आपन ताजा रचना सुनावल लोग।

26 जनवरी 2014 गणतंत्र दिवस पर 'सबेरे' **पाती कार्यालय** पर तिरंगा फहरावल गइल आ 11 बजे ''कवि–संगोष्ठी'' डा0 शत्रुघ्न पाण्डेय आ डा0 जनार्दन राय का संयुक्त संरक्षन में शुरू भइल। मुख्य अतिथि मऊ पी. जी. कालेज से आइल डा0 राम निवास राय रहलन। जनपद आ बाहर से आइल कवियन के स्तरीय आ उत्कृष्ठ काव्य–पाठ से सुनवइया भावविभोर हो गइलन। राष्ट्र के सांस्कृतिक चेतना आ प्रेमानुराग से लसल गीतन आ समय–सन्दर्भ के सन्धान करत गजलन से सभ मंत्रमुग्ध रहे। गोष्ठी साढ़े चार बजे तक चलल।

शिवजी पाण्डेय 'रसराज' के सरस्वती बन्दना आ देश भक्ति गीत का बाद डा0 कमलेश राय (मऊ) संवेदना क गिरत स्तर आ बदलत–परिवेश के मधुर रेखांकन गीत में कइलन ''सकुचि–सकुचि उगे सुरूज किरिनिया / फुलवा पँखुरियो न खोले। सबेरे भोरे अब त चिरइयो न बोले।'' डा0 अशोक द्विवेदी सांस्कृतिक चेतना क देसगान ''जहवाँ हेरइलें आके बड़ बड़ ज्ञानी / उहे देसवा / झरे पथरो से पानी / मोर देसवा!'' सुनवला का बाद एगो मरमस्पर्शी गीत सुनवलें विष्णुदेव तिवारी आ डा0 रामनिवास राय के मुक्त छंद के सारगर्भ कविता का क्रम में मिथिलेश गहमरी के नया

तेवर वाली ताजा–तरीन भोजपुरी गजल के खूब वाहवाही मिलल– "जरूर चाँदनी बिहँसी, सुतार होखे दीं। उदास चान के गरहन से पार होखे दीं।" एही क्रम में उर्दू/हिन्दी के मोइन हमदम के मरम छूवत, भितरी टीस उपजावत कुछ शेर बहुत सराहल गइलन स,– "कैसे कह दूँ कि इसी गाँव में रहना बच्चों, डूबने वालों को जब लोग बचाते भी नहीं।। कैसे समझे कोई, रूख पर हैं लकीरें कितनीं/आइना बेचने वाले इधर आते भी नहीं।" शशि प्रेमदेव, हीरा लाल 'हीरा', कन्हैया पाण्डेय, विजय मिश्र, त्रिभुवन प्रसाद 'प्रीतम', शंकर शरण आदि के गीत गजल से एगो अजबे समाँ बन्हा गइल। डा0 शत्रुघ्न पांडेय, फतेहचन्द्र बेचैन, रामेश्वर सिंह, कंचन जमालपुरी, नवचंद्र तिवारी, के0के0 सिन्हा आदि के काव्यपाठ काव्य – संगोष्ठी में नया नया रंग भरलस। संचालन शशि प्रेमदेव आ अशोक द्विवेदी साझा में कइल लोग। डा0 श्रीराम सिंह धन्यवाद ज्ञापन कइलें।

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली के राष्ट्रीय कवि सम्मेलन

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली के राष्ट्रीय कवि सम्मेलन 12 जनवरी 2014 के, गणतंत्र दिवस का अवसर पर नई दिल्ली का श्रीराम भारतीय कलाकेन्द्र (मण्डी हाउस) में भोजपुरी मैथिली के भव्य कवि सम्मेलन, श्री राजेश सचदेवा (सचिव) आयोजित कइलन। मैथिली कवि गंगेश गुंजन का अध्यक्षता में मैथिली भोजपुरी के वरिष्ठ आ चर्चित कवियन क समागम भइल। खुला मंच पर दिल्ली सरकार का ओर से भाषा, समाज कल्याण महिला एवं बालकल्याण मंत्री सुश्री राखी बिड़लान, साँझि सात बजे कवियन के गुलदस्ता देके कवियन के सम्मानित कइली श्री अजीत दुबे जी सहजोग देके उछाह भरले आ सम्मेलन शुरू भइल। मैथिली कवि बुद्धिनाथ मिश्र, ताराचन्द वियोगी, मृदुला वर्मा, अविनाश झस, शेफालिका आदि का संगे भोजपुरी के श्री हरिराम द्विवेदी, रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी', डा0 अशोक द्विवेदी, सुभद्रा वीरेन्द्र, गोरख मस्ताना, कुबेर मिश्र 'विचित्र', रमाशंकर श्रीवास्तव, विनय शुक्ला, मनोज भावुक आदि कई कवि एह राष्ट्रीय सांस्कृतिक आयोजन में काव्य पाठ कइलन लोग। 'पाती' के संपादक अशोक द्विवेदी राष्ट्रीय भाव बोध के प्रभावपूर्ण गीत सुना के, सुरू–सुरू में जवन चेतना के तार झंकृत कइले ऊ समापन तक बनल रहि गइल।

प्रस्तुति : सान्त्वना (जे0 एन0 यू0)

राउर पन्ना

'पाती के दिसम्बर 2013 कमे सम्पादकीय के ' साहित्यिक नजरिया आ मूल्यांकन' आ 'दखलंदाजी' के 'सेकुलर बाबा क छतरी' में रउवा हमरा मन के बात कहि दिहले बानी। आभार स्वीकारीं। हालांकि, ई अंक कथा विषेशांक बा, बाकिर जादे कहानी महज, लाइब्रेरी पेंटिंग लेखा बाड़ी स। पहिले के 'कहनी' आ आज के 'कहानी' के शिल्प के अन्तर के समझे में अंक के अधिकांश कहानीकार सफल नइखन भइल। नया कहानीकार का संगे त खैर सहानुभूति बा बाकिर वरिष्ठ कहानिकारन के कहानी पढ़ि के तकलीफ हो रहब बा। ओ लोग के कम से कम अतना त बुझाहीं के चाहत रहे कि थोक के भाव से कहानी लिखल अब जरूरी नइखे रहि गइल। जहाँ तक कहानी-कला के संबंध बा, ऊ त महज डॉ० अशोक द्विवेदी, विष्णुदेव तिवारी आ तुषारकान्त उपाध्याय के कहानियन में देखे मिलल। डॉ० अशोक द्विवेदी, आ विष्णुदेव तिवारी के हाथ में त खैर मँजल कलम बा। बाकिर, तुषारकान्त उपाध्याय लेखा नवागंतुक विषेष रूप से बधाई के पाथ बाड़े। अंक के कूल्हि आलेख महत्वपूर्ण बाड़े स। डॉ० अशोक द्विवेदी, डॉ० तैयब हुसैन पीडित, आ अतुल मोहन प्रसाद अपना अपना विषय-वस्तु का संगे न्याय करें में सफल भइल बाडें। डॉ० गदाधर सिंह जी अपना आलेख में कबीर के डिरेल करे के ताक में रहे वाला तथाकथित प्रगतिशीलन के मुखौटा हटावे में सफल भइस बानी। ई जरूरी रहे। डॉ० शैलेन्द्र त्रिपाठी, के 'सोचे के बेरा' पढ़ि के सचहूँ सोचे के पड़त बा। अजय चतुर्वेदी 'कक्का' के 'हमार सोनाघाटी' गाँव के बदलत मिजाज के रेखाचित्र के प्रस्तुती बड़ा कलात्मक बा। अंक के लघुकथा सामान्य किसिम के बा कुल्हि कवि बधाई के पात्र बाड़े। बाकि, अजय कुमार पाण्डेय, शिवबहादुर पाण्डेय 'प्रीतम शशि प्रेमदेव। आ हीरा लाल 'हीरा' कुछ विशेष मिले के चाहीं। हालांकि, ई हमार हिसाब बा। सभे एसे सहमत होखे, ई जरूरी नइखे।

❑ बरमेश्वर सिंह, ग्राम व पो०- धनडीहा, जिला-भोजपुर (बिहार)

'पाती के दिसम्बर 2013 (कथा विशेषांक) 'अशेष' जी के माध्यम से प्राप्त भइल। धन्यवाद ! बिहार भोजपुरी अकादमी के तथा कथित विवादित महोत्सव व ओरहन आ चेतावनी का रूप में छपल लेखक वर्ग के प्रतिक्रिया स्वाभाविक बा । उचित काम के सराहना आ अनुचित के भार्त्सना त होखहीं के चाहीं।

ई विशेषांक त रउरा सभ के ज्ञान आ अनुभव के दरपन बन गइल बा। खाद्यान्न के महत्ता के प्रतिपादित करत तुषारकान्त उपाध्याय जी के कहानी 'हम तबे बानी' विशेष प्रभावकारी लागल। साधना के राह, राग विराग के बीच से गुजरले। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प आधारित कहानी 'जीवन संगीत' सुख-दुख के, समभाव से , अनुभव करे के प्रेरणा देत बिया। एह कहानी के रचइता रामदेव शुक्ल जी के साधुवाद !

आज सरकारी दफ्तरन आ राजनेतन के रग रग में भ्रष्टाचार घूसखोरी, आ कमीशन गिरी व्याप्त बा। बिचौलिया मालामाल हो रहले बाड़े । अइसन हालात में कवनो काम कइल करावल आग के अहरा प चलला अइसन बा। तबो सत् पथ प आगे बढ़ला के मजा बेमिसाल होला। अशोक द्विवेदी जी के कहानी 'साँच के परतीति' पाठक के कुछ अइसने अनुभूति करावत बिया।

विष्णुदेव तिवारी जी के कहानी 'बिना ओरचन के खटिया' बाल मनोविज्ञान प आधारित बिया। जइसे पवित्र प्रेम के कवनो जाति ना होला, परिदंन के कवनो धर्म ना होखे ओसहीं बच्चन के निश्छल अनुराग प पारिवारिक कटुता के प्रभाव ना होखे। एह कहानी में उभरल संवेदना, उछाह मानवीय मूल्यन के चित्रकारी अस लागत बा। विनोद द्विवेदी के 'संपत्ति के वारिस' मर्म स्पर्शी लघुकथा बिया। शेष कहानी सामान्य स्तर के लागत बाड़ी सन।

विशेषांक के लगभग सभ आलेख ज्ञानवर्द्धक बाड़े सन। डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित' के आलेख 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' जहां 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' जहां 'समकालीन' शब्द के व्यापक ढंग से उदाहरण का साथ पारिभाषित करत बा उहवे अतुल मोहन प्रसाद जी भोजपुरी लघुकथा के सर्वेक्षण का दौरान भुला गइल बानी कि मनोकामना सिंह 'अजय' के लिखल 'खर जिउतिया' (लघुकथा) सन् 2006 में प्रकाशित भइल रहे। डॉ० अशोक द्विवेदी जी के आलेख के विषय बड़ आ फलक बहुत छोट बा। जवना का चलते इहां का उपन्यास कहानी लघुकथा आ नाटक के समग्र रूप से समेट नइखीं पवले। एह से ई आलेख अधूरा मानल जाई।

अशोक द्विवेदी जी के गजल, अक्षय कुमार पाण्डेय जी के 'आग लागल' आ आनंद संधिदूत जी के गीत पसंद परल। अउरियो रचना प्रभावकारी लगली सन् जवना के चर्चा एह चिठ्ठी में संभव नइखे लागत। पत्रिका में पाठकीय

प्रतिक्रिया के जगह दियाये के चाहीं। भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उत्थान में रउरा सभ के योगदान सराहनीय बा। सफल संपादन खातिर बधाई आ नया साल के हार्दिक शुभ कामना।

❑ **कन्हैया सिंह** 'सदय', कार्तिकनगर,टेल्को वर्क्स, जमशेदपुर

'पाती', अंक 69–70 संयुक्तांक (सितम्बर दिसम्बर) 2013 प्राप्त भइल। भोजपुरी भाषा साहित्य के प्रति हिन्दी अंग्रेजी के कुछ रचनाकारन आ आलोचकन नजरिया अउर सोच हरमेसा से बहुत तंग, ओछा स्वारथ से भरपूर रहल बिया। अतने ना, अपनिये भाषा साहित्य के प्रति एकर आपन कहायेवाला भोजपुरियों भाई लोग बहुते संकीर्णता से भरल बा आ जाने अनजाने एकर अपमान अनादर भा उपेक्षा करे से बाज ना आवे। अपना संपादकीय में 'साहित्यिक नजरिया आ मूल्यांकन' अउर 'भोजपुरी सौभाग्य आ दुर्भाग्य' शीर्षक के अन्तर्गत भोजपुरी भाषा-साहित्य के प्रति उपर्युक्त दूनों तरे के मनोवृत्ति पर बिना कवनो लागलपेट के रउवां जे दू टूक टिप्पणी कइले बानी; ओकरे खातिर बहुत बहुत धन्यवाद ।

'बिहार भोजपुरी अकादमी के विवादित महोत्सव' पर रामजी पाण्डेय अकेला, के 'बानर के हाथे नरियर', पीड़ित के 'मरमतक चोट पहुँचावत भोजपुरी अकादमी के अअकादमिक प्रदर्शन' बरमेश्वर सिंह के 'हाथी हाथी सोर भइल' आ डॉ० अरूण मोहन भारवि के 'अन्हरा बँटलस रेवड़ी' द्वारा शुभचिन्तक कहायेवाली अउरो तमाम संख्या, सम्मेलन, अकादमी राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय स्तर के बड़हन बड़हन संस्थानो सभ के असलियत के पोल खुल जात बा, जवन आजु आत्मप्रकाशन, आत्मप्रदर्शन आ आत्मविज्ञापन के मंचभर बन के रह गइल बाड़न सँ।

जहाँ तक 'पाती' खातिर रचना चयन के बात बा तऽ अतने कहब जे हरबेर के तरे एहू बेर के अंक के हर कहानी, लघुकथा, निबंध लेख, कविता गीत गजल आदि के अलग अलग तेवर, धार, मिजाज, अंदाज, सवाद आ खासियत बा। सभ के जथा जोग नया पुरान रचनाकार के अनुरूप नया कथ्य, भाव भंगिमा, नयकी संवेदना, नया तरे के भाषाई ताना बाना, बुनावट दमगर आ प्रभाकर बाड़ी सँ कि ऊ हिन्दी अंग्रेजी के कवनो श्रेष्ठ रचना के सोझा गरदन उठा के आ सीना तान के ठाढ़ हो सकेली। एह में से अधिकांश कहानियन के खासियत ई बा कि पाठक के खाली मने नइखी सँ बहलावत, बलुक उनके कवनो ना कवनो तरे के ब्यौहारिक सनेसो देत बाड़ी सँ। स्तरीयता के पहिलवे नाई बरकरार रखत, ओके सम्हार अउर जथाजोग सजा-सँवार के उपस्थित करे खातिर रउवां जे कठिन संपादकीय धर्म कर्म, दायित्व आ कर्त्तव्य के सफल निरबाह कइले बानी; ओकरे बदे बहुत बहुत बधाई ।

❑ **अनिरूद्ध त्रिपाठी अशेष**, विरसानगर, जोन–2ए पूर्व, रोड–2, जमशेदपुर–04

महोदय,

उपर्युक्त विषय के संबंध में कहे के बा कि भोजपुरी पत्रिका ''पाती'' में भोजपुरी अकादमी से संबंधित उठावल विंदुअन के बारे में अभी हमरा पूरा जानकारी नइखे भइल। हमरा कार्यकाल में भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विकास आदि में पूरा-पूरा पारदर्शिता बरतल जाई।

जहाँ तक अध्यक्ष के नियुक्ति के सवाल बा, ऊ राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र के विषय बा । राज्य सरकार द्वारा भोजपुरी अकादमी के उपविधि में वर्णित प्रावधान के अनुकूल नियुक्ति कइल गइल बा। अपने के लोकप्रिय पत्रिका के माध्यम से भोजपुरी के विकास के संबंध में सजगता बहुते सराहे जोग बा।

❑ **चन्द्रभूषण राय**, अध्यक्ष, भोजपुरी अकादमी, पटना

'भोजपुरी पाती डाट काम' पर अंक 'सत्तर' देखे के मिलल। पढ़ि के अचरज भइल कि भोजपुरी भाषा का नाँव पर कुछ लोग या कुछ संस्था, अइसन काम कर रहल बा। देखाऊ साहु क डाल' बनले भोजपुरी के भला कइसे होई। 'पाती' नियर मंच, जीवे-जँगरे लागि के का करी ? भासा-साहित्य आ संस्कृति के नाँव प अइसन कुल्हि स्वयंभू मठाधीश आ देखावटी संस्था के पोल खोलल जरूरी बा। हर बेर के तरह एहू बेर, स्तरीय सामग्री आइल बा। ई खुसी क बात बा कि साहित्य का साथ समाज आ संस्कृतियो पर गंभीर लेख एम्में लउकि जाला।

❑ **अरविन्द मिश्र**, पुप्पुलगुडा, हैदराबाद (आंध्र)

धरोहर

प्रेम आ पराक्रम के लोकगाथा

❑ शिलीमुख

(एक) *लोरिक–चन्दा* – प्रेमाख्यान–परंपरा में लोरिक आ चन्दा के प्रेमगाथा (चनैनी) प्रेम, श्रृंगार आ वीरता क अइसन लोकप्रिय प्रेम–वृत्त हऽ जेवन सउँसे उत्तर भारत में चर्चित बा। लोकमानस में 'लोरिकायन' अहीर / यादव जाति क जातीय बीर काव्य हऽ। हिन्दी साहित्य में " चन्दायन" एही लोरिक चन्दा के गाथा के रूप में चर्चित बा। कहल जाला कि ई चउदह खण्ड में बा, बाकिर चार भाग में ई गवाला। ई बिहार, उत्तर प्रदेष, छत्तीसगढ़ आदि में अलग–अलग रूप में लोकप्रिय बा। हर भाग के एगो महाकाव्य मानल जाला। पहिला आ चौथा भाग भोजपुर में प्रचलित बा। एह भाग में लोरिक के बड़ भाई सँवरू आ लोरिक के बियाह आ लड़ाई के वर्णन बा। लोरिक आ जमुनी के बियाह एही में बा। दूसरा भाग में लोरिक आ मंजरी के बियाह आ बीरता क बखान बा। तिसरा भाग में लोरिक चन्दा प्रेम प्रसंग बा। दूसरा तिसरा भाग मध्यप्रदेष आ छत्तीसगढ़ में जादा चर्चित बा। कथानक में चनैनी (चन्दा या चन्दैनी जवन क वियाह गउरागढ़ निवासी बीर बावन से भइल रहे) नइहर से ससुरा जात बिया, राह में एगो बउवा चमार जबरजस्ती चनैनी के आपन मेहरारू बनावल चाहत बा, लडाई में लोरिक मदद करे आ जाता। ओकर बीरता सुन्दरता आ लडाई से चन्दा प्रभावित होतिया। ओने लोरिक चन्दा का रूप सुघराई पर मोहित हो जाता। लोरिक बउवा चमार के मार भगा देत बा। बाकि गउरा लवटला पर ओकर ध्यान अपना पत्नी मंजरी ले ढेर चन्दा पर लागल रहत बा। प्रेम का आवेग में ऊ चन्दा उढ़ार के भगा ले जात बा। गढ़ हरदी जात खा राह में कईगो लड़ाई होता जवना में ऊ विजयी होत बा। ई कथा भोजपुरी क्षेत्र, छत्तीसगढ़, मिथिला, बंगाल में अलग–अलग रूप रंग में लोक में बखानल गइल बा। लोरिक के कहीं मैनावती कहीं मंजरी, कहीं चन्दा, भा चनैनी के प्रेम प्रसंग अजगुत संजोग का संगे लोरिक के पराक्रम के बखान लोकविष्वास में बाटे।

(दू) ***'ढोला–मारू'–*** अइसे त लोकभाषा में लिखल कतने लोकगाथा बा। एगो गाथा राजस्थान में ढोला मारू के प्रेमगाथा के रूप में प्रचलित बा। साहित्यिक कृति के रूप में "ढोला मारू रा दूहा" के सब जानत बा। नरवनगढ़ के राजकुमार ढोला के बियाह लड़िकपन मैं पिंगल देश क राजा क बेटी मारू से भइल रहे। बड़ भइला पर ओकर बियाह रेवा रानी से हो गइल। मारू के बारे ओकरा कुछ इयाद ना रहे। मारू बड़ भइल त घर का लोगन से पता चलल कि ओकर बियाह ढोला से भइल बा। ऊ हंस का एगो जोड़ा से आपन प्रेम सनेसा नरवरगढ़ भेजलस बाकिर ओकर कुछ पता न चलल तब एगो चल्हाक सुग्गा सनेस पहुंचावे क जिम्मा लिहलस। ऊ मारू से कहलस कि तू रोवऽ मत, अपना अँचरा का एगो टुकड़ा पर आँखि का लोर संगे बहत काजर से सनेस लिखऽ– ' आँचर छीन कागज करें, नयनन की मस जोतं'। मारू प्रेम सनेस लिख के दे दिहलस। सुग्गा उड़ के नरवरगढ़ पहुँचल आ ढोला का बांह पर जाके बइठ गइल ओकर गर में बान्हल चिट्ठी पढ़ि के ढोला जान गइल कि ओकर पहिल बियहुती मारू के चिट्ठी हऽ। जब रेवा के पता चलल त ऊ सुग्गा के मारे के कई जतन कइलस बाकि चल्हाँक तोता के मार ना पवलस। तोता उड़ के मारू का लगे पहुँच गइल। प्रेम आ विरह मैं ब्याकुल मारू फेर तिसरा सनेस एगो बैपारी से चीर पर लिख के भेजलस। ढोला के सनेस ओकरा के अउर बेचैन क दिहलस। चिट्ठी में मारू अपना सुन्दरता आ यौवन के वर्णन कइले रहे। पँचवाँ सनेस ऊ अपना काका का हाथे भेजलस– ' मारू कलुरिया हो गई, लै लाई चलि आव।' अर्थात हम कलोर (नवयुवती) हो गइल बानी। अब त लिया चलऽ। ढोला अधीर हो उठल अपना वफादार ऊँट पर बइठ के कठिन जतरा करत पिंगल देश में मारू किहाँ पहुँचल आ ओके बिदा कराके नरवरगढ़ ले आइल। ई प्रेम कथा जनश्रुति आ लोकगायन में प्रेम श्रृंगार के गाथा बनके आजो गवाता।

कहे के मतलब ई बा कि लोकविश्वास में कुँवरविजयमल, सारंगा सदाबृज आदि के संगे कतने प्रेमाख्यान लोकगाथा का रूप में आजुओ कहल सुनल आ गावल जाला। अतना शिक्षा, सिनेमा, आ टी.वी. के बावजूद कम पढ़ल लिखल समाज में इहो एगो धरोहरे लेखा बा। ●●●

संस्कृति

होरी रे रसिया.....!

[रूप–रंग–राग–रस–गंध के प्रतीति करावे वाला बसन्त के उत्सव, फागुन में 'होली' के उत्सव बन जाला। बदलत समय–सन्दर्भ में परम्परा टूट रहल बा आ उत्सव के ऊ रस–सिक्त करे वाला राग–रंग औपचारिक हो गइल बा। तबो फगुवा में फगुवाइल मन 'फाग' 'डफ' आ 'होरी' सुने खातिर ललचेला। होरी के गीत प्रायः झूमर का धुन आ दादरा का ठेकापर गवाला। कहीं कहीं धीपचन्दी दादरा का ठेका से शुरू होके कँहरवा हो जाला। फाग के छोट–छोट श्रृंगारिका पदन के पहिले धीमे–धीमे, फेर मध्यम आ द्रुत (तेज) गति से बार–बार गावल जाला। 'पाती' परिवार का ओर से अपना भोजपुरिहा भाइयन खातिर परंपरा आ विश्वास के भूंइ पर कुछ मंगलकारी–लोकगीत दिहल जा रहल बा।]

(एक)

आजु सदाशिव खेलत होरी (टेक)
जटा–जूट में गंग विराजें अंग भभूत रमो री ! 1 !

वाहन बैल ललाट चंद्रमा मृगछाला अरु झोरी
तीन आँखि सुन्दर चमकेला, सरप गले लिपटो री।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! 2 !

अद्भुत रूप उमा लखि दउरी सखियाँ संग करोरी
हँसत, लजत, मुसुकात चंद्रमा सबहिं सिद्धि इक ठौरी।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! 3 !

लेइ गुलाल संभु पर छिरिकैं, रँग में तन–मन बोरी
भइल लाल सब देह शंभु के गण सब करत ठिठोरी।
आजु सदाशिव खेलत होरी ! 4 !

(दू)

आजु बिरिज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया !

उड़त गुलाल लाल भए बादर / केसर रँग में बोरी रे रसिया!
बांजत गुलाल मृदंग साँझ डफ / और मँजीरन जोरी रे रसिया!

फेंट गुलाल हाथ पिचुकारी / मारत भरि भरि, झोरी रे रसिया!
इत सोंआए कुँवर कन्हइया / उत सोंकुँवरि किसोरी रे रसिया!

नन्द गाँव के जुरे सखा सब / बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोउ मिलि फाग परसपर खेलें / कहि कहि होरी–होरी रे रसिया।
आज बिरिज में होरी रे रसिया !

(तीन)

होरी खेलें रघुबीरा / अवध में होरी खेलें रघुवीरा।
केकर हाथ कनक पिचकारी केकरे हाथे अबीरा ?
आरे केकरे हाथ अबीरा / अवध में होरी खेलें रघुवीरा।

राम का हाथ कनक पिचकारी / लछुमन हाथे अबीरा।
केकर भींजे केसरिया जामा / भीजेला केकर चीरा
आरे भीजेला केकर चीरा / अवध मैं होरी खेलें..

राम क भींजे केसरिया जामा / सीता के भींजेला चीरा
अवध में होरी खेलें रघुवीरा !

●●●

D:\Ashok-08\PATI 71\PATA 22.p65

समर्थ आ आत्मनिर्भर नारी के परिकल्पना के साकार करे का दिशा में निरन्तर कर्मरत

स्मृति शेष

स्व0 रजनीकान्त उपाध्याय उर्फ सुभाष जी

जन्म : 13 फरवरी 1965 अवसान : 08 फरवरी 2014

परसिया, दलसागर, बक्सर (बिहार)

के

श्रद्धांजलि

स्व0 रजनीकान्त उर्फ सुभाष उपाध्याय स्वयं सेवी संस्था ''उद्देश्य-भारती'' से जुड़ल रहलन। समर्थ नारी-समाज के पुनर्रचना खातिर, क्षेत्रीय स्वयंसेवी नारी समूहन के निर्माण में लगातार कर्मरत रहलन। 'कैंसर' से संघर्ष का बावजूद निरन्तर सोद्देश्य कर्मसाधना का प्रति समर्पित एह स्वयंसेवी के असामयिक निधन पर संस्था, परिवार आ आत्मीय जन-समूह मर्माहत होके इयाद करत बा।

उपाध्याय परिवार, संस्था आ हीत-मीत का ओर से प्रसारित

रजि0 नं0-आर0एन0 3548//79 (वर्ष 1979)

पानी अंक- 71, मार्च 2014

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

40/76, LGF, C.R. PARK, NEW DELHI-110019

Ph.: 09310612995 E-plyreportersubscription@gmail.com

स्थामित्व प्रकाशक- सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)

खातिर रवि आफसेट, द्वारिकापुरी कालोनी, सिविल लाइन्स, बलिया से मुद्रित

श्री राम विहार कालोनी, बलिया 277001 (उ0प्र0) से प्रकाशित